30.00

Sep 2011

मरयम

इमाम जाफ़र सादिक़ अ.

बच्चों की ग़िज़ा ख़ुद तैयार करें

नहजुल बलाग़ा का शॉर्ट इंट्रोडक्शन

ख़लीफ़ा का किरदार

बेटी की दोस्त

जन्नतुल बक़ी

मौहब्बत

मन्हूस

कबाब

घर–जन्नत

बेटियां

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आ रहे हैं

ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

- **Mr. M.A. Alwi, Lucknow**
  Subscription ID: 00377
- **Mr. Zakir Wasti, Jaunpur**
  Subscription ID: 00358
- **Mr. Ali Abbas Zaidi, Bareily**
  Subscription ID: 00136
- **Mr. Tauqeer Raza, Raipur**
  Subscription ID: 00438
- **Ms. Roohi Nisha, Saharanpur**
  Subscription ID: 00090

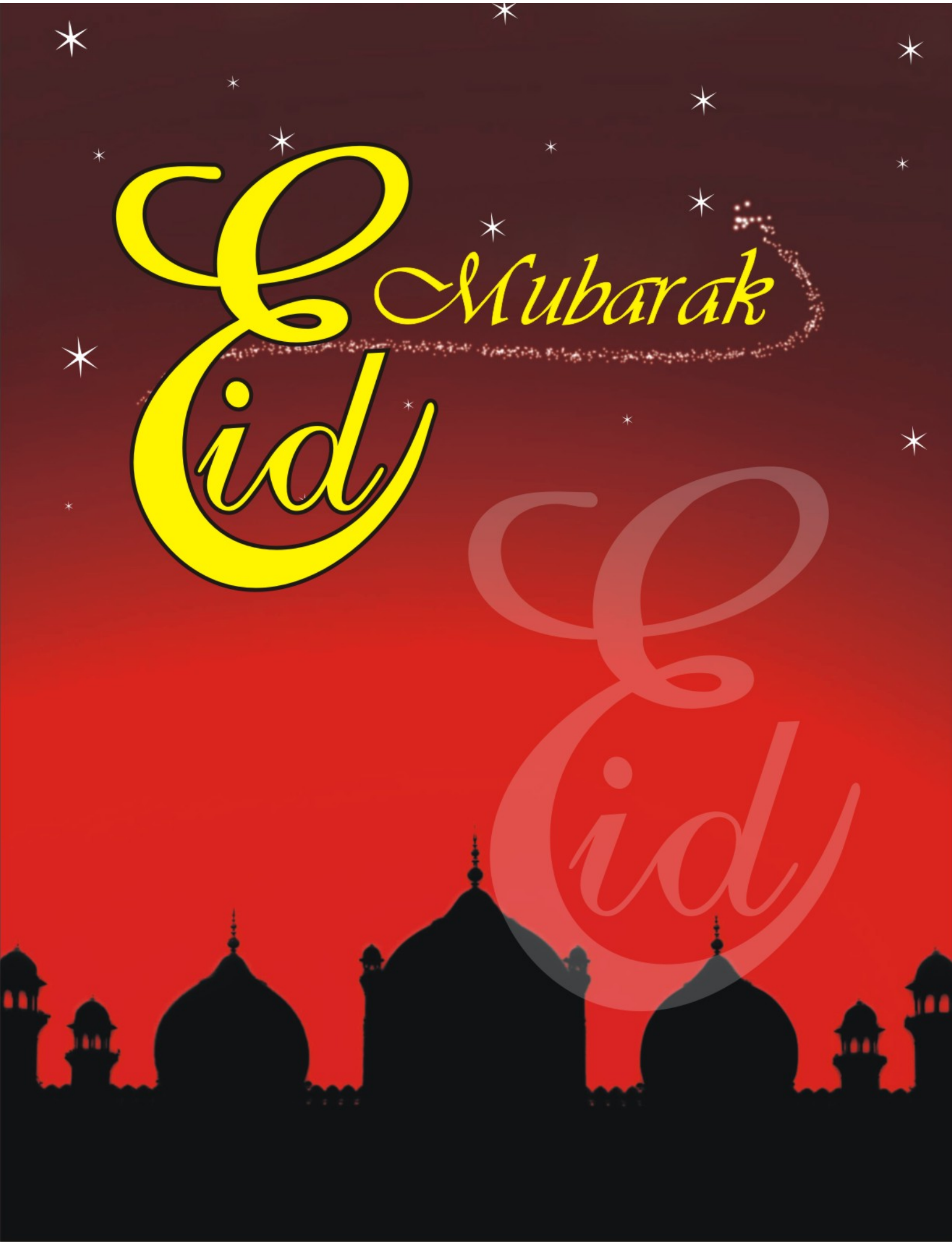
Eid
Mubarak
Eid

Monthly Magazine

मरयम

September 2011

Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Batool Azra Fatima
M Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer
imagine grafix Siraj Abidi 9839099435

Typist
S. Ifham Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

घर-जन्नत	5
जन्नतुल बक़ी	9
बेटी की दोस्त	11
नहजुल बलाग़ा का शॉर्ट इंट्रोडक्शन	13
कबाब (डिश)	15
आज़ादीः पश्चिमी दुनिया की नज़र में	16
बे इन्साफ़ी	18
इमाम ज़माना[अ०] रिवायतों में	20
इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] और आपके दौर की मुश्किलें	22
ख़लीफ़ा का किरदार	24
बच्चों की ग़िज़ा खुद तैयार करें	25
बेटियां	26
मौहब्बत (नज़्म)	29
तरबियत में एहतेराम का रोल	30
ज़बान	32
मन्हूस (कहानी)	36
बारिश	40
तफ़्सीर	42

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान है...

सबसे पहले तो आप सबको ईद की बहुत-बहुत मुबारकबाद! उम्मीद है कि यह माहे रमज़ान पिछले सारे रमज़ानों से अच्छा गुज़रा होगा। ख़ुदावंदे आलम से दुआ है कि वह हम सबको इस माहे रमज़ान की बरकतों से पूरे साल नवाज़ता रहे!

ज़माना बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया बहुत स्पीड के साथ बदल रही है। कोई भी इलाक़ा, मुल्क या शहर हो, वहां के लोगों के नज़रियों, सोच, रहन-सहन और अक़ाएद में बदलाव आ रहा है। यह सारा बदलाव कुछ इस तरह से है कि हर तरफ़ तर्जुबे हो रहे हैं यानी जो बेदीन थे वह अब दीन की तरफ़ आ रहे हैं, जो बैकवर्ड थे वह अब नए समाज से जुड़ रहे हैं, जो औरतें हिजाब नहीं करती थीं वह अब हिजाब कर रही हैं, जो समाज अपने कपड़े उतार चुके थे अब उनकी समझ में आ रहा है कि ग़लत किया था, फ़ैमिलीज़ को एक बार फिर से जोड़े रखने की कोशिशों पर ज़ोर दिया जा रहा है, घर से बाहर नाजायज़ तालुक़्क़ात की बुराईयां अब लोगों की समझ में आ रही हैं और अपनी सारी ताक़त पैसा कमाने पर लगा देने के ख़तरनाक असर भी अब दुनिया की समझ में आने लगे हैं...और यह सब कहां हो रहा है? यह सब वहां हो रहा है जहां लोग नेचुरल डगर को भूलकर अपने बनाए हुए उसूलों पर चल पड़े थे यानी यूरोप और अमेरीका में।

लेकिन....हम अब वही सब कुछ करने की कोशिशों में लगे हुए है जिससे नई दुनिया के यह समाज थक चुके हैं।

हम कैसे समझेंगे? हमें कौन समझाएगा?

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006
email: maryammonthly@gmail.com

घर जन्नत

आफ़रीन शबनम

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "जो शरीके हयात (Life Partner) का इंतेख़ाब करे वह उसका एहतेराम भी करे।"

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] फ़रमाते हैं, शरीके हयात (Life Partner) का हक़ तुम पर यह है कि तुम याद रखो कि ख़ुदा ने उसे तुम्हारे लिए सुकून और इत्मिनान का ज़रिया बनाया है। वह ख़ुदा की नेमतों में से एक नेमत है। इसलिए ज़रूरी है कि उसका एहतेराम करो और उसका साथ दो। अगरचे तुम्हारा हक़ उस पर ज़्यादा है लेकिन वह तुम्हारे हाथों क़ैद है। इसलिए उसके साथ मेहरबानी से पेश आओ। उसे ख़ाना ख़िलाओ, कपड़े पहनाओ और अगर उसकी तरफ़ से कोई ग़लती या नादानी हो जाए तो उसे माफ़ कर दो।"

कुछ ग़लत, बेबुनियाद और ज़ालिमाना फ़लसफ़े औरत को मर्द की कनीज़ का दर्जा देते हैं और उसकी हैसियत सिर्फ़ घर का काम काज करने, बच्चे की परवरिश करने और शौहर की ख़िदमत करने तक महदूद समझते हैं। जबकि इस्लाम में शौहर के लिए ज़रूरी है कि वह घर के काम-काज और बच्चों की तरबियत में बीवी का हाथ बटाए। इसीलिए इस्लाम में हुक्म दिया गया है कि मियां-बीवी दोनों एक दूसरे को जिस्मानी और ज़ेहनी तकलीफ़ पहुंचाने और बदज़बानी करने से परहेज़ करें और आपस में प्यार मुहब्बत और दोस्ती का माहौल बरक़रार रखें ताकि ज़िंदगी आराम और सुकून के साथ गुज़रे और बच्चों की बेहतर तरबियत करके उन्हें नेक, सालेह और तमीज़दार बनाया जा सके। क्योंकि घर के अंदर की बेसुकूनी बच्चों पर बुरे असर डाल सकती है।

सूरए निसा आयत 19 में है, "**उनके साथ नेक बर्ताव करो।**"

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "हमेशा शरीके हयात के साथ अच्छा बर्ताव करो और उसके साथ नेक सुलूक करो ताकि तुम्हारी ज़िंदगी पुरसुकून हो।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "जो अपने घर वालों के साथ नेकी करे ख़ुदा उसकी ज़िंदगी बढ़ा देता है।"

एक रिवायत में नबीए करीम[स०] ने फ़रमाया, "जो घर के कामों में शरीके हयात का हाथ बटाए वह दुनिया व आख़िरत की नेकी हासिल करेगा।"

एक और रिवायत में है, "बग़ैर एहसान जताए शरीके हयात की ख़िदमत, गुनाहों का कफ़्फ़ारा और ख़ुदा के ग़ैज़ व ग़ज़ब को ठंडा करने का सबब है।"

इमाम ख़ुमैनी और शरीके हयात का एहतेराम

एक इंटरव्यू में इमाम ख़ुमैनी[रह०] की बीवी कहती हैं, "इमाम ख़ुमैनी मेरा बहुत एहतेराम करते थे। सख़्त ग़ुस्से में भी कभी मेरी बेएहतेरामी

गुस्सा

आम तौर पर मर्द दफ़्तर या बिज़नेस की मुश्किलों में या दूसरी बाहर की परेशानियों की वजह से घर में गुस्से का इज़हार करते हैं। यह काम सही नहीं है क्योंकि न सिर्फ़ यह कि इससे मुश्किलें हल नहीं होती बल्कि और ज़्यादा मुश्किलें पैदा हो जाती हैं। अगर वह घर में इन बाहर की मुश्किलों को असर अंदाज़ न होने दें और घर का पुरसुकून माहौल बरक़रार रहे तो तो यह अंदरूनी सुकून बाहर की परेशानियों के लिए बहुत मददगार साबित हो सकता है लेकिन अगर घर में भी सुकून न रहे तो परेशान ज़ेहन और परेशान हो जाता है और इस क़ाबिल नहीं रहता कि बाहर के मसलों को हल कर सके।

अक़्लमंद शौहर अपनी बाहर की मुश्किलों को बीवी से शेयर करते हैं, जिसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह होता है कि बीवियां उनकी ज़ेहनी परेशानी को समझती हैं और ऐसे मुश्किल वक़्त में कोई बेजा ख़्वाहिश नहीं करतीं। दूसरा फ़ायदा यह होता है कि एक दो लोग मिलकर इसको हल करने की कोशिश करते हैं। इस तरह मुश्किल के हल की उम्मीद ज़्यादा हो जाती है।

बहेरहाल अगर यह मुमकिन न हो और आपके शौहर घर आते ही गुस्सा करें और आपसे लड़ना शुरू कर दें तो गुस्से को नज़रअंदाज़ करते हुए चेहरे पर मुस्कुराहट लाइए और उनसे इस तरह बात करें 'लगता है आज आप बहुत थके हुए हैं' 'आप हाथ-मुंह धो लीजिए मैं आपके लिए चाय बनाती हूं' या 'खाना लगाती हूं'। खाने या चाय के बीच अगर मूड सही या थोड़ा बेहतर हो तो परेशानी की वजह जानने की कोशिश करें। अगर शौहर बयान कर दे तो बड़ी से बड़ी मुश्किल पर भी हौसला दीजिए। अगर बयान न करे तो बिल्कुल ज़बरदस्ती न कीजिए। अगर ख़ुदानाख़्वास्ता शौहर बदज़बानी पर उतर आए तो हरगिज़ ज़बानदराज़ी न करें और इंतेहाई सब्र व हौसले का मुज़ाहिरा करते हुए बिल्कुल ख़ामोश रहें। याद रखिए! शौहर के गुस्से पर सब्र और ख़ामोशी आपके मसले को आधे से ज़्यादा हल कर देगी। किस तरह! ज़रा इस क़िस्से पर ध्यान दें।

एक औरत किसी पीर साहब के पास गई और कहा, पीर साहब मेरा शौहर बहुत गुस्सा करता है जिसकी वजह से हमारी बहुत लड़ाई होती है। मुझे शौहर के लिए कोई ऐसा तावीज़ दे दें कि उसका गुस्सा बिल्कुल ख़त्म हो जाए।

पीर साहब बहुत अक़्लमंद थे। वह औरत को एक बोतल में पानी देते हुए कहते हैं कि यह पढ़ा हुआ पानी है जैसे ही तुम्हारा शौहर तुम पर गुस्सा करे इस पानी का एक घूंट अपने मुंह में डाल लेना और जब तक शौहर गुस्सा करता रहे उसे मुंह के अंदर ही रखना, निगलना नहीं।

ख़ातून जब भी शौहर गुस्सा करता, फ़ौरन पानी मुंह में लेकर पीर साहब के नुस्ख़े पर अमल करती। धीरे-धीरे उसके शौहर का गुस्सा बिल्कुल ठंडा हो गया।

बेचारी बहुत ख़ुश थी कि पीर साहब के पढ़े हुए पानी ने काम कर दिखाया लेकिन काम तो दरअस्ल उसकी ख़ामोशी ने किया था। ●

नहीं की और अदब के दायरे से बाहर नहीं हुए। मैं जब भी उनके कमरे में जाती, वह मेरे लिए अपनी जगह ख़ाली कर देते। जब तक मैं दस्तरख़्वान पर नहीं बैठ जाती वह ख़ाना शुरू नहीं करते थे। बच्चों से भी कहते कि ठहर जाओ अपनी मां को आने दो। वह जब तक घर में रहते मुझे काम नहीं करने देते और घर की सफ़ाई, कपड़े धोने और दूसरे कामों में मेरी मदद करते या बच्चों से कहते कि मां के साथ काम करो...

पाज़िटिव सोच

इसमें कोई शक नहीं कि हर इंसान में अच्छाईयों के साथ बुराईयां भी होती हैं। और बहुत अफ़सोसनाक बात है कि कुछ ख़ुदपसंद लोग ज़ाती या समाजी ज़िंदगी में दूसरों के कमालात और ख़ूबियों को देखने के बजाए उनकी कमज़ोरियों और ऐबों को तलाश करते हैं। जो चीज़ शादीशुदा ज़िंदगी में बहुत असरदार साबित हो सकती है, वह यह है कि मियां-बीवी एक दूसरे के पाज़िटिव पहलुओं को नज़र में रखें ताकि घरेलू ज़िंदगी में हुस्ने ज़न और उम्मीद क़ायम रहे।

तीन सौ मुतमईन और पुरसुकून शादीशुदा जोड़ों पर रिसर्च करने से साबित हुआ है कि उनकी ज़िंदगी में आराम और सुकून का बड़ी वजह यह है कि वह हमेशा एक दूसरे के पाज़िटिव पहलुओं को ध्यान में रखते हैं।

तआवुन और मदद

शादीशुदा ज़िंदगी को मज़बूत करने के लिए एक अहम प्वाइंट यह है कि आपस में मदद की सोच अपनाई जाए।

शौहर और बीवी को चाहिए कि अपनी ज़िम्मेदारियों के अलावा जहां तक मुमकिन हो एक दूसरे का साथ दें और ख़ास तौर पर एक दूसरे का बीमारी के दिनों में ख़ास ख़्याल रखें।

एक औरत ने कोर्ट में शिकायत करते हुए कहा, मैंने बरसों अपने शौहर की ख़िदमत की, उसकी हर बुराई और ऐब को नज़रअन्दाज़ किया और हर तरह घर के माहौल को ख़ुशगवार बनाने की कोशिश करती रही लेकिन अब जब कि मैं बीमार हो गई हूं तो शौहर ने मुझे यह कहकर घर से निकाल दिया कि मुझे बीमार बीवी नहीं चाहिए।

अख़्लाक़ियात का ख़्याल रखें

मियां-बीवी के रिश्ते को मज़बूत करने के लिए इस्लाम अख़्लाक़ियात पर बहुत ज़ोर देता है। आज के दौर में तलाक़ की शरह में इज़ाफ़े की वजह ज़्यादातर अख़्लाक़ियात का ख़्याल न रखना है।

पैग़म्बरे अकरम[स०] फ़रमाते हैं, ''ईमान के लिहाज़ से कामिलतरीन इंसान वह है जिसका अख़्लाक़ अच्छा हो और तुम में से बेहतरीन वह है जो अपनी शरीके हयात के साथ ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आए।''

एक और रिवायत में है कि, ''अगर कोई ऐसा शख़्स जिसका अख़्लाक़ अच्छा हो और उसकी दीनी तरबियत से तुम मुतमईन हो और वह तुम से रिश्ता मांगे तो उसे अपनी बेटी दे दो और अगर ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन पर फ़ितना व फ़साद पैदा होगा।

दिलजोई

मिली-जुली ज़िंदगी में बीमारी, तकलीफ़, परेशानी और मायूसी के दिनों में एक दूसरे की दिलजोई की बहुत अहमियत है। ख़ास तौर पर शादी के दूसरे पांच सालों में, क्योंकि पहले पांच साल तो जज़बात का और मुहब्बत लुटाने का ज़माना होता है और दूसरे मसाएल की तरफ़ ध्यान नहीं हो पाता लेकिन अगले पांच सालों में यह मुश्किलें बढ़ जाती हैं और इनमें से एक दूसरे की दिलजोई की ज़रूरत ज़्यादा पेश आती है।

एक दूसरे की माज़ेरत को क़ुबूल करना

जब भी किसी से कोई ग़लती हो जाए और फिर वह माफ़ी मांग ले तो दूसरे को उसकी माज़रत को क़ुबूल कर लेना चाहिए क्योंकि इसी से दोबारा मज़बूत रिश्ते बरक़रार हो सकते हैं।

झगड़े की बुनियाद न डालें

लाइफ़-पार्टनर के साथ रिश्तों को मज़बूत बनाने के लिए ज़रूरी है कि अपने कामों की गिनती न करें, एक दूसरे पर एहसान न जताएं और इस बात की उम्मीद भी न रखे कि आपके हर काम पर हमेशा शरीके हयात की तरफ़ से आपका शुक्रिया अदा किया जाएगा। इससे ज़िंदगी में क़ुदूरत, नफ़रत व इख़्तेलाफ़ पैदा होता है।

बेजा हिमायत से परहेज़

इसमें कोई शक नहीं कि मां-बाप अपनी बेटी की क़िस्मत अच्छी होने के ख़्वाहिशमंद होते हैं और उनकी ख़ुशियों और उनके ग़मों को अपनी ख़ुशियां और ग़म शुमार करते हैं। लेकिन इस बारे में कभी बेजा हिमायत करके उनकी ज़िंदगियों में परेशानियां पैदा कर देते हैं और कभी ऐसी समझदारी से काम लेते हैं कि बहुत सादगी के साथ बड़े-बड़े मसाएल हल हो जाते हैं। एक शख़्स कहता है कि एक रोज़ मेरी बेटी अकेले ही मेरे घर आई। मैंने पूछा, तुम्हारा शौहर कहां है तो कहने लगी वह मुझे यहां छोड़कर चले गए हैं। मैंने कहा, क्या कोई परेशानी है? कहने लगी, हां मेरे शौहर ने मुझसे कहा था कि फ़लां खिलौना मत ख़रीदो लेकिन मैंने उनकी बात की परवाह नहीं की और ख़रीद लिया। उन्हें जब मालूम हुआ तो वह नाराज़ हो गए और मुझे यहां छोड़ गए।

मैंने देखा कि उसका शौहर हक़ पर है। लिहाज़ा मैंने फ़ौरन कहा कि तुम यहां क्यों आई हो?फ़ौरन वापस जाकर अपने शौहर से माफ़ी मांगो। बेटी के लिए पहले तो यह बात बहुत मुश्किल थी लेकिन जब मैं उसे लेकर उसके घर गया तो मेरा दामाद भी शर्मिंदा हुआ और तमाम गुस्सा दूर हो गया, क्योंकि घर वापसी दरअस्ल एक तरह की माज़रत थी।

सलाम करना

मुसलमानों के बीच सलाम की रसम ऐसी है जिससे प्यार मुहब्बत की फ़िज़ा क़ायम होती है, नफ़रतें और क़ुदूरतें दूर होती हैं। मियां-बीवी के लिए ज़रूरी है कि वह उस पर सख़्ती के साथ कारबंद रहें, एक दूसरे को सलाम करें और बेहतर यह है कि सलाम करने में एक दूसरे पर पहल करें।

एक शख़्स कहता है कि मेरा दोस्त बहुत ही मालदार और दौलतमंद था। वह मुझसे कहता था, मेरे पास ज़िंदगी के तमाम वसाएल मौजूद हैं, पैसे की रेल-पेल है लेकिन न जाने क्यों मुझे सुकून नहीं मिलता जबकि तुम अपनी लगी बंधी तंख़्वाह पर

गुज़ारा कर रहे हो लेकिन बहुत मुतमईन और पुर सुकून नज़र आते हो?

मैंने उससे पूछा क्या तुम आते-जाते अपनी बीवी को सलाम और ख़ुदा हाफ़िज़ कहते हो? कहने लगा, नहीं! मैंने कहा, तुम कुछ दिनों तक इस अहम इस्लामी उसूल पर अमल करो। उसने हां करते हुए गर्दन हिलाई और फिर कुछ दिनों बाद मेरे पास आकर शुक्रिया अदा करते हुए कहने लगा, तुम्हारी नसीहत तो मेरे लिए मोजज़ा साबित हुई। सलाम का यह छोटा सा जुमला घरेलू ज़िंदगी को ख़ुशगवार बनाता है। इंसान के लिए सुकून और इत्मिनान पैदा करता है। पहले जब मैं सलाम नहीं करता था तो मेरी बीवी नाराज़ अपनी जगह बैठी रहती थी लेकिन अब मैं सलाम करता हूं तो उसे मजबूरन जवाब देना पड़ता है। बस यही सलाम और जवाब हमारे गुस्से को कम कर देता है, हमारी बंद ज़बानों को ख़ोल देता है। मुख़तसर यह कि हमारी अफ़सुर्दा और नाराज़ ज़िंदगियों में रौनक़ आ जाती है।

पुकारना

बेहतर है कि मियां-बीवी एक दूसरे को प्यार से पुकारें और मुमकिन है कि कोई प्यारा सा निक नेम रख दें।

हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ फ़रमाते हैं, "अपनी बीवी को उस नाम से पुकारो जिसे वह पसंद करती है।"

दरवाज़े तक आना

जब शौहर घर से जा रहा हो तो बीवी को दरवाज़े तक छोड़ने आना चाहिए और जब वह वापस आए तो दरवाज़े पर उसका इस्तेक़बाल करना चाहिए और सलाम करने के बाद अगर मर्द घर के लिए कोई चीज़ लाया हो तो उसके हाथ से लेकर शुक्रिया कहे।

एक शख़्स रसूले ख़ुदा ﷺ की ख़िदमत में आया और अर्ज़ की, मैं जब भी घर में दाख़िल होता हूं तो मेरी बीवी मेरा इस्तेक़बाल करती है और जब घर से निकलता हूं तो मुझे दरवाज़े तक छोड़ने आती है। जब मैं परेशान होता हूं तो कहती है कि क्या तुम रोज़ी की तरफ़ से परेशान हो, तो जान लो कि यह ख़ुदा के हाथ में है और अगर आख़िरत की तरफ़ से परेशान हो तो ख़ुदा तुम्हारी परेशानी में इज़ाफ़ा करे।

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, "ख़ुदा ने ज़मीन पर कुछ कारकुन बनाए हैं और यह औरत उन ही में से एक है। शहीद का आधा दर्जा उसको हासिल है।

ख़ुदा हाफ़िज़ कहना

हम ने पिछले महीने शरई एहकाम के तहत हैज़ (पीरियड्स) के मसाएल शुरू किए थे और वादा किया था कि अगले इशू में इस सिलसिले को आगे बढ़ाया जाएगा लकिन किसी वजह से इस इशू में हम ऐसा नहीं कर पा रहे हैं जिसके लिए माज़ेरतख़्वाह हैं।

सलाम की तरह ख़ुदा हाफ़िज़ करने से भी मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है और दोस्ती और मुहब्बत का बीज पड़ जाता है। शौहरों को इस बज़ाहिर छोटे लेकिन दरहक़ीक़त बड़े अमल से ग़फ़लत नहीं करनी चाहिए। बीवियों के लिए भी ज़रूरी है कि अगर कभी इत्तेफ़ाक़िया तौर पर उनके शौहर घर में हो और वह घर से बाहर जा रही हों तो शौहर को ख़ुदा हाफ़िज़ कह कर जाएं और दोनों इस छोटे से जुमले की अदाएगी को अपनी आदत बना लें।

जन्नतुल बक़ी

बिन मजून के दफ़न से हुई, इसके बाद यहां रसलू ख़ुदा[स०] के बेटे इब्राहीम को दफ़न किया गया। रसलू ख़ुदा[स०] के दूसरे रिश्तेदार सफ़िया, आतिका और अमीरुल मोमिनीन[अ०] की वालिदा, फ़ातिमा बिन्ते असद[अ०] भी यहां दफ़न हैं। तीसरे ख़लीफ़ा उस्मान जन्नतुल बक़ी से मिले हुए बाहर के हिस्से में दफ़न हुए थे लेकिन बाद में जब जन्नतुल बक़ी का कंसट्रक्शन हुआ तो उनकी क़ब्र भी बक़ी का हिस्सा बन गई। बक़ी में दफ़न होने वालों को रसलू ख़ुदा[स०] अपनी ख़ुसूसी

हर साल 8 शव्वाल को ग़म के दिन की तरह मनाया जाता है। आज से लगभग 80 साल पहले यानी 1344 हिजरी/1926 ई० में इसी तारीख़ को मदीना मुनव्वरा में जन्नतुल बक़ी और मक्का मुअज़्ज़मा में जन्नतुल मुअल्ला के मक़बरों और मज़ारों को मिसमार कर दिया गया। यह मज़ार जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ०], इमाम हसन[अ०], इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०], इमाम मुहम्मद बाक़र[अ०], इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] और दूसरे औलाद, अज़वाज, असहाब और पैग़म्बर के रिश्तेदारों और शोहदाए राहे हक़ के थे। तअज्जुब होता है कि एक ऐसा मुल्क जहां के हाकिम "ख़ादिमे हरमैन शरीफ़ैन" कहलाने में फ़ख़्र महसूस करते हैं किस तरह इस हरकत को गवारा कर सकते हैं। लेकिन यह एक हक़ीक़त है। हमारा तअल्लुक़ 20वीं सदी से है और यह वाक़ेआ भी इसी सदी से मुताअल्लिक़ है इस वजह से जन्नतुल बक़ी के मिसमार करने की असल वजह जानना ज़रूरी है।

जन्नतुल बक़ी हिस्टोरियन्स की नज़र में

जन्नतुल बक़ी मदीने में एक क़ब्रिस्तान है जिसकी शुरूआत 3 शाबान 3 हिजरी को उस्मान दुआओं में याद करते थे इस तरह बक़ी का क़ब्रस्तान मुसलमानों के लिए एक तारीख़ी इम्तियाज़ व तक़द्दुस का मक़ाम बन गया।

अरब अजम कशमकश और तहरीके ख़िलाफ़त

हिजाज़ में वहाबियत की तहरीक के नतीजे में पैदा होने वाली अफ़रा-तफ़री में पश्चिमी ताक़तों ने एक नया फ़ितना खड़ा कर दिया। अरबों और अजमियों के इख़्तेलाफ़ों से फ़ायदा उठाकर ब्रटिश और फ्रांस ने 1916 ई० और 1918 ई० के बीच करनल लारेंस (जो आम तौर

पर लारेंस आफ़ अरेबिया कहलाता है) की क़ियादत में शाम और ईराक़ के अरबों को तुर्की की सलतनते उस्मानिया के ख़िलाफ़ आमने-सामने ला खड़ा किया मगर जंग ख़त्म होने पर (जो अरब इंक़ेलाब के नाम से जानी गई) ब्रटिश और फ़्रांस ने अरबों को धोखा देकर शाम, ईराक़, फ़िलिस्तीन और उरदुन को आपस में तक़सीम कर लिया, ईराक़, फ़िलिस्तीन और उरदुन ब्रटिश के तसल्लुत या निगरानी में दे दिए गए और शाम पर फ्रांस को हुकूमत मिल गयी। यमन और नजद नीम आज़ाद हुकूमतें बन गईं। हिजाज़ में जिसका नजद के साथ पुराना झगड़ा चल रहा था शरीफ़ हसन एक छोटी सी ममलिकत का हुकमरान था। जब अब्दुल अज़ीज़ इब्ने सऊद को इत्मिनान हो गया कि ब्रटिश की तरफ़ से कोई परेशानी न होगी तो नजदियों ने हिजाज़ पर हमला कर दिया और सारे अरब को अपने ख़ानदानी हवाले से सऊदी अरब का नाम दे दिया जो अब तक इसी नाम से जाना जाता है। वहाबियत को दुनिया में फैलाने में नजदियों की इस कामयाबी ने बहुत अहम रोल अदा किया क्योंकि इस्लामिक वर्ल्ड के सेंटर मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज़्ज़मा तक उनकी रसाई आसान हो गई।

इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी

इस्लामिक वर्ल्ड में अफ़रा-तफ़री ने अब्दुल अज़ीज़ इब्ने सऊद को हिजाज़ पर चढ़ाई का मौक़ा दे दिया और तमाम यक़ीन दहानियों को नज़र अंदाज़ करते हुए जनवरी 1936 ई० में सुलतान इब्ने सऊद ने हिजाज़ पर अपनी हुकूमत का ऐलान कर दिया। वहाबियत जो अब रियासती मज़हब बन गई थी तलवार के ज़ोर पर हिजाज़ वालों पर थोपी जा रही थी सऊदी हमलावर जब मदीना तैय्यबा में दाख़िल हुए तो उन्होंने ने जन्नतुल बक़ी और हर उस मस्जिद को जो उनके रास्ते में आई गिरा दिया और सिवाय रसूले ख़ुदा[स०] के मज़ार के किसी क़ब्र पर इमारत बाक़ी न रही। आसार ढाए गए अक्सर क़ब्रों की तावीज़ और सबकी लौहें तोड़ दी गईं। इन्हेदाम जन्नतुल बक़ी की ख़बर से मुसलमानों में रंज व ग़म की एक लहर फैल गई, सारी दुनिया के मुसलमानों ने इहतेजाजी जलसे किए और क़रारदादें पास कीं जिसमें सऊदी जुर्मों की तफ़सील दी गई। सऊदी अरब में आने वाले सालों में ईराक़, शाम और मिस्र से हज और दूसरे काम के लिए आने वालों पर पाबंदी लगा दी गई कि वह वहाबियत क़ुबूल करेंगे वरना उनको निकाल दिया जाएगा। हज़ारों मुसलमान वहाबियों के मज़ालिम से तंग आकर मक्का और मदीना छोड़ने पर मजबूर हो गए। मुसलमानों के लगातार इहतेजाज पर सऊदी हुकमरानों ने मज़ारों की मरम्मत का यक़ीन दिलाया लेकिन यह वादा आज तक पूरा न हो सका। इस सिलसिले में तहरीके ख़िलाफ़त कमेटी कोई मज़बूत मौक़िफ़ नहीं इख़्तियार कर सकी और यूं यह कमेटी पाश-पाश हो गई और यह मामला ख़त्म हो गया। ऐसा महसूस होता है कि जन्नतुल बक़ी के मज़ारों की तामीर की तहरीक को जिसमें शुरू में शिया सुन्नी सब बराबर के शरीक थे वक़्त गुज़रने के साथ पिछली 7 दहाईयों यानी 70 साल में हमारे दूसरे मुसलमान भाईयों ने भुला दिया और आख़िर में सिर्फ़ यह शियों की ज़िम्मेदारी बन कर रह गया है। और यूं पिछले 70 साल से हर साल 8 शव्वाल को हम इन्हेदाम जन्नतुल बक़ी की याद मनाकर अहलेबैत[अ०] से मोहब्बत का फ़रीज़ा और अजरे रिसालत अदा करते हैं।

हमारी ज़िम्मेदारियां

जन्नतुल बक़ी और आलमे इस्लाम के हवाले से हमें एक मुनज़्ज़म मुहिम चलानी होगी। अरब कंट्रीज़ में मराकश से ईराक़ तक और अजम में तुर्की से इंडोनेशिया तक कौन सा मुल्क है जहां बुर्ज़ुगाने दीन, सियासतदान और मुसलमानों के मज़ार नहीं हैं। बक़ी कोई आम क़ब्रिस्तान नहीं है बल्कि यहां बिला इख़्तेलाफ़े फ़िरक़ा हर मुसलमान के लिए क़ाबिले एहतेराम शख़्सियतें दफ़न हैं।

इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी के वाक़ेए के बावजूद, हज़रत सरवरे कायनात[स०] के रौज़े का वजूद ख़ुद एक मोजज़ा है और इस बात का सुबूत है कि जन्नतुल बक़ी का इन्हेदाम कोई फ़िक़ही मसला नहीं था बल्कि एक सियासी हिकमते अमली थी जिसकी बुनियाद खानवादए अहलेबैत[अ०] से पुरानी दुश्मनी थी। दुनिया में सारी कल्चर्ड क़ौमें अपने बाप दादा के आसार की हिफ़ाज़त करती हैं। मिस्र में असवान डैम बनाया गया तो उससे मुताअस्सिर होने वाले आसारे क़दीमा के ख़ंडरों को दूसरी जगह शिफ़्ट करने के लिए यूनेस्को ने बहुत सी रक़म ख़र्च की। अफ़ग़ानिस्तान के शहर बामियान में गौतम बुद्ध के मुजस्मों की तोड़-फोड़ पर सारी दुनिया ने अपने ग़म व गुस्से का इज़हार किया। लेकिन हमारे आज़ाद मीडिया के लिए इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी कोई क़ाबिले तवज्जोह मसला नहीं है। आसारे क़दीमा की हिफ़ाज़त ह्यूमन राइट्स में गिनी जाती है हमें क़ुरआन की आयत ''उदऊ इला सबीलि रब्बिक'' के उसूल पर अमल करते हुए जज़बात से बालातर होकर जन्नतुल बक़ी की तामीर के लिए क़ाबिले अमल पालिसी इख़्तियार करना होगी जिसके चंद बुनियादी ख़ुतूत यह हैं :

1- इंटरनेशनल इदारों जैसे यूनेस्को, अरब लीग, मोतमिर आलमे इस्लामी, तन्ज़ीम इस्लामी कांफ्रेंस (ओ.आई.सी.) और इंटरनेशनल हयूमेन राइट्स कमीशन को मुतवज्जेह किया जाए।

2- अख़्बारों में आए दिन इस्लाम के हवाले से जदीदियत क़ुशादा दिली और सब्र व तहम्मुल की पालिसी अपनाने की तलक़ीन की जाती है इस पर अमल भी किया जाए।

3- पिछले सियासी समाजी और जंगी जराएम पर पकड़ ऐतराफ़ और माफ़ी अब एक इंटरनेशनल तरीक़ए तलाफ़ी के तौर पर क़ाबिले क़ुबूल उसूल बन गया है। इस उसूल को इन्हेदामे जन्नतुल बक़ी के ज़िम्मेदारों पर भी लागू किया जाए।

4- सऊदी अरब के मौजूदा हुकमरां अपने बड़ों के ख़िलाफ़ एक रौशन ख़्याल रहनुमा हैं और ग्लोबल मुस्लिम यूनिटी के पुरजोश हामी हैं। उनसे जुर्रतमंदाना फ़ैसले की अपील की जाए।

5- इन तमाम चीज़ों को देखते हुए तमाम अक़ीदे के संजीदा और इंसाफ़ पसंद मुसलमान भाईयों की मदद से सऊदी हुकमरानों से दरख़्वास्त की जाए कि वह उन मज़ारों को ख़ुद बना दें या फिर मुसलमानों को इसकी इजाज़त दे दें।

ख़ुदा तमाम मुसलमानों को इस नेकी में हिस्सा लेने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

MOTHER daughter

बेटी की दोस्त

■ बुतूल अज़रा फ़ातिमा

टीनएज एक ऐसा टाइम होता है जब लड़की जज़बात और एहसासों के बहाव में बहती है, साथ ही उसके दोस्तों का भी उसके ऊपर बहुत गहरा असर पड़ता है। लड़का और लड़की दोनों ही इसके लपेटे में ज़बरदस्त तरीक़े से आ जाते हैं। यह आपके सामने बहुत बड़ा चेलेंज है कि आप किस तरह अपने जवान बच्चों को हैंडिल करती हैं क्योंकि यही वह वक़्त है जिसमें आपको बहुत सख़्त दौर से गुज़रना पड़ता है वह भी पोज़िटिव रिज़ल्ट के साथ। ''अफ़शीन की चौदह साल की बेटी है। वह अपनी बेटी को लेकर बहुत परेशान हैं। वह सारे दिन फ़ोन पर बातें करती है, अपनी दोस्तों की देखा-देखी कपड़े माँगती है, अपने दोस्तों के साथ बाहर घूमने-फिरने की ज़िद करती है, नित नई-नई ज़िदें सामने आ रही हैं, आख़िर वह कहाँ तक उन्हें कंट्रोल करें। अगर एक बात समझा बुझाकर मनवा भी ली जाए तो दूसरी कैसे मनवाएँ। उसके इस बिहेव ने अफ़शीन को बड़ी टेंशन में डाल दिया है।'' इंटरनेट से जुड़े रहने की आदतों से माँ-बाप फ़िक्रमंद हो जाते हैं और होना भी चाहिए क्योंकि टीनएजर बच्चों पर पर कहां तक नज़र रखी जा सकती है। वह ऐसी ऐज की तरफ़ क़दम बढ़ा रहे होते हैं जहाँ वह किसी की भी रोक-टोक पसंद नहीं करते हैं। बेटी के अंदर बदलते हुए बिहेव को देखकर आपका परेशान होना नेचुरल है। और यही वह टाइम है जब आपका एक्टिव रहना और उसे सभांलना सबसे ज़रुरी है। इस ऐज में उन्हें हैंडिल करना ज़रा मुश्किल होता है लेकिन अगर उनकी परवरिश सही उसूलों पर हुई होगी तो यह काम आसान हो जाएगा। मगर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि टीनऐज में बदलाव आना नेचुरल है। इस ऐज में हर लड़की के सामने अड़चनें आती ही हैं। इस दौर में बहेकने के चांसेज़ भी बहुत ज़्यादा होते हैं। इसलिए आपको लगता है कि कहीं वह बिगड़ने के रास्ते पर तो नहीं जा रही है। ऐसी सिचुएशन में उस पर पाबंदी लगाने के साथ-साथ उसके जज़बात का ख़्याल रखते हुए प्यार से उसे समझाएँ।

फ़्रीडम देनी होगी

सख़्ती करना या रोक-टोक करना बेटी को हैंडल करने का कोई बहुत अच्छा तरीक़ा नहीं है बल्कि आपको उसे कुछ फ़्रीडम तो देनी ही पड़ेगी। आपको उस पर भरोसा करके खुद उसे अपने लिए चीज़ें चुनने की छूट देनी होगी। उसके लिए आपको उसे अपने भरोसे में लेकर उसके साथ बैठकर बात करनी होगी। इससे उसके दिल और दिमाग़ में क्या चल रहा है, वह क्या चाहती है, यह सब समझने में आपको मदद मिलेगी। याद रखिए! टीनऐज आपकी बेटी की ज़िंदगी का एक बड़ा खूबसूरत चेप्टर है। उसे इस

दौरान बहुत ध्यान से संभालें।

माँ से शिकायत

अक्सर देखा गया है कि बेटी को माँ से यह शिकायत रहती है कि उसकी माँ उसे समझना ही नहीं चाहती। ऐसा तभी होता है जब माँ उसे कंट्रोल करने की कोशिश करती है। एक बिहेवियरल फ़िज़िशियन का कहना है कि जैसे ही 'माँ' ज़बान पर आता है, तो दिमाग़ में जो इमेज बनती है वह उस औरत की होती है जो अपने बच्चों से ग़लतियां होने पर उन्हें माफ़ कर देती है, हमेशा उनका ख़्याल रखती है, उनको कोऑप्रेट करती है। इसमें कोई शक नहीं कि माँ और बेटी का रिश्ता बहुत गहरा होता है, लकिन वह अलग-अलग तरह से सोचती हैं क्योंकि उनके बीच जेनेरेशन गैप होता है। बेटी जब बड़ी हो जाती है तो वह दो अलग-अलग औरतें भी बन जाती हैं। इसलिए बेहतर यही होगा कि इससे पहले कि आपकी बेटी आपको ही अपना दुश्मन समझने लगे, आप उसके बड़े होते ही उसकी दोस्त बन जाएँ। अपनी बेटी के साथ इस तरह से रहें और उसके अंदर ऐसी फ़ीलिंग पैदा करें कि वह आपको अपना दोस्त ही समझे क्योंकि जब आप दोस्त बन जाएंगी तो वह आपसे बिना झिझके सारी बातें कर लेगी।

ख़ुद को आइडियल बनाना होगा

आपकी बात का किसी पर भी तब तक असर नहीं होगा जब तक कि आप ख़ुद उस बात पर अमल न करती हों। इसलिए आपको अपनी बेटी के लिए एक अच्छी मिसाल बनना होगा। अपनी टीनऐज बेटी के साथ जैसे को तैसा वाला बर्ताव बिल्कुल नहीं करना चाहिए। अपने बिहेव से उसे यह जताएं कि आप उससे प्यार करती हैं, उसकी केयर करती हैं और आपको उसकी कितनी फ़िक्र है। आपकी बेटी से अगर कोई ग़लती हो भी जाए तो नाराज़ होने के बजाए उस बारे में उससे बात करें और उसे समझाएं कि उससे कहां और कैसे ग़लती हुई है। टीनऐजर जानते हैं कि क्या सही है और क्या ग़लत है लेकिन फिर भी वह एक्सपेरिमेंट करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें एक्सपेरिमेंट करना पसंद है। इसलिए उन्हें इतनी आज़ादी दें कि वह अपने एक्सपेरिमेंटस आपके साथ शेयर कर लें।

क्वॉलिटी टाइम

अपनी बेटी के साथ क्वालिटी टाइम ज़रुर बिताएँ। उसे यक़ीन होना चाहिए कि आप उसे कुछ करने से रोकेंगी नहीं। फिर वह हर बात आपको बताएगी और इस तरह आप जब उसके दिल की बात जान लेंगी तो फिर आप उसे सही तरह से गाइड कर पाएंगी। इस तरह वह आपके अगेंस्ट जाने के बजाए आपकी राय मान लेगी।

स्पेस दें

ग़ैर ज़रुरी रोक-टोक आपके लिए फ़ायदेमंद साबित नहीं होगी। ज़्यादा रोकने-टोकने से आपके ताल्लुक़ात में ख़राबी पैदा हो सकती है। इसलिए उसे ज़रुरी और थोड़ा स्पेस दें। थोड़ी सी आज़ादी और थोड़ी सी रोक-टोक उसकी लाइफ़ में एक बैलेंस बनाने के लिए ज़रुरी है। कोई भी चीज़ कम या ज़्यादा फ़ायदा नहीं पहुंचाती है। इसलिए मौक़ा देखकर प्यार और डांट फटकार भी ज़रुरी है।

लाइफ़ में हर चीज़ की अपनी जगह होती है। जगह बदलने से उसका बैलेंस बिगड़ जाता है। अपने बच्चों की परवरिश में इसका ख़्याल रखना बहुत ज़रुरी है। इमाम अली[अ] ने इंसाफ़ की डिफ़ीनीशन यह बताई है कि किसी भी चीज़ को उसकी सही जगह पर रख देने को इंसाफ़ कहते हैं और किसी भी चीज़ को उसकी जगह से हटा देने को ज़ुल्म कहते हैं। इसलिए ख़ास कर इस मामले में बच्चों के साथ इंसाफ़ से पेश आएं।

नहजुल बलाग़ा का शॉर्ट-इंट्रोडक्शन

■ अमीन हैदर हुसैनी
वाराणसी

नहजुल बलाग़ा हज़रत अली[अ०] की कुछ स्पीचेस, लैटर्स और छोटे-छोटे जुमलों का कलेक्शन है जिसे आपने अलग-अलग मौक़ों और मुनासिबत से बयान किया था।

नहजुल बलाग़ा की अहमियत और इम्पॉरटेंस के लिए यही काफ़ी है कि इसे क़ुरआने मजीद का भाई कहा गया है क्योंकि क़ुरआन और नहजुल बलाग़ा दोनों का रास्ता एक ही है, क़ुरआने करीम का काम भी हिदायत करना है और नहजुल बलाग़ा का भी।

बल्कि यूं कहा जाए कि क़ुरआन और नहजुल बलाग़ा एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकते। जैसा कि रसूले अकरम[स०] की यह हदीस भी कह रही है कि जिसमें आप[स०] ने फ़रमाया, "अली क़ुरआन के साथ हैं और क़ुरआन अली के साथ है।"

अल्लामा ज़ीशान हैदर जवादी नहजुल बलाग़ा की अहमियत और इमपॉरटेंस की तरफ़ इशारा करते हुए लिखते हैं, "नहजुल बलाग़ा अमीरुल मोमिनीन[अ०] के इरशादात का वह कलेक्शन है जिससे ज़्यादा बुलंद सहीफ़ा न इससे पहले तैयार हुआ है न इसके बाद होने वाला है।

अब सवाल यह पैदा होता है कि इस किताब को किसने और कब कलेक्ट किया?

इस किताब के कलेक्टर अल्लामा सैय्यद रज़ी हैं जो सन् 359 हिजरी में इराक़ के शहर बग़दाद में पैदा हुए और 6 मोहर्रम सन् 406 हिजरी में आपका इंतिक़ाल हो गया। आपको शियों के चौथी सदी हिजरी के मशहूर स्कालर्स में गिना जाता है।

अल्लामा जवादी, सैय्यद रज़ी के बारे में कहते हैं, "कितनी बरकत वाली थी सैय्यद रज़ी की ज़िंदगी कि 47 साल के अंदर सैकड़ों किताबों की स्टडी करके अमीरुल मोमिनीन[अ०] के इरशादात का इतना बड़ा ख़ज़ाना जमा कर दिया कि आज सारी दुनिया उसे ताज्जुब की नज़र से देख रही है।"

ख़ुद सैय्यद रज़ी एक ज़बरदस्त आलिम, फ़क़ीह, शायर और अदीब थे। आपको अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली[अ०] से गहरी मुहब्बत थी। आप हज़रत अली[अ०] की फ़साहत और बलाग़त से भरे कलाम के दीवाने थे। यही वजह थी कि आपने हज़रत अली[अ०] के इरशादात को कलेक्ट करने में फ़साहत और बलाग़त का ख़ास ख्याल रखा था।

यहां इस बात की तरफ इशारा करना भी ज़रूरी है कि नहजुल बलाग़ा हज़रत अली[अ०] के सिर्फ़ कुछ इरशादात का कलेक्शन है जिसे सैय्यद रज़ी ने जमा किया था। यानि इमाम अली[अ०] की सारी हदीसें इसमें जमा नहीं की गई हैं।

अल्लामा सैय्यद रज़ी को इस किताब के कलेक्शन में तक़रीबन 20 साल लगे थे। आपने सन् 400 हिजरी में इस किताब का इंट्रोडक्शन करवाया था।

तब से आज तक सैकड़ों किताबें और आर्टिकल्स इस मुक़द्दस किताब पर लिखे जा चुके हैं और लिखे जा रहे हैं। लेकिन कोई भी इस बात का दावा नहीं कर सका है कि उसे इस किताब पर पूरा कमान्ड हासिल हो चुका है और अब लिखने को कुछ नहीं बचा।

ऐसा नहीं है कि सिर्फ़ शियों ने नहजुल बलाग़ा पर किताबें और आर्टिकल्स लिखे हों बल्कि ग़ैर

शिया और ग़ैर इस्लामी स्कालर्स ने भी न जाने कितनी किताबें और आर्टिकल्स लिखे हैं। उनमें से कुछ के नाम इस तरह हैं : इब्ने अबिल हदीद, शेख मुहम्मद अब्दोह मिस्री, डाक्टर ताहा हुसैन, डाक्टर सुबही सालेह, जार्ज जुरदाक़, जुर्जी ज़ैदान, जुबरान ख़लील वग़ैरा।

बहरहाल सैय्यद रज़ी ने बीस साल में हज़रत अली[अ०] के जिन इरशादात को जमा किया था उन्हें तीन हिस्सों में डिवाइड करके किताबी शक्ल दे दी जिसकी ताज़गी और नयापन अब तक बाक़ी है और इंशाअल्लाह यह किताब क़यामत तक बाक़ी और ज़िंदा रहेगी।

नहजुल बलाग़ा का पहला हिस्सा बहुत ही इंमपॉरटेंट माना जाता है। इस हिस्से में तक़रीरें और स्पीचेस शामिल हैं जिन्हें इमाम ने अलग-अलग मौक़ों पर बयान किया था जिनको दूसरे लफ़्ज़ों में ख़ुतबा या सरमन कहा जाता है। इस मुक़द्दस किताब में छोटे-बड़े ख़ुतबों को मिलाकर कुल 241 ख़ुतबे पाए जाते हैं। इन ख़ुतबों में अलग-अलग टापिक्स पर बहस की गई है चाहे वह दुनिया से रिलेटेड हों या ग़ैरे दुनिया से, मज़हबी हों या ग़ैरे मज़हबी।

ख़ुतबा नम्बर 192, जो कि 'ख़ुतबए क़ासेआ' के नाम से मशहूर है, नहजुल बलाग़ा का सबसे बड़ा ख़ुतबा और ख़ुतबा नम्बर 9 सबसे छोटा ख़ुतबा है।

नहजुल बलाग़ा का दूसरा हिस्सा ख़तों का है। जिन्हें हज़रत अली[अ०] ने अलग-अलग लोगों को अलग-अलग मौक़ों पर लिखा था। इनमें पब्लिक और हुकूमत के लोग, दोनों शामिल हैं। इन ख़तों की कुल तादाद 79 है।

ख़त नम्बर 53, जो कि 'मालिके अशतर के अहदनामे' के नाम से मशहूर है, नहजुल बलाग़ा का सबसे बड़ा ख़त और ख़त नम्बर 79 सबसे छोटा ख़त है।

इस किताब का तीसरा और आख़िरी हिस्सा हिकमतों का है जिन्हें 'शार्ट सेंटेंसेस' कहते हैं। इस हिस्से में छोटी बड़ी हकीमाना बातों को जमा किया गया है कि जिनकी तादाद 480 है।

नहजुल बलाग़ा की सबसे बड़ी हिकमत, हिकमत नम्बर 147 और सबसे छोटी हिकमत, हिकमत नम्बर 434 है।

यह था नहजुल बलाग़ा का एक शार्ट इंट्रोडक्शन, इंशाअल्लाह किसी दूसरे मौक़े पर इस मुक़द्दस किताब के बारे में तफ़सील से बयान किया जाएगा।

तालीम

■ अनम रिज़वी

बच्चे का पहला स्कूल मां की गोद होती है और मां अपने बच्चे को अच्छी तालीम देने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ती। तीन साल का बच्चा हुआ नहीं कि उसे स्कूल भेजना शुरू कर दिया जाता है। पैरेन्टस अपने बच्चे को अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ाते हैं और चाहते हैं कि बच्चा बड़ा होकर उनका नाम रौशन करे। वह नहीं चाहते कि उनका बच्चा किसी से पीछे रहे और इसी चाहत से वह उसे दुनियावी तालीम देने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते क्योंकि वह जानते हैं कि दुनियावी तालीम बेहद ज़रूरी है और अगर इसमें कोई भी कमी रखी तो बच्चे को बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। यहां मैं आपको एक वाक़ेआ बताना चाहती हूं।

एक आदमी थे जिन्होंने अपने बच्चे की पढ़ाई में कोई कमी नहीं रखी थी। उसे खूब पढ़ाया और उनका बच्चा बड़ा होकर एक नेक डाक्टर बना। बेटे को देखकर बाप बड़े खुश हुए और होते भी क्यों न, उनका बेटा डाक्टर बन चुका था। लोगों ने उन्हें मुबारकबाद दी कि उन्होंने अपने बेटे को इतनी अच्छी तालीम दी। कुछ महीने बाद बाप का इन्तेक़ाल हो गया, जब लोग सूरए फ़ातेहा पढ़ने लगे तो देखा उनका बेटा रोते हुए इधर-उधर देख रहा था क्योंकि उसे सूरए फ़ातेहा पढ़नी नहीं आती थी।

मैं इस वाक़ेए से सिर्फ़ इतना कहना चाह रही हूं कि कहीं आप अपने बच्चे को अधूरी तालीम तो नहीं दे रही हैं यानी आप उसे दुनियावी तालीम तो दे रहे हैं मगर दीनी तालीम ? क्या यह सही है ? याद रखिए अगर आप अपने बच्चे को दुनियावी तालीम के साथ दीनी तालीम देंगी तो उसे हमेशा सही और ग़लत पता होगा जैसे वह जानता होगा कि झूठ बोलना, ग़ीबत करना, शराब पीना यह सब हराम है और मरने के बाद इसकी सख़्त सज़ाएं हैं तो बच्चा कभी भी ग़लत रास्ता नहीं चुनेगा।

बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिन पर नमाज़ वाजिब है पर उन्हें नमाज़ आती ही नहीं है। लड़की पर नौ साल और लड़के पर पंद्रह साल पर नमाज़ वाजिब है इसलिए पैरेन्टस का फर्ज़ है कि वह बच्चे को बालिग़ होने से पहले ही नमाज़ का पाबन्द बना दें ताकि जब उस पर नमाज़ वाजिब हो तो वह पाबंदी से नमाज़ पढ़े और अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो अल्लाह के यहां जाकर इसका जवाब बच्चे के साथ-साथ पैरेन्टस को भी देना होगा। हम जानते हैं कि जितनी दुनियावी तालीम ज़रूरी है उससे कहीं ज़्यादा दीनी तालीम क्योंकि दुनियावी तालीम सिर्फ़ दुनिया में काम आती है लेकिन दीनी तालीम दुनिया और आख़ेरत दोनों जगह काम आती है।

आप अपने बच्चे को पांच घंटे स्कूल भेजती हैं लेकिन एक घंटा मदरसे नहीं भेज सकतीं। अगर आप अपने बच्चे को दुनियावी तालीम के साथ दीनी तालीम भी बताती हैं तो बच्चा चाहे जितना बड़ा हो जाए कभी भी गुमराह नहीं होगा और उसके किए गए नेक अमल का सवाब आपको भी मिलेगा अब फैसला आप पर है कि क्या आप अपने बच्चे को अधूरी तालीम देना पसंद करेंगी ?

कबाब

चिकन कबाब

चिकनः	हड्डी के बग़ैर, लम्बाई में कटा हुआ
हरा धनियाः	बारीक कटा हुआ
अदरक पिसी हुईः	2 चाय के चम्मच
गरी पाउडरः	1 खाने का चम्मच
दहीः	1 कप
सफ़ेद ज़ीरा पाउडरः	1/2 चाय का चम्मच
ख़ुश्क धनिया पाउडरः	1/2 चाय का चम्मच

तरकीबः

मुर्ग़ के सीने के गोश्त के लम्बे-लम्बे टुकड़े काट कर प्याले में डालिए। फिर दही में सारे मसाले को मिलाकर गोश्त पर डालिए और अच्छी तरह मिलाकर और ढक कर दो घंटे के लिए फ़्रिज में रख दीजिए। गोश्त को मसाले से निकाल कर बांस की तीलियों में पिरो दीजिए। तीलियों को पहले घंटा भर के लिए पनी में भिगो दीजिए। फिर ग्रिल पर उनको पका लीजिए। अगर ग्रिल न हो तो फ़्राइंगपैन में थोड़ा सा तेल गर्म करके चारों तरफ़ तल लीजिए।

कबाब तैयार हैं, सलाद के साथ सर्व कीजिए।

अफ़ग़ानी

सीख़ कबाब

क़ीमाः	एक किलो
नमकः	चाय के दो चम्मच
कच्ची प्याज़ः	२ (चौकोर कटी हुई)
काली मिर्च पाउडरः	चाय का आधा चम्मच
लाल मिर्च पाउडरः	चाय के २ चम्मच
अदरक-लहसुन पेस्टः	चाय के २ चम्मच
हरा धनियाः	आधी गटठी
टमाटरः	चार अदद
शिमला मिर्चः	चार अदद

तरकीबः

क़ीमे को नमक, काली मिर्च, लाल मिर्च और अदरक-लहसुन पेस्ट के साथ पीस लीजिए। कच्ची प्याज़ और धनिया काट कर डालिए और फ़्रिज में एक घंटे के लिए रख दीजिए। इसके बाद सीख़ पर शिमला मिर्च, टमाटर और क़ीमे की छोटी-छोटी गेंदें बनाकर लगा लीजिए और कोयले दहका कर सेंक लीजिए। बस! गर्म-गर्म सर्व कीजिए।

आज़ादी

पश्चिमी दुनिया की नज़र में

■ अख़्तर अब्बास जौन

पिछले आर्टिकिल में हमने अपने रीडर्स के लिए 'इस्लाम की नज़र में इंसानी आज़ादी' के ख़ाके को पेश किया था और वादा किया था कि इस इशू में आज़ादी के बारे में पश्चिमी दुनिया के नज़रियों को पेश किया जाएगा।

शुरू में इस बात की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है कि इंसान के किसी भी पहलू के बारे में हमारे नज़रियों का बहुत गहरा रिश्ता इससे है कि अपनी ज़िंदगी और इस दुनिया के बारे में जिसमें हम ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, हमारा नज़रिया क्या है। अगर ज़िंदगी के बारे में किसी का नज़रिया यह है कि यह ज़िंदगी सिर्फ़ दुनियावी ज़िंदगी है जिसमें हम मरते और ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और इसके बाद कोई ज़िंदगी नहीं है तो ज़ाहिर है कि बहुत सारे इंसानी मसलों में उसका नज़रिया एक ऐसे इंसान से अलग होगा जो इंसानी ज़िंदगी को सिर्फ़ दुनियावी ज़िंदगी की हद तक नहीं मानता और उसको यक़ीन है दुनिया की इस छोटी सी ज़िंदगी के बाद एक बहुत लम्बी ज़िंदगी उसका इन्तिज़ार कर रही है जो या तो बहुत ख़ूबसूरत, हसीन और मज़ेदार होगी या बहुत सख़्त और दर्दनाक।

ज़िंदगी और दुनिया के बारे में पश्चिमी स्कालर्स का नज़रिया

पिछली सदियों में जब से इंसानी आज़ादी और ख़ास कर औरतों की आज़ादी के बारे में ज़्यादा बातचीत की गई, अकसर पश्चिमी स्कालर्स ने दुनिया को भी और इंसानी ज़िंदगी को भी सिर्फ़ एक एंग्ल से देखा और वह था माद्दी और दुनियावी एंग्ल। पश्चिमी समाज में आज़ादी को भी इसी सोच के साथ देखा गया। पश्चिमी स्कालर्स ने इंसान या औरतों को आज़ाद करने की फ़िक्र और कोशिश ज़रूर की लेकिन चूंकि नज़र सिर्फ़ माद्दी व दुनियावी चीज़ों में ही क़ैद थी और रूहानी व उख़रवी ज़रूरतों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया गया था, इसलिए इस आज़ादी का नतीजा यह हुआ कि इंसानियत तरह-तरह की अख़लाक़ी, समाजी और नफ़सियाती मुश्किलों में फंस गई। पश्चिम और पश्चिमी कल्चर में डूबे समाज व लोगों के बीच शर्म व हया और इफ़्फ़त व पाकीज़गी की जगह बेग़ैरती व बेहयाई ने ले ली और फ़ैमिली स्ट्रक्चर बुरी तरह से टूट गए। तरह-तरह की नफ़सियाती मुश्किलों ने जन्म ले लिया। इंसान ने ख़ुद को इंसानी वेल्यूज़ व अख़लाक़ी फ़ज़ीलतों से तो आज़ाद कर लिया लेकिन शैतान के जाल में बुरी तरह फंस गया।

औरतों की आज़ादी और हयूमेन राइट्स

इसमें कोई शक नहीं कि औरतों की आज़ादी और उनके अपने पैरों पर खड़े होने के लिए सबसे पहला मज़बूत क़दम इस्लाम ने उठाया है। पश्चिमी लोगों ने इस बारे में इस्लाम की नक़्ल की है लेकिन काश कि सही नक़्ल करते।

एक ज़माने में पश्चिमी स्कालर्स औरतों के बारे में यह बहस करते थे कि इस अजीब मख़लूक़ में नफ़्स व रूह पाई जाती है या नहीं?! और अगर पाई जाती है तो वह इंसानी रूह है या हैवानी और अगर इंसानी रूह है तो मर्दों के मुक़ाबले में उनकी समाजी हालत ग़ुलामों की तरह है या उनसे कुछ बेहतर है।

पश्चिमी दुनिया में पहली बार बीसवीं सदी में मर्दों के राइट्स के साथ औरतों के राइट्स पर बातचीत हुई।

ब्रिटेन जो डिमोक्रेसी के लिहाज़ से बड़ा पुराना मुल्क समझा जाता है, वहां भी बीसवीं सदी के शुरू में औरतों के हक़ को मर्दों के बराबर जाना गया।

अमेरिका में 1920 में मर्द-औरत के लिए बराबरी का क़ानून पास किया गया। इसी तरह फ़्रांस में भी लगभग इसी ज़माने में औरतों के हक़ की बात हुई। जबकि पिछले आर्टिकिल में लिखा गया था कि इस्लाम में औरतें के छोटे-छोटे से और बहुत मामूली हक़ों का भी भरपूर ख़्याल रखा है।

पश्चिमी दुनिया में हयूमेन राइट्स और औरतों के हक़ों के क़ानून की बुनियादें लॉजिकल और नेचुरल नहीं हैं वरना पश्चिमी दुनिया की अंधी तक़लीद करने वाले समाजों को इतनी

समाजी, अख़लाक़ी व साईकॉलोजिकल मुश्किलों का सामना न करना पड़ता। इन मुश्किलों की वजह यह है कि पश्चिमी दुनिया में बहुत से ह्यूमेन राइट्स, ख़ास कर आज़ादी के हक़ को सही से पेश नहीं किया गया है।

पश्चिमी दुनिया में औरतों की आज़ादी के मक़सद

सदियों से औरतों पर जो जुल्म व सितम किए गए थे उनको देखते हुए औरतों के लिए ऐसे क़ानून की ज़रूरत थी जो उनकी आज़ादी की भी हिफाज़त करे और उनकी इज़्ज़त व शराफ़त की भी लेकिन पश्चिमी दुनिया में बहुत मामूली और छोटे से मक़सदों के लिए आज़ादी के नारे लगा दिए गए, जिनके कुछ इंडस्ट्रियल फ़ाएदे भी थे। फ़्रांस के इंडस्ट्रियल इंक़ेलाब के बाद पिछली सदियों में ज़िंदगी जीने के स्टेंडर्ड में लगातार तरक़्क़ी और इज़ाफ़ा होने के साथ-साथ बड़े-बड़े कारख़ानों और कम्पनियों की तादाद भी बढ़ती गई जिसके लिए सरमायादारों को अपने कारख़ानों के लिए सस्ते मज़दूरों की ज़रूरत थी जो सिर्फ़ मर्दों के ज़रिए पूरी नहीं हो सकती थी। इस हालत में मज़दूरों की कमी की वजह से उन्हें बड़ी तनख़्वाहें देकर मज़दूरों का इंतेज़ाम करना पड़ा। इस मुश्किल से बाहर निकलने के लिए बराबरी के नाम पर औरतों को कारख़ानों की मशीनों के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया। इस तरह सरमायादारों की मुश्किल तो हल हो गई क्योंकि उन्हें सस्ते मज़दूर मिल गए लेकिन इसके नतीजे में फ़ैमिली स्ट्रक्चर और ख़ुद औरतों पर जो मुसीबतें टूटीं हैं उसका अंदाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है।

इसके अलावा औरतों को बाज़ार में लाकर ख़रीदारों को बढ़ाना भी उनका एक मक़सद था। इस तरह लोगों के घर ग़ैर ज़रूरी सामानों से भर गए लेकिन कम्पनियों का प्रोडक्शन चलता रहा।

इंडस्ट्रियल फ़ायदों के अलावा औरतों की आज़ादी के नारे में ग़ैर अख़लाक़ी मक़सद भी शामिल थे जिनकी तरफ़ पिछले आर्टिकिल में इशारा किया जा चुका है।

ख़ुश्बू

अलग-अलग फलों और फूलों की ख़ुश्बू बहुत सी बीमारियों के अलावा दिमाग़ी बीमारियों को भी ख़त्म करती है। फलों में नीबू, आम और मालटे की ख़ुश्बू दिमाग़ के प्रेशर को कम करती है जबकि फूलों में गुलाब की ख़ुश्बू इन्सान के ज़ेहनी और जिस्मानी काम करने की सलाहियत को बढ़ाती है। आज साइंस के दौर में जितनी ज़्यादा सहूलतें मौजूद हैं उतना ही डिप्रेशन भी है। दिमाग़ी और साइकलोजिकल बीमारियों का ग्राफ़ बढ़ ही रहा है लेकिन कुछ ख़ुश्बुएँ सूंघने से ज़ेहनी बीमारियों से ताल्लुक़ रखने वाले दिमाग़ के जीन एक्टिव हो जाते हैं और ख़ून की कैमिस्ट्री में एक ख़ास तरह का बदलाव आता है जिससे ज़ेहनी दबाव कम हो जाता है।

फूलों में गुलाब की ख़ुश्बू से मेमोरी बढ़ती है और एलज़ाइमर की बीमारी में इसकी ख़ुश्बू बड़ी असरदार है। एलज़ाइमर एक ख़ास दिमाग़ी बीमारी है जिससे धीरे-धीरे मरीज़ अपनी याद्दाश्त खोने लगता है। रात के वक़्त गुलाब की ख़ुश्बू सूंघने से दिमाग़ी सेहत पर अच्छा असर पड़ता है। इन्सानी दिमाग़ का मेमोरी वाला हिस्सा रात को ख़ुश्बू सूंघने से बहुत एक्टिव हो जाता है और याद्दाश्त तेज़ हो जाती है।

बेइंसाफ़ी

अबुल आला मोदूदी

थोड़ी सी अक़्ल भी यह बात समझने के लिए काफ़ी है कि इंसान किसी एक आदमी या एक फ़ैमली या एक सोसाइटी का नाम नहीं है। सारी दुनिया के इंसान बहेरहाल इंसान हैं। सारे इंसानों को जीने का हक़ है। सब उसके हक़दार हैं कि उनकी ज़रूरतें पूरी हों। सब अमन के, इंसाफ़ के, इज़्ज़त और शराफ़त के ज़रूरतमंद हैं। इंसानी ख़ुशहाली अगर किसी चीज़ का नाम है तो वह किसी एक आदमी या फ़ैमली या सोसाइटी की ख़ुशहाली नहीं, बल्कि सारे इंसानों की ख़ुशहाली है, वरना एक ख़ुशहाल हो और दस बदहाल हों तो आप यह नहीं कह सकते कि इंसान ख़ुशहाल है। कामयाबी अगर किसी चीज़ को कहते हैं तो वह सारे इंसानों की कामयाबी है न कि किसी एक तबक़े की या एक क़ौम की। एक की कामयाबी और दस की बर्बादी को आप इंसानी कामयाबी नहीं कह सकते हैं।

इस बात को अगर आप सही समझते हैं तो ग़ौर कीजिए कि इंसान को कामयाबी और ख़ुशहाली किस तरह मिल सकती है। इसके लिए सिर्फ़ एक ही कंडीशन है कि इंसान की ज़िंदगी के लिए ऐसे क़ानून बनाए जाएं जिसकी नज़र में सारे इंसान एक जैसे हों। सबके हक़ों को इंसाफ़ के साथ वह तय कर सकता है जो न तो ख़ुद अपने किसी पर्सनल फ़ायदे के बारे में सोचता हो और न किसी फ़ैमली या तबक़े के बारे में और न ही किसी मुल्क या क़ौम से उसको ख़ास दिलचस्पी हो। सब के सब उसका हुक्म मानें। जो हुक्म देने में न अपनी जिहालत की वजह से ग़लती करे, न अपने जज़्बात और ख़्वाहिश की वजह पर हुकूमत की पावर का ग़लत और नाजाएज़ फ़ायदा उठाए। एक का दुश्मन और दूसरे का दोस्त एक का हमदर्द और दूसरे का मुख़ालिफ़, एक से मोहब्बत और दूसरे से दुश्मनी न रखता हो। ऐसे हालात रहेंगें तो इंसाफ़ क़ायम हो सकता है। इसी तरह सारे इंसानों को चाहे वह किसी समाज के हों, या तबके के बल्कि पूरी इंसानियत उनके जाएज़ हक़ पहुंच सकते हैं। यह एक कंडीशन ऐसी है जिससे ज़ुल्म मिट सकता है।

अगर यह बात भी सही है तो फिर मैं आपसे पूछता हूं कि क्या दुनिया में कोई इंसान भी ऐसा बेलाग, ऐसा ग़ैर जानिबदार, ऐसा बेग़र्ज़ और इस क़द्र इंसानी कमज़ोरियों से बालातर हो सकता है? शायद आप में से कोई भी मेरे सवाल का जवाब पाज़िटिव में देने की हिम्मत नहीं करेगा। यह शान सिर्फ़ ख़ुदा ही की है। किसी दूसरे की ऐसी शान ही नहीं है। इंसान चाहे कितने ही बड़े दिल गुर्दे का हो, लेकिन उसकी अपनी कुछ पर्सनल ज़रूरतें होती हैं, कुछ दिलचस्पियां और कुछ हॉबीज़ भी होती हैं। किसी से उसका ताअल्लुक़ ज़्यादा है और किसी से कम, किसी से उसको मुहब्बत है और किसी से नहीं है। इन कमज़ोरियों से कोई इंसान पाक नहीं हो सकता। यही वजह है कि जहां ख़ुदा के बजाए इंसानों के आगे झुका जाता है, वहां किसी न किसी तरह ज़ुल्म और बेइंसाफ़ी ज़रूर होती है।

उन शाही ख़ानदानों को देखिए जो ज़बरदस्ती अपनी ताक़त के बलबूते पर एक ख़ास मुक़ाम हासिल किए हुए हैं। उन्होंने अपने लिए वह इज़्ज़त, वह ठाठ, वह आमदनी, वह हक़ और वह सारी पॉवर अपने हाथों में ले रखी हैं जो दूसरों के लिए नहीं हैं। यह क़ानून से ऊपर हैं। इनके ख़िलाफ़ कोई दावा नहीं किया जा सकता। यह चाहे कुछ करें उनके मुक़ाबले में कोई चाराजोई नहीं की

जा सकती। कोई अदालत उनके नाम सम्मन नहीं भेज सकती। दुनिया देखती है कि यह ग़ल्तियां करते हैं, मगर कहा जाता है कि मानने वाले मान भी लेते हैं कि "बादशाह ग़ल्ती से पाक है।" दुनिया देखती है कि यह वैसे ही इंसान हैं, जैसे और सब इंसान होते हैं, मगर यह ख़ुदा बन कर सबसे ऊंचे बैठते हैं और लोग उनके सामने यूं हाथ बांधे, सर झुकाए, डरे-सहमे ख़ड़े होते हैं जैसे उनकी रोज़ी, उनकी ज़िंदगी, उनकी मौत, सब उनके हाथ में है। यह पब्लिक का पैसा अच्छे और बुरे हर तरीक़े से घसीटते हैं और उसे अपने महलों पर, अपनी सवारियों पर, अपने ऐश व आराम और अपनी तफ़रीहों पर बेधड़क लुटाते हैं। उनके कुत्तों को वह रोटी मिलती है जो कमा कर खाने वाले आम लोगों को नसीब नहीं होती। क्या यह इंसाफ़ है? क्या यह तरीक़ा किसी ऐसे इंसाफ़ करने वाले का तय किया हुआ हो सकता है जिसकी नज़रों में सब इंसानों के हक़ और फ़ायदे एक जैसे हों? क्या यह लोग इंसानों के लिए कोई इंसाफ़ वाला क़ानून बना सकते हैं?

इन ब्रहमणों और पीरों को देखिए। इन नवाबों और रईसों को देखिए। इन जागीरदारों और ज़मीनदारों को देखिए। इन साहूकारों और महाजनों को देखिए। यह सब अपने आपको आम इंसानों से ऊँचा समझते हैं। उनके असर और पावर से जितने क़ानून दुनिया में बने हैं वह उन्हें ऐसे हक़ देते हैं जो आम इंसानों को नहीं दिए गए। यह लोग पाक हैं और दूसरे नापाक। यह शरीफ़ हैं और दूसरे कमीने। यह ऊंचे हैं और दूसरे नीचे। यह लूटने के लिए हैं और दूसरे लुटने के लिए। इनके दिल की ख़्वाहिशों पर लोगों की जान, माल, इज़्ज़त, आबरू हर एक चीज़ क़ुर्बान कर दी जाती है। क्या यह उसूल किसी इंसाफ़ करने वाले के बनाए हुए हो सकते हैं? क्या इनमें साफ़ तौर पर ख़ुदग़र्ज़ी व तरफ़दारी नज़र नहीं आती? क्या इस सोसाइटी में इंसाफ़ वाले क़ानून बन सकते हैं ?

उन हुकूमत करने वालों को देखिए जो अपनी ताक़त के बल पर दूसरी क़ौमों को ग़ुलाम बनाए हुए हैं। उनका कौन सा क़ानून और कौन सा उसूल ऐसा है जिसमें ख़ुदग़र्ज़ी शामिल नहीं है? यह सिर्फ़ अपने ही को इंसान समझते हैं। इनके नज़दीक कमज़ोर क़ौमों के लोग या तो इंसान नहीं हैं या अगर हैं तो कम दर्जे के हैं। यह हर हैसियत से अपने आपको दूसरों से ऊंचा ही रखते हैं और फायदे के लिए दूसरों के फ़ायदे को क़ुर्बान करना अपना हक़ समझते हैं। उनके असर से जितने क़ानून और उसूल दुनिया में बने हैं, उन सब में यह रंग ज़रूर है।

यह कुछ मिसालें मैंने सिर्फ़ इशारे के तौर पर दी हैं। सिर्फ़ यह बात आपके ज़ेहन नशीन करना चाहता हूं कि दुनिया में जहां भी इंसान ने क़ानून बनाया है, वहां बेइंसाफ़ी ज़रूर हुई है। कुछ इंसानों को उनके जाएज़ हक़ों से बहुत ज़्यादा दिया गया है और कुछ इंसानों के हक़ों को न सिर्फ़ पामाल किया गया है बल्कि उन्हें इंसानियत के दर्जे से गिरा देने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी गई है। इसकी वजह इंसान की यह कमज़ोरी है कि वह जब किसी का फ़ैसला करने बैठता है तो उसके दिल व दिमाग़ पर अपनी फ़ैमली, या अपनी नसल या अपने तबक़े या अपनी क़ौम या अपनी ज़ात ही के फ़ायदे का ख़्याल हावी रहता है।

दूसरों के हक़ों और फ़ायदों के लिए उसके पास वह हमदर्दी नज़र नहीं आती जो अपनों के लिए होती है। आप बताइए, क्या इस बेइंसाफ़ी का कोई इलाज इसके अलावा कुछ है कि इंसान के बनाए हुए सारे क़ानूनों को दरिया में डाल दिया जाए और उस ख़ुदा के क़ानून को हम सब मान लें जिसकी निगाह में इंसान और दूसरे इंसान के बीच कोई फ़र्क़ नहीं। फ़र्क़ अगर है तो सिर्फ़ उसके अख़्लाक़, उसके आमाल और उसी अच्छाई और नेकी के लिहाज़ से है, न कि नसल या तबक़े या क़ौमियत या रंग के लिहाज़ से।

इमामे ज़माना[अ॰] रिवायतों में

हम इससे पहले ईशूज़ में यह बता चुके हैं कि आख़िरी ज़माने में एक निजात देने वाले की बात सारे आसमानी मज़हबों में मौजूद थी और सारी आसमानी किताबों में इसकी तरफ़ इशारा किया गया है। कुरआन में इस सब्जेक्ट के बारे में कई आयतें हैं जिनमें से कुछ को हम आपके सामने पेश कर चुके हैं। साफ़ सी बात है कि रसूल[स॰] और उनके जांनशीनों ने भी इमामे ज़माना[अ॰], उनकी ग़ैबत, उनके ज़ुहूर, ज़ुहूर के बाद के हालात बयान किए हैं जिन्हें रावियों और उलमा ने अपनी किताबों में लिखा है। यह रिवायतें शिया किताबों में भी मौजूद हैं और अहलेसुन्नत की किताबों में भी जिससे यह मालूम होता है कि 'महदवियत' एक ऐसा इस्लामी अक़ीदा है जिस पर सारे इस्लामी फ़िरक़े ईमान रखते हैं।

यहां पर हम उनमें से कुछ किताबों और उनके राइटर्ज़ के नाम लिख रहे हैं।

शिया उलमा की लिखी कुछ किताबें और उनके राइटर्ज़

1-सुलैम बिन क़ैस हिलालीः अबू सादिक़ सलीम बिन क़ैस हिलाली

2-अल-महासिनः अबू जाफ़र अहमद बिन मुहम्मद

3-उसूले काफ़ीः मुहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी।

4-कमालुद्दीन व तमामुन नेमतः अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली

5-अल-इरशादः शेख़ मुफ़ीद

अहलेसुन्नत उलमा की लिखी किताबें जिनमें इमामे ज़माना के बारे में रिवायतें मौजूद हैं

1-मुसनद अहमद

अहमद बिन हमबल अहलेसुन्नत के चार इमामों में से एक हैं। उन्होंने अपनी किताब मुसनदे अहादीस में 136 ऐसी हदीसें ज़िक्र की हैं जिनमें से 35 हदीसें 'पैग़म्बर के बारह ख़लीफ़ा' 35 हदीसें 'मेहदी के ज़हूर की निशानियां' 26 हदीसें 'मेहदी के ज़हूर' 6 हदीसें 'मेहदी रसूल अल्लाह[स॰] की औलाद में से हैं' चार हदीसें 'उनका नाम रसूल का नाम है' 14 हदीसें 'हज़रत ईसा[अ॰] के नाज़िल होने और मेहदी के नमाज़ की इमामत करने' और चालीस हदीसें ख़ुदा की हुकूमत क़ायम करने के लिए मेहदी और उनके सहाबियों की जंग के बारे में हैं।

2-सुनन बिन माजा

यह हदीसों और रिवायतों के बहुत मशहूर आलिमे दीन हैं। इनकी किताब भी अहलेसुन्नत की छह बड़ी किताबों में शामिल है। इन्होंने अपनी किताब में 'ज़हूरे मेहदी' के नाम से एक चेप्टर बनाया है जिसमें हज़रत मेहदी[अ॰] के नसब, ज़ुहूर से पहले के हालात, उनके साथियों और उनकी हुकूमत के बारे में डिटेल से हदीसें लिखी हैं। इसी तरह से सुनने अबू दाऊद, अल-जामे अल-सही, कन्ज़ुल उम्माल और दूसरी बहुत सी किताबों में इन रिवायतों को लिखा गया है। इसके अलावा बहुत से अहलेसुन्नत उलमा ने इमामे ज़माना[अ॰] से रिलेटेड सारी रिवायतों को एक किताब में जमा किया है और पूरी किताब इमामे ज़माना के बारे में लिखी है। जिनमें से कुछ किताबों के नाम हम यहां पर लिख रहे हैं।

1-अरबऊन हदीसः अबू नईम इसफ़हानी

2-अल-बयान फ़ी अख़बारे साहेबिज़ ज़मानः अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद गंजी शाफ़ई

3-अल-बुरहान फ़ी अलामाते मेहदी आख़िरुज़ ज़मानः अला उद्दीन अली बिन हिशाम

शिया और अहलेसुन्नत उलमा की लिखी हुई इन किताबों और रिवायतों में बहुत सी हदीसें एक जैसी हैं जिससे मालूम होता है कि इमामे ज़माना के बारे में शिया और अहलेसुन्नत के बहुत से नज़रिये कॉमन हैं। यहां पर हम उनमें से कुछ चीज़ें ज़िक्र कर रहे हैं।

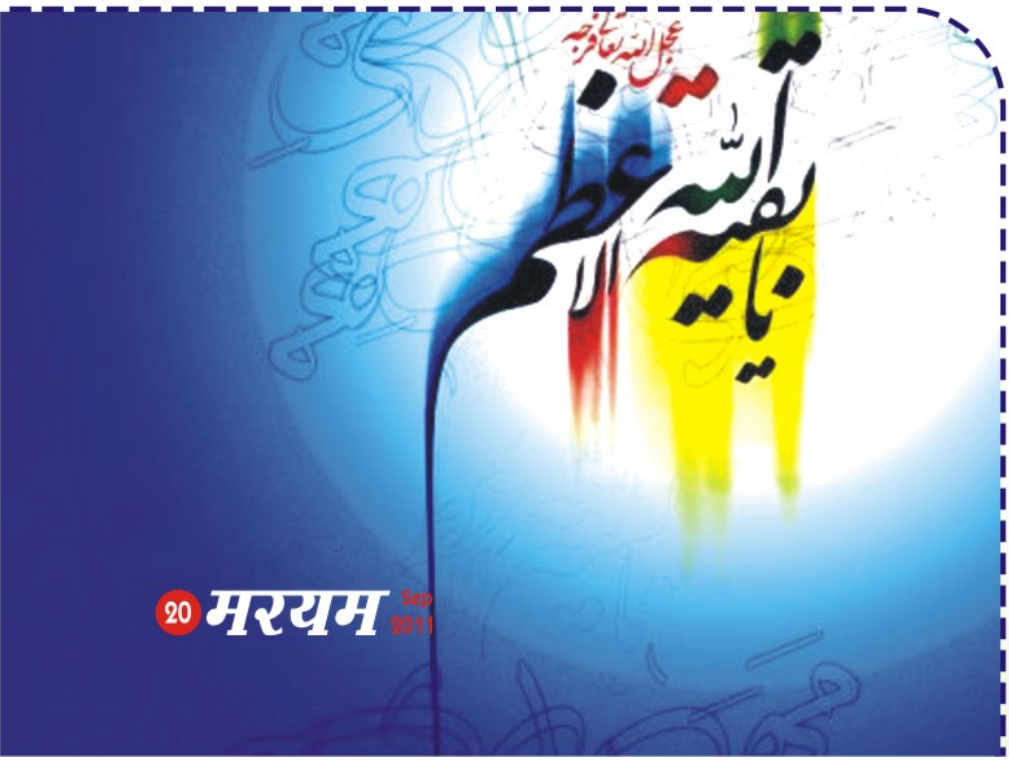

1-इमाम मेहदी[अ०] के ज़ुहूर का यक़ीनी होना

दोनों फ़िरक़ों की किताबों में सैकड़ों ऐसी रिवायतें मौजूद हैं जिनमें इमामे ज़माना[अ०] के ज़ुहूर पर रोशनी डाली गई है जिससे मालूम होता है कि दोनों के नज़दीक आख़िरी ज़माने में इमाम का ज़ुहूर यक़ीनी है।

2-हज़रत मेहदी का अहलेबैत और रसूल[स०] की औलाद से होना

इब्ने माजा ने अपनी किताब में लिखा है कि रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया, ''मेहदी हम अहलेबैत में से हैं।'' [1]

3-आपकी शक्ल व सूरत

बहुत सी रिवायतों में आपकी शक्ल व सूरत और जिस्मानी निशानियों और ख़ुसूसियतों को भी बयान किया गया है। जैसे आपका चेहरा नूरानी होगा और आपके दाहिने गाल पर तिल होगा। आप चालीस साल की उम्र में ज़ुहूर करेंगे वग़ैरा।

4- ज़ुहूर से पहले के हालात

अ- लोगों का बिल्कुल मायूस हो जाना

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने इमाम अली[अ०] से फ़रमाया, ''मेरे मेहदी का ज़ुहूर उस वक़्त होगा जब शहर बर्बाद हो जाएंगे, ख़ुदा के बंदे कमज़ोर और मेहदी के ज़ुहूर से मायूस हो जाएंगे। उस वक़्त मेरी औलाद में से क़ायम ज़ुहूर करेगा।'' [2]

ब- ज़ुल्म का फैल जाना

रसूले ख़ुदा[स०] की मशहूर हदीस है कि अगर इस दुनिया के ख़त्म होने में सिर्फ़ एक दिन भी बचेगा तब भी ख़ुदा उस दिन को इतना बड़ा कर देगा कि मेरे अहलेबैत में से एक शख़्स ज़ुहूर करेगा और ज़मीन को उसी तरह अदल व इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह वह ज़ुल्म से भरी हुई होगी। [3]

5- ज़ुहूर की निशानियां

रिवायतों में इमामे ज़माना[अ०] के ज़ुहूर की कुछ यक़ीनी निशानियां बयान की गई हैं।

1-आसमान से आवाज़ आना

हज़रत अली[अ०] ने फरमाया, ''जब आसमान से आवाज़ देने वाला यह कहेगा कि हक़ आले मुहम्मद का है, उस वक़्त मेहदी का ज़ुहूर होगा।''

2-सुफ़यानी का आपसे जंग के लिए निकलना

दोनों फ़िरक़ों की रिवायतों में ज़ुहूर की एक यक़ीनी निशानी यह बताई गई है कि सुफ़यानी नाम का एक शख़्स आपसे जंग करने के लिए मक्के की तरफ़ बढ़ेगा लेकिन वह अपने लश्कर समेत मक्के और मदीने के बीच 'बैदा' नाम के इलाक़े में ज़मीन में धंस जाएगा। [4]

3-ज़ुहूर की जगह

बहुत सी रिवायतों में इमामे ज़माना[अ०] के ज़ुहूर करने की जगह और उनके सहाबियों और उनसे बैअत करने वालों के उनके पास आने का ज़िक्र किया गया है जिनमें आपके ज़ुहूर की जगह मक्का और काबा के किनारे बताई गई है और आप उसी जगह पर अपने असहाब से बैअत लेंगे।

4-हज़रत ईसा[अ०] का आसमान से आना और इमाम मेहदी[अ०] के पीछे नमाज़ पढ़ना

ज़ुहूर के वक़्त एक अहम वाक़ेआ हज़रत ईसा[अ०] का नाज़िल होना है। जिसका ज़िक्र बहुत सी रिवायतों में मिलता है।

हज़रत मेहदी[अ०] की हुकूमत की ख़ुसूसियतें

अ- अदल व इंसाफ़ फैल जाएगा

शिया और अहलेसुन्नत की बहुत सी रिवायतों में आपकी हुकूमत की एक अहम क्वालिटी यह बयान की गई है कि पूरी दुनिया में अदल व इंसाफ़ फैल जाएगा। [5]

ब- सभी की ज़िंदगी आराम व सुकून से गुज़ारेगी

रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''मेहदी मेरी उम्मत के बीच में होंगे और उनके ज़माने में मेरी उम्मत को ऐसे आराम और सुकून की ज़िंदगी मिलेगी जैसी उससे पहले कभी नहीं मिली थी।''

स- सभी लोग इमाम मेहदी[अ०] की हुकूमत से राज़ी और ख़ुश होंगे।

द- पूरी दुनिया में अमन व अमान रहेगा।

य- पूरी दुनिया पर इमामे ज़माना[अ०] की हुकूमत होगी।

हदीस की किताबों में ऐसी बहुत सी रिवायतें हैं जिनमें यह बयान किया गया है कि आख़िरी ज़माने में ख़ुदा इमामे ज़माना[अ०] को पूरी दुनिया पर हुकूमत देगा जिसमें आप ख़ुदा का दीन फैलाएंगे और हर शख़्स 'लाइलाहा इल्लल्लाह' कहेगा यानी बेदीनी का नाम व निशान तक मिट जाएगा।

1- सुनन इब्ने माजा, जि० 2, हदीस 3085, 2- अलबयान फी अख़बार साहेबेज़ ज़मान, 3-सुनन अबी दाऊद, 4- कनज़ुल उम्माल, 5- सुनन अबी दाऊद

(दर्सनामए मेहदवियत)

इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 और आपके दौर की मुश्किलें

■ ज़फ़र अब्बास

इमाम सादिक़[अ०] की ज़िंदगी का दौर 83 हिजरी से 148 हिजरी तक यानी अब्दुल मलिक बिन मरवान की ख़िलाफ़त के आख़िर से मंसूर की ख़िलाफ़त के वक़्त तक है। इस बीच आपने बनी उमैय्या की हुकूमत का ज़माना देखा है उनके हुक्काम के मज़ालिम और अवाम के साथ उनका बर्ताव देखा है। आप बारह साल की उम्र तक अपने दादा इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] के साथ रहे 12 साल से 32 साल तक इमाम बाक़िर[अ०] के साथ ज़िंदगी गुज़ारी। दोनों की विरासत और दोनों का मुक़द्दस माहौल पाने के बाद 114 हिजरी से आपने अपने कमालों को दुनिया के सामने ज़ाहिर करना शुरू किया। इमाम बाक़िर[अ०] की शहादत हुई तो आपका मदरसा मक्के, मदीने और कूफ़े तक फैल चुका था। यह ज़माना इस्लामी हुकूमत में फ़ितनों और लड़ाईयों का ज़माना था। हाकिमों के आपसी इख़्तेलाफ़ें ने हुकूमत की चूलों को हिला दिया था अवाम उमवी सलतनत की खुल्लम खुल्ला मुख़ालेफ़त कर रहे थे। सियासी ग्रुप साज़िशों में मसरूफ़ थे और सलतनत के ठेकेदार चैन की नींद सो रहे थे। उन्हें न अवाम की फ़िक्र थी और न ही अपनी सियासत और इक़्तेसाद की। बिगड़े हुए हालात हर तबक़े को बदज़न बनाए हुए थे। एक के बाद एक आने वाला हाकिम और ज़्यादा मुश्किलें पैदा कर रहा था और पूरी सलतनत ऐसे तरीक़े छोड़ने पर मजबूर हो रही थी जिससे उम्मत को इस मुसीबत से नजात दिलाई जा सके। इक़्तेसादी कश्मकश अवाम को और भी परेशान किए हुए थी। हुक्काम ज़्यादा से ज़्यादा टैक्स वसूल करके अवाम के साथ बुरे से बुरे सुलूक को जायज़ समझते थे। आलम यह था कि फ़सल से पहले फलों की क़ीमत लगाकर अपनी ही क़ीमत से सारे फल खरीद लिए जाते थे और बाज़ार के भाव से कोई मतलब नहीं था। नाजाएज़ तरीक़े से जिज़या तलब किया जाता था हद यह है कि अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान ने राहगीरों तक से जिज़या (टैक्स)

इमाम जाफ़र सादिक़[अ0] की शहादत पर ख़ास आर्टिकिल

वसूल कर लिया था और फिर आर्ट और फ़न और किताबत वग़ैरा पर भी टैक्स लगाए जा रहे थे। उधर अमीरे शाम ने सासानी हुकूमत के तरीक़े को ज़िंदा करके नौरोज़ के दिन हदिया व तोहफ़ा लेना शुरू कर दिया था और एक साल के तोहफ़े में एक करोड़ 30 लाख दिरहम वसूल कर लिए थे।

हरात के दहक़ान ख़ुरासानी ने असद बिन अब्दुल्लाह क़सरी की ख़िदमत में 119 हिजरी में 10 लाख दिरहम पेश किए। 125 हिजरी में हरात के वाली ने दहक़ान के साथ आकर सोने चांदी के अलग-अलग बरतन और रेशम के तरह-तरह के कपड़े नज़्र किए।

इमाम सादिक़[अ॰] का दौर

इमाम सादिक़[अ॰] ने 83 हिजरी से 133 हिजरी तक पचास साल बनी उमैय्या की हुकूमत में गुज़ारे और इस बीच उनके ज़ुल्म व सितम अवाम के साथ उनके बर्ताव और आख़िरत से बेख़ौफ़ होकर किए जाने वाले सारे आमाल का अच्छी तरह से जायज़ा लिया, हर आन किसी चाहने वाले के क़त्ल और किसी दोस्त की शहरबदरी की ख़बरें कानों से टकरा रही थीं। 122 हिजरी में यह ख़बर भी मिली कि हज़रत ज़ैद को क़त्ल कर दिया गया है और उनका जिस्म सूली पर लटका दिया गया है फिर यह भी देखा कि पांच साल तक उनका बदन दार पर रहा और उसके बाद उतार कर जला दिया गया फिर जनाबे यहया बिन ज़ैद के क़त्ल का मंज़र सामने आया फिर दादा और वालिद की ज़हरे दग़ा से शहादत देखी और आए दिन एक नई ख़बर एक नया सानेहा कानों से टकराता रहा।

ज़ुल्म से मुक़ाबला

यह बात सभी मानते हैं कि ज़ुल्म एक बुराई और अदल और इंसाफ़ एक अच्छाई है। इस्लाम ने अदल के क़ियाम के लिए बेपनाह एहतेमाम किया है और इस सिलसिले में किसी नुक़्ते को अछूता नहीं छोड़ा है। इमाम सादिक़[अ॰] ने ज़ुल्म की मुमानिअत ज़ालिमीन की मदद से इंकार और उनसे दूरी पर शिद्दत से ज़ोर दिया है और इस तरह पूरी कोशिश की है कि ज़ुल्म और ज़ालिमों का ख़ातिमा हो जाए और इन्साफ़ का बोल-बाला हो जाए। अमीरुल मोमिनीन[अ॰] का इरशाद था कि ''कांटों पर लेट कर रात बसर कर लेना और ज़ंजीरों में जकड़ कर खींचा जाना ज़ालिम होने से कहीं ज़्यादा बेहतर है।'' ''अगर मुझे सातों अक़लीम का बादशाह बना दिया जाए और यह मुतालेबा हो कि एक चूंटी पर ज़ुल्म करके उसके मुंह से जौ का दाना छीन लूं तो यह मेरे बस से बाहर है।'' अहलेबैत[अ॰] का यही मिशन था जो ज़ालिमीन की नज़रों में खटक रहा था और वह हर

वक़्त इन हज़रात पर ज़ुल्म करते रहते थे। तलवारें खिंची रहीं लेकिन यह हज़रात ज़ालिमों की तरफ़ न खिंच सके। क़ुरआन पर अमल और ज़ालिमों का बाइकाट करते रहे जिसका मक़सद सिर्फ़ यह था कि उम्मत की आबरू महफ़ूज़ रहे और उसकी इज़्ज़त को ठेस न लगने पाए। सफ़वान का बयान है कि मैं इमाम मूसा काज़िम[अ॰] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया कि तुम्हारी सारी बातें ठीक हैं लेकिन एक बात ठीक नहीं है मैंने घबरा कर कहा कि हुज़ूर मेरी जान क़ुर्बान! वह क्या है? फ़रमाया तुम हारून को ऊंट किराये पर देते हो। मैंने कहा कि हुज़ूर किसी ग़लत काम के लिए नहीं देता हूं बल्कि सिर्फ़ मक्के के सफ़र के लिए देता हूं वह भी खुद नहीं जाता ग़ुलामों को भेज देता हूं। आपने कहा कि बहेरहाल तुम्हारी यह ख़्वाहिश तो ज़रूर होती है कि यह ज़िंदा व सलामत वापस आ जाएं ताकि तम्हें किराया मिल जाए। कहा कि यह तो बहेरहाल होता है। फ़रमाया जो उनकी बक़ा का ख़्वाहिशमंद होता है वह उन्हीं में से होता है और जो उनमें से होता है वह जहन्नमी होता है। मैंने फ़ौरन सारे ऊंट बेच डाले ताकि इस मुसीबत से निजात ही मिल जाए। यह था इमाम सादिक़[अ॰] का जिहाद ज़ुल्म की मुख़ालेफ़त और उसकी बुराईयों के ऐलान के सिलसिले में आपने उम्मत को साफ़ लफ़्ज़ों में बता दिया था कि दुनिया का हर फ़साद और हर बग़ावत ज़ुल्म की पैदावार है। क़हेत, ख़ुश्क साली, भूख, ख़ौफ़, बला यह सारे हादसे बंदों के आपसी ज़ुल्म से पैदा होते हैं।

आपने ज़ुल्म की मुमानिअत के साथ ज़ालिम से क़रीब होने और उसकी नौकरी करने को भी हराम क़रार दे दिया कि उसमें हक़ की तबाही और बातिल के रिवाज का अंदेशा है।

ख़लीफ़ा का किरदार

■ ज़ैनब बुतूल

हज़रत अली[अ०] की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनके भाई अक़ील मेहमान बन कर कूफ़े आए। गर्मी का मौसम था। रात के वक़्त हज़रत अली[अ०] और जनाबे अक़ील छत पर बैठे बातचीत कर रहे थे। खाने का वक़्त हुआ तो उन्हें बड़ा सादा और फ़क़ीराना दस्तरख़्वान नज़र आया। अक़ील ख़ुद को दरबारे ख़िलाफ़त का मेहमान समझ रहे थे और उन्हें उम्मीद थी कि दस्तरख़्वान तरह-तरह की उम्दा ग़िज़ाओं से सजा हुआ होगा। उन्होंने बड़े ताज्जुब से दस्तरख़्वान की तरफ़ देखते हुए पूछा, "खाने के लिए बस यही है?"

"क्या यह ख़ुदा की नेमत नहीं है? मैं तो इन नेमतों के लिए परवरदिगार का लाख-लाख शुक्र अदा करता हूं।" हज़रत अली[अ०] ने जवाब दिया।

"ठीक यही है कि जल्दी से अपनी ज़रूरत कह दूं और यहां से फ़ौरन चला जाऊं। दरअसल मैं बहुत क़र्ज़दार हो गया हूं। आप हुक्म दे दीजिए कि बैतुल माल से मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया जाए। इसके अलावा भी आप मेरी जो भी मदद कर सकते हों वह भी कर दें ताकि मुझे परेशानियों से छुटकारा मिल जाए और मैं सुकून से घर वापस चला जाऊं।"

"आपके ऊपर कितना क़र्ज़ है?" अली[अ०] ने पूछा।

"एक लाख दिरहम।" अक़ील ने जवाब दिया।

"एक लाख दिरहम! यह तो बहुत बड़ी रक़म है। मेरे भाई! बड़े अफ़सोस के साथ मैं यह कहने पर मजबूर हूं कि मेरे पास इतनी बड़ी रक़म बिल्कुल नहीं है कि मैं आपका क़र्ज़ अदा कर सकूं लेकिन कुछ दिन सब्र कीजिए। तंख़्वाह मिलने का वक़्त क़रीब है। मैं तंख़्वाह से अपना हिस्सा आपको दे दूंगा। भाई के ऊपर भाई का हक़ होता है उसे अदा करने में मैं ज़रा भी पीछे नहीं हटूंगा। अगर अपने घर वालों के ख़र्चों की ज़िम्मेदारी न होती तो मैं अपनी पूरी तंख़्वाह आपको दे देता और अपने लिए एक पैसा भी नहीं निकालता।"

"यह आप क्या कह रहे हैं? मैं आपकी तंख़्वाह मिलने का इंतिज़ार करूं? आख़िर आप इस तरह की बातें क्यों कर रहे हैं? मुल्क का सारा ख़ज़ाना और बैतुल माल आपके हाथ में है और मुझसे कह रहे हैं कि मैं तंख़्वाह मिलने तक आपका इंतिज़ार करता रहूं? फिर यह बताईए कि आपको कितनी तंख़्वाह मिलती है? मैंने माना कि आप अपनी पूरी तंख़्वाह भी मुझे दे दें तो भी उससे मेरा काम बनने वाला नहीं है।" अक़ील कुछ नाराज़ हो गए थे।

"मुझे आपकी इस सोच पर ताज्जुब है। हुकूमत के ख़ज़ाने में रुपया है कि नहीं इससे मुझे या आपको क्या सरोकार? हमारी और आपकी भी वही हैसियत है जो दूसरे मुसलमान भाईयों की है। यह सच है कि आप मेरे भाई हैं इसलिए मेरे ऊपर यह ज़िम्मेदारी आती है कि आपकी जितनी हो सके उतनी मदद करूं। मगर मदद हुकूमत के ख़ज़ाने से नहीं बल्कि ज़ाती पैसे से की जाती है।"

फिर भी अक़ील ने बार-बार हज़रत अली[अ०] पर ज़ोर दिया कि बैतुल माल का दरवाज़ा खोल कर जितनी रक़म वह चाहते हैं वह उन्हें दे दी जाए ताकि वह लोगों का क़र्ज़ अदा करके इत्मिनान की सांस ले सकें।

जिस जगह बैठे हुए यह बातचीत हो रही थी वहां से कूफ़े का बाज़ार बिल्कुल साफ़ नज़र आ रहा था। इसके अलावा ताजिरों के ज़ाती ख़ज़ानों और रुपये-पैसे के संदूक़ भी वहां से बिल्कुल साफ़ दिखाई दे रहे थे।

हज़रत अली[अ०] ने अक़ील से कहा, "आप बार-बार कहे जा रहे हैं और जो कुछ मैं कह रहा हूं उस पर कोई ध्यान नहीं देते। अच्छा अगर आप नहीं मानते तो फिर मैं एक तरकीब बताता हूं, इस तरह सारा क़र्ज़ भी अदा हो जाएगा और उसके बाद भी अच्छी-ख़ासी रक़म ज़ाती ख़र्चों के लिए बच जाएगी।"

"या अली[अ०]! वह कौन सी तरकीब है?"

"वह देखिए! नीचे बाज़ार में बहुत से संदूक़ पड़े हुए हैं। रात का वक़्त है। इस वक़्त बाज़ार में बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है। आप यहां से नीचे उतर जाईए और संदूक़ों का ताला तोड़कर जितनी दौलत निकालना चाहें निकाल लीजिए।"

"यह संदूक़ किसके हैं?" अक़ील ने पूछा।

"यह मेहनत मज़दूरी करने वाले ताजिरों के हैं। यह लोग दिन भर अपना माल बेचते हैं और अपना नग़द पैसा इन संदूक़ों में बंद करके घर चले जाते हैं।" अली[अ०] ने कहा।

"बड़े ताअज्जुब की बात है। आप मुझे यह मशवेरा दे रहे हैं कि लोगों का संदूक़ तोड़ कर उन ग़रीबों का माल ले लूं जो दिन भर मेहनत मज़दूरी और हज़ार परेशानियों के बाद कमाते हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा करते हुए अपनी सारी पूंजी इन संदूक़ों में छोड़ कर चले जाते हैं। क्या आपके कहने का मतलब यह है कि मैं उनकी पीठ पीछे उनकी जमा पूंजी लेकर चला जाऊं?" अक़ील को बड़ा ताज्जुब हो रहा था।

"अच्छा! तो आप मुझे ऐसा मशवेरा क्यों दे रहे हैं और इस बात पर इतना ज़ोर क्यों दे रहे हैं कि मैं मुसलमानों के बैतुल माल का ताला खोल कर उनकी रक़म आपको दे दूं? आप ख़ुद ही बताइए कि यह बैतुल माल किसका है? दरअसल यह उन लोगों का माल है जो अपने घरों में आराम से सो रहे हैं। आपको अच्छी तरह से मालूम है कि बैतुल माल मेरी ज़ाती मिल्कियत नहीं है। जिस तरह रात के संनाटे में ताजिरों के संदूक़ का ताला तोड़ना एक नाजाएज़ काम है उसी तरह ज़ाती काम के लिए बैतुल माल का दरवाज़ा खोलना भी जुर्म है। अच्छा मैं आपको एक दूसरी तरकीब बताता हूं...अगर पसंद आ जाए तो उससे भी आप की ज़रूरत पूरी हो सकती है।"

"वह क्या है?" अक़ील ने पूछा।

"अगर आपको ठीक लगे तो आप अपनी तलवार निकालिए और मैं भी अपनी तलवार उठाता हूं। कूफ़े के पास ही एक पुराना शहर है जिसका नाम हैयरा है। वहां दौलतमंद सौदागरों और ताजिरों के बहुत से घर हैं। रात के संनाटे में हम दोनों भाई हैयरा चलते हैं और इन सौदागरों में से किसी एक के घर डाका डाल कर बहुत सारी दौलत उठा लाते हैं।"

"ऐ भाई! मैं यहां चोरी करने या डाका डालने नहीं आया हूं कि आप मुझे इस तरह की तरकीबें बता रहे हैं। मैं तो यह कह रहा हूं कि मुल्क के ख़ज़ाने से जो इस वक़्त आपके क़ब्ज़े में हैं, मुझे इतनी रक़म दे दीजिए कि मैं अपना क़र्ज़ उतार सकूं।" अक़ील ने कहा।

"अगर हम दोनों आदमी मिलकर किसी एक आदमी का माल चुरा लें तो यह इससे कहीं अच्छा है कि सारे मुसलमानों के माल से चोरी कर लें। याद रखिए! बैतुल माल से चोरी करना चोरी की सबसे बुरी क़िस्म है।"

बच्चों की ग़िज़ा ख़ुद तैयार करें

■ महजबीन नक़वी

इंसान की ज़िंदगी का ख़ूबसूरत ज़माना बचपन है, बचपन का ध्यान आते ही ज़ेहन में ऐसे दौर की तस्वीर सामने आती है जिसमें बच्चे या तो खेल कूद में मगन होते हैं या फिर किताबों का बस्ता कंधे से लटकाए स्कूल की तरफ़ रवां-दवां होते हैं।

बुर्ज़ुगों को कहते सुना है कि बच्चों को खिलाओ सोने का निवाला और देखो शेर की निगाह से। आज कल माओं को अपने बच्चों से यह आम शिकायत है कि उनके बच्चे खाना नहीं खाते, अगर ज़बरदस्ती खाने के लिए बिठाओ तो कहते हैं कि भूख नहीं है। इसकी अहम वजह गली मोहल्लों में जगह-जगह ख़ुली हुई दुकानें हैं जहां से बच्चे सारा दिन थोड़ी-थोड़ी देर पर पैसे मांग कर टाफ़ियां, सुपारियां, चाकलेट, पान मसाले, चिविंगम और आईसक्रीम वग़ैरा लेकर पेट भरते रहते हैं। नतीजा यह निकलता है कि इन अल्लम-ग़ल्लम चीज़ों के खाने से बच्चों की भूख मर जाती है। फिर वह खाना भी नहीं खाते और उनके मेदे भी ख़राब हो जाते हैं।

ज़रूरी है कि माएं तय किए हुए वक़्त पर बच्चों को खाना खिलाएं और बिस्किट टाफ़ियां वग़ैरा कभी-कभार खाने को दें, लेकिन यह चीज़ें मेयारी होनी चाहिए। कुछ माँ-बाप फ़ैशन में बच्चों के लिए टाफ़ियों वग़ैरा के पेकेट घरों में लाकर रख देते हैं और बच्चे सारा-सारा दिन उन्हीं चीज़ों से अपना पेट भरते रहते हैं। इस के बाद बच्चों की खाना न खाने की शिकायत करना सिर्फ़ लफ़्ज़ी जमा ख़र्च ही महसूस होता है। इसलिए मां-बाप को चाहिए कि बच्चों को खाने और नाश्ते के बीच मुनासिब गैप से अलग-अलग चीज़ें दें और इस बात का ख़याल रखें कि खाना खाते वक़्त उनका मेदा ख़ाली हो और वह शौक़ के साथ खाना खाएं।

पहले ज़माने में माएं बच्चों को घर में पकाई और बनाई गई चीज़ें देती थीं। उन चीज़ों में सूजी का जमा हुआ हलवा, नमकपारे, मैदे की मीठी टिकियां, बिस्किट और चने के मुरमुरे वग़ैरा होते थे। बच्चे बड़े शौक़ से इन चीज़ों को खाते थे क्योंकि उनसे उनका पेट भर जाता था। माएं वक़्त के लेहाज़ से यह चीज़ें बच्चों को देती थीं जैसे कि सुबह दस बजे और शाम चार बजे के क़रीब। ताकि खाने के वक़्तों में बच्चे फ़ालतू चीज़ें न खा सकें।

आज कल बाज़ारों की बनी हुई मिलावटी चीज़ों का रिवाज ज़्यादा है जिसकी वजह से बच्चों की सेहत ख़राब होती है और मां-बाप उनके भूख न लगने और खाना न खाने की वजह से परेशान होते हैं। ख़ास तौर पर सुपारी वग़ैरा खाना सख़्त नुक़्सानदेह है क्योंकि छलियाँ सांस की नाली में फंस कर कोई बड़ी मुश्किल बन सकती है। इसी तरह स्कूल लंच के लिए भी घर की पकी हुई चीज़ें बच्चों को दें। बच्चा रंग बिरंगे रैपर्ज़ में लिपटे, और नुक़्सानदेह चीज़ों के रंगारंग एडवर्टाइज़मेंट देखकर मां-बाप से उन्हीं के लिए ज़िद करता है। खाने की चीज़ों में गिफ़्ट वग़ैरा निकलते हैं उसे अलग लालच देते हैं।

माँ-बाप को चाहिए कि बच्चों को पैसे न दें बल्कि ख़ुद और घर की बनी हुई चीज़ें खिलाएं। बेशक आप माओं को फ़ुरसत नहीं मिलती लेकिन अपने मासूम फूलों की ख़ातिर और उनकी सेहत की ख़ातिर उन्हें थोड़ा सा वक़्त निकालना होगा और खाने के वक़्तों का ख़्याल भी रखना होगा ताकि उन्हें अल्लम-ग़ल्लम चीज़ों के बजाए अपने हाथ से बनी हुई चीज़ें खिलाएं। आज के बच्चे कल अपनी क़ौम का फ़्यूचर बनाने वाले हैं इसलिए उनकी मुनासिब और बेहतरीन अंदाज़ से परवरिश करना बहुत ज़रूरी है।

बेटियां

■ ततहीर ज़ेहरा
मुज़फ़्फ़र नगर

समाज या सोसाइटी में जब किसी मां-बाप के घर में बेटा पैदा होता है तो हर एक की ज़बान पर मुबारक-मुबारक और सलामत-सलामत ही होता है और अपनी-अपनी हैसियत से मिठाईयां बांटी जाती हैं, ख़ुशियां मनाई जाती हैं और पूरे घर में जश्न का सा माहौल होता है। लेकिन जब किसी के यहां बेटी पैदा होती है तो मां-बाप तो खुदावंदे करीम की तरफ़ से रहमत पाकर खुश हो जाते हैं। लेकिन समाजी ऐतबार से दोस्तों और रिश्तेदारों की तरफ़ से वह गर्मजोशी और मुबारकबाद के मीठे जुमले सुनने में नहीं आते जो लड़का पैदा होने पर सुनने को मिलते थे। बहरहाल खुदावंदे आलम इस तरह इंसानी नस्ल को आगे बढ़ाने और बाक़ी रखने के लिए जहां और जिस तरह चाहता है बेटी पैदा करता है क्योंकि अपनी हिकमत और मसलहेत को वह खुद ही जानता है।

समाजी ऐतबार से लड़के के बाप के ज़ेहन पर उसके फ़्यूचर के लिहाज़ से दबाव कम होता है। लेकिन बेटी की परवरिश, उसकी एजूकेशन और उसकी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के एतेबार से मां-बाप ज़्यादा फ़िक्रमंद रहते हैं। शादी के बाद बेटी के ससुराल वालों की तरफ़ से किसी मुश्किल का सामना और हर वक़्त समधियाने वालों के कंट्रोल मे रहने की दुवाएं करना भी एक बेटी के बाप की नींदें उड़ा देता है। त्योहारों पर लेन-देन करना ताकि बेटी पर उसकी ससुराल वालों की तरफ़ से नर्म बर्ताव रहे, जैसे बहुत से मसले और चैलेंज आते हैं जिनको लड़की वाले क़ुबूल करते हैं और रिश्तेदारी निभाने की हर कोशिश करते रहते हैं। बेटी वालों की दर्द भरी दास्तान बहुत लम्बी हैं। लकिन उसे छोड़ते हुए अब हमें ज़िक्र करना है कि खुदावंदे करीम की उन अज़ीम इनायतों का जो उसने बेटी पर की हैं।

याद रखिए! औरत जब दुनिया में आती है तो बेटी की शक्ल में पैदा होती है और रहमत कही जाती है यानि वह पहली शक्ल में किसी की बेटी है और दूसरी शक्ल में किसी की बीवी। खुदा की इनायत से वही बेटी किसी औलाद की मां भी है। लड़की की पैदाइश के वक़्त वह बेटी की शक्ल में रहमत कहलाई, किसी शौहर की बीवी बनी तो अपने शौहर की दो रकअत नमाज़ को कुंवारे की नमाज़ के मुक़ाबले में सत्तर रकअत के सवाब के बराबर कर दिया और जब यह मां

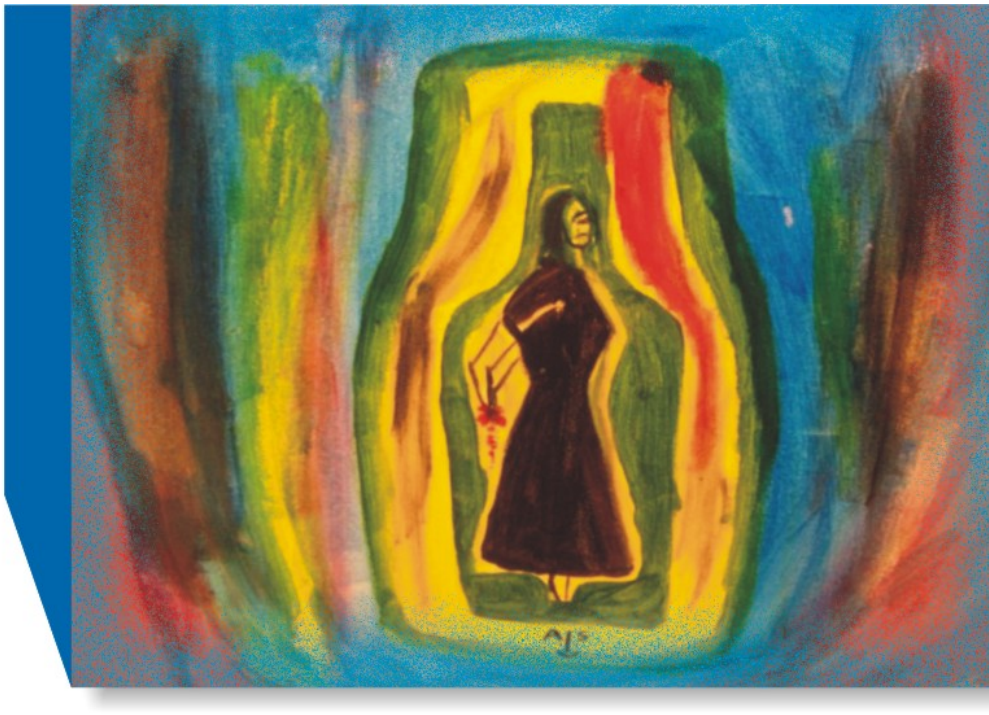

She बनी तो इसकी औलाद की जन्नत को मां के क़दमों के नीचे रख दिया गया। मां की मुहब्बत दुनिया में मिसाल है। मां किसी भी दीन व अक़ीदे की हो, अमीर हो ग़रीब हो लेकिन औलाद पर मां-बाप का एहतेराम और ख़िदमत फ़र्ज़ है। सिर्फ़ इलाही अहकाम और शरीअत में तो मां-बाप को हक़ नहीं है कि वह औलाद पर अपना हक़ जताने लगें लेकिन परवरदिगार की इताअत के अलावा कोई भी औलाद बिना मां-बाप को खुश किए अपने ख़ालिक़ को राज़ी नहीं कर सकती।

अब ज़रा कुछ बातें समाजी ऐतबार से औरत की अक़्ल व समझ और बेटी की दीनदारी पर कर लें। दीनी अहकाम और वाजिब या हराम वग़ैरा अक़्ल और समझ की शर्त के साथ लागू होते हैं।

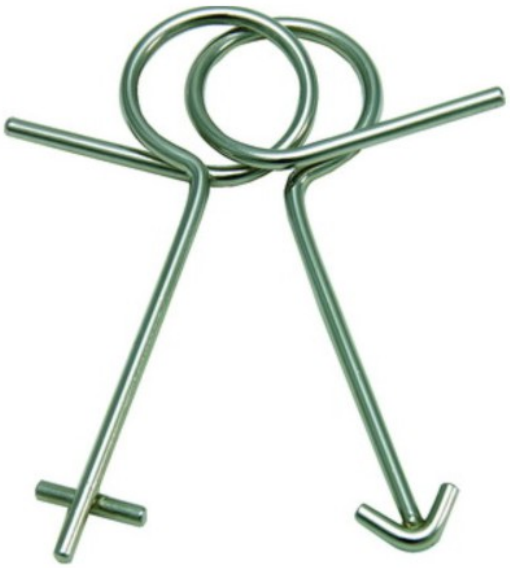

पागलों और दीवानों से दीन, शरीअत के अहकाम पर अमल करने की डिमांड नहीं करता है बल्कि खुदा की इताअत और दीनी अहकाम पर अमल की डिमांड अक़्ल व समझ आ जाने के बाद ही की जाती है। लड़का 15 साल और लड़की 9 साल में इस क़ाबिल होते हैं कि ख़ुदावंदे आलम इनसे अपनी इताअत और अहकाम पर अमल करने को कहे। लड़का 15 साल का हो जाएगा तब इबादत वाजिब होगी लेकिन लड़की को 9 साल की उम्र से ही खुदा ने अपनी बारगाह में इबादत के लिए बुला लिया है। जबकि 9 साल के बेटे पर छूट है कि उसको इबादत की तरफ़ लाया जाए और उसको सिखाया जाए लेकिन वाजिब 6 साल बाद ही होगी। यानि बेटी 9 साल की उम्र में ही अपने ख़ालिक़ की बारगाह में इबादत के शरफ़ से नवाज़ी जाएगी और बेटा इसके 6 साल बाद।

समाजी ऐतबार से बेटी की पैदाइश पर जज़्बात व एहसासात चाहे कुछ भी हों लेकिन खुदा ने नेमत यानी बेटे से पहले हसनात यानी लड़की को इबादत के लिए बुलाकर उसे शरफ़ बख़्शा है। यानी बेटे पर हज 6 साल बाद वाजिब होगा लेकिन अगर शर्तें जमा हो जाएं तो लड़की पर हज नमाज़ की तरह 9 साल में ही वाजिब होगा। अब 9 साल की उम्र में बेटे ने हज करना चाहा तो भी वाजिब नहीं हुआ लेकिन बेटी 9 साल की उम्र में शर्तें पूरी होने पर हज का फ़रीज़ा अदा करने का शरफ़ हासिल कर रही है। बेटियां हसनात हैं जिन पर सवाब होगा। बेटे नेमत हैं जिनके बारे में हिसाब लिया जाएगा। बेटों के लिए नहीं बल्कि बेटी के लिए रसूले अकरम[स०] ने फ़रमाया है, ''जिसने एक बेटी की परवरिश (शरीअत के क़ानून के मुताबिक की हो और उसे दीन व शरीअत से बाख़बर किया हो), वह बेटी क़यामत में जहन्नम और अपने मां-बाप के बीच एक पर्दा बन जाएगी।'' फिर फ़रमाया, ''दो बेटियां हों और उनकी परवरिश की जाए तो क़यामत में अपने मां-बाप और जहन्नुम के बीच दो पर्दे बनकर वह बेटियां खड़ी हो जाएंगी। तीन बेटियों की परवरिश पर रसूले अकरम[स०] ने फ़रमाया, ''ऐसा शख़्स जन्नत में मेरा पड़ोसी होगा।'' यह बात बेटों के लिए नहीं कही गई है बल्कि सिर्फ़ बेटियों के लिए कही गई है। औलाद में जो प्यार बेटे करते हैं वह अपनी जगह लेकिन बेटियां जितना प्यार करती हैं वह कहीं ज़्यादा होता है। स्कॉलर्स कहते हैं कि एक बेटा तालीम हासिल करता है तो वह एक आदमी की तालीम होती है लेकिन जब एक बेटी तालीम के मैदान में आगे बढ़ती है तो एक पूरे ख़ानदान और समाज की तालीम के रास्ते खुल जाते हैं। पहला मदरसा और पहला स्कूल बाप की गोद को नहीं कहा गया है बल्कि मां की गोद को कहा गया है। आमतौर से कहा जाता है कि मादरी ज़बान कौन-सी है, यह

नहीं कहा जाता कि पिदरी ज़बान कौन-सी है।

बच्चों की परवरिश में मां जिस सब्र, हौसले और क़ुर्बानी का मुज़ाहिरा करती है उतने सब्र व हौसले की गुंजाईश शायद बाप के अंदर होती ही नहीं है। अगर इस बात का सुबूत चाहिए हो तो किसी भी मज़हब या धर्म के मर्द से पूछ लीजिए कि तुम्हारी परवरिश में सबसे ज़्यादा ज़ेहमत, परेशानी और क़ुर्बानियां किसने दी हैं, उसका जवाब यही होगा कि मां ने। बच्चों की नर्सरी क्लॉसेस और बेसिक क्लॉसेस की टीचिंग के लिए मर्द टीचर्स के बजाए फ़िमेल टीचर्स ही रखी जाती हैं और वह इसलिए कि जितने सब्र व हौसले और सिखाने-बताने में फ़िमेल टीचर्स माहिर होती हैं उतना मर्द टीचर नहीं। यह सारी बातें अपनी जगह लेकिन सबसे अहम बात यह है कि जनाबे आदम[अ॰] को छोड़कर दुनिया में जितने भी बड़े-बड़े लोग गुज़रे हैं चाहे वह मासूम नबी हों या इमाम[अ॰] या ग़ैर मासूम पाकीज़ा किरदार लोग और दूसरे नेक बंदे, वह सब अपनी-अपनी माओं की मेहनतों और मुहब्बतों के एहसानमंद रहे हैं।

लेकिन अफ़सोस! आज इसी की ख़िदमतों और एहसानों का जवाब इस तरह दिया जा रहा है कि डाक्टरों को दौलत की लालच देकर पैदा होने से पहले ही यह पता लगाया लिया जाता है कि बेटा है या बेटी। अगर बेटी है तो खुदा के दुश्मन उसे पैदा होने से पहले ही वापस भेज देते हैं। इस काम में ज़ालिम बाप डाक्टर के साथ कत्ल में बराबर का शरीक होता है। मर्द डाक्टर यह बात भूल जाते हैं कि अगर उसकी मां को पैदा होने से पहले ही क़त्ल कर दिया गया होता तो आज यह डाक्टर पैदा कहां से होता। आज हिन्दुस्तान की हुकूमत की पूरी कोशिश है कि लड़कियों को मां के पेट में क़त्ल होने से बचाया जाए लेकिन ज़िंदगी बचाने वाले डाक्टर यह जुर्म करते ही रहते हैं। उस पर सितम यह है कि मां-बाप ही होने वाली बेटी की ज़िंदगी के दुश्मन बनकर डाक्टर के ज़रिए यह जुर्म कराते हैं। यह बात भी याद रखने की है कि बेटी या बीवी या मां की एहमियत व अज़मत अपनी जगह लेकिन ज़रूरी शर्त यही है कि वह दीन, शरीअत और अहकाम से बाख़बर और उन पर अमल करने वाली हो। दूसरी सूरत यह है कि वह किसी और दीन-धर्म को मानती हो, तब भी अगर वह साफ़-सुथरे और अच्छे अख़्लाक़ व उसूल वाली होगी तब भी वह अपने समाज या सोसाइटी को इंसाफ़ पसंद और अच्छे किरदार के लोग दे सकती है। और अगर वह सिर्फ़ नाम की मुसलमान हो और उसको दीन व शरीअत और अहकाम की समझ न हो और उसकी ज़िंदगी क़ुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ न हो तो ऐसी बेटी या बीवी या मां की तालीम व तरबियत से किसी अच्छे किरदार वाली औलाद की उम्मीद रखना बेकार है। जन्नत उसी मां के क़दमों के नीचे होगी जिसका किरदार क़ुरआन व सुन्नत से मिलता होगा। समाजी ऐतबार से जब तक बेटे कमसिन होते हैं मां-बाप के असर में रहते हैं लेकिन बेटियां तो मां-बाप के ही कंट्रोल में रहती हैं। मां-बाप ही इनके सारे फ़ैसले करते हैं, इनके नफ़ा-नुक़सान के बारे में भी मां-बाप ही सोचते हैं। जब यह हालत है तो बेटी की ज़िंदगी का रुख़ तय करना तो मां-बाप के हाथों में हुआ। अब जैसा वह चाहेंगे बेटी की ज़िंदगी उन रास्तों पर चल पड़ेगी। इसलिए अगर मां-बाप दोनों शरीअत से बाख़बर और दीनी अहकाम पर अमल करने वाले हैं तो औलाद के दीनदार होने की उम्मीद की जा सकती है। अगर मां-बाप ग़ैर मोमिन या ग़ैर मुसलमान हों तो भी अगर वह अख़लाक़ी ऐतबार से अच्छे किरदार के मालिक हैं तो भी इनकी तालीम व तरबियत से अमन पसंद, इल्म दोस्त और लोग समाज को मिल जाएंगे।

याद रखिए! दीनदार सोसाइटी की तैयारी में उलमा और स्कॉलर्स की ज़ेहमतें और ख़िदमतें सबसे अहम रोल रखती हैं। लेकिन बुनियादी तौर से पाकीज़ा किरदार दीनदार मां की आग़ोश की तरबियत से गहरा रिश्ता है किरदारसाज़ी का।

मौहब्बत

■ वसी शाह

मैं शायर हूँ तो अक्सर लोग मुझ से पूछते हैं
इस हसीं असरार के बारे में
बताएं तो भला क्या है... ?!
मौहब्बत आख़ेरश क्या है... ?!
वसी मैं हंसके कहता हूँ
किसी प्यासे को अपने हिस्से का पानी पिलाना भी मौहब्बत है।
भंवर में डूबते को साहिलों तक लेके जाना भी मौहब्बत है।
किसी के वास्ते नन्हीं सी कुरबानी, मौहब्बत है।
कहीं हम, राज़ सारे खोल सकते हों मगर फिर भी
किसी की बेबसी को देखकर ख़ामोश रह जाना मौहब्बत है।
हो दिल में दर्द, वीरानी मगर फिर भी
किसी के वास्ते जबरन ही सही, होंटों पर हंसी लाना
ज़बरदस्ती ही मुस्काना मौहब्बत है।
कहीं बारिश में सहमे, भीगते बिल्ली के बच्चे को
ज़रा सी देर को घर लेके आना भी मौहब्बत है।
कोई चिड़िया जो कमरे में भटकती आन निकली हो
तो उस चिड़िया को
पंखे बंद करके रास्ता बाहर का दिखलाना मौहब्बत है।
किसी के ज़ख़्म सहलाना
किसी रोते हुए के दिल को बहलाना मौहब्बत है
कि मीठा बोल, मीठी बात, मीठे लफ़्ज़, सब क्या है ?
मौहब्बत है...।
मौहब्बत एक ही, बस एक ही इंसान की ख़ातिर मगन रहना
हमा वक़्त उसकी बातों, ख़ुश्बुओं में डूबना कब है ?
मौहब्ब्त सिर्फ़ उसकी ज़ुल्फ़ के बल खोलना कब है ?
मौहब्ब्त के हज़ारों रंग, लाखों इस्तेआरे हैं।
किसी भी रंग में हो यह, मुझे अपना बनाती है
यह मेरे दिल को भाती है...।

तरबियत में एहतेराम का रोल

■ गुलज़ार फ़ातिमा

तरबियत इंसान की ज़िंदगी से जुड़ा हुआ एक अहम टॉपिक है। तरबियत चाहे अपनी हो या बच्चों की, इसके अलग-अलग तरीक़े हैं, अलग-अलग ज़रूरतें हैं जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। पिछले आर्टिकिल में आइडियल और मुहब्बत का तफ़सीली तज़किरा हुआ था। तरबियत के सिलसिले की तीसरी कड़ी खुद इंसान की शख़्सियत से जुड़ी हुई है, किसी की शख़्सियत में निखार लाने के लिए उसका एहतेराम बहुत ज़रूरी है। इस्लाम ने तरबियत में इंसान की बुर्ज़ुगी को एक ख़ास मक़ाम दिया है ख़ुदा ने क़ुरआन में सूरए इसरा की आयत न. 70 में फ़रमाया है, ''हमने इंसान को करामत व इज़्ज़त अता की।'' अगर इंसान को अपनी इज़्ज़ते नफ़्स और करामत जो कि ख़ुदा की तरफ़ से दिया गया तोहफ़ा है, का अंदाज़ा हो जाए तो फिर ऐसे इंसान की तरबियत दूसरों को नहीं करनी पड़ती बल्कि वह खुद अपनी तरबियत कर लेता है। यह सोच कर कि कहीं उसकी इज़्ज़त पर धब्बा न आ जाए, उसकी तरफ़ लोगों की उंगलियां न उठने लगें, इसलिए वह ख़ुदसाज़ी की मंज़िलों को तय करता हुआ अपनी हक़ीक़तों को पा लेता है। अगर इंसान अपने बच्चों का एहतेराम न करे तो उनके अंदर की सलाहियतें और ख़ूबियां अंदर ही अंदर दम तोड़ देती हैं। इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों को सिलेक्शन का हक़ दिया जाए। उन पर ज़बरदस्ती न की जाए क्योंकि यह सारी चीज़ें उन पर बहुत बुरे असर डालती हैं जिसमें से एक बुरा असर तो यह है कि जब यही बच्चा ज़रा बड़ा होता है तो कहना नहीं मानता और फ़रमाबरदारी नहीं करता। अगर हम यह चाहते हैं कि हमारे बच्चों की शख़्सियत बैलेंस्ड हो तो इसके लिए ज़रूरी है कि उनका एहतेराम किया जाए। अब सवाल यह है कि उनका एहतेराम कैसे किया जाए?इस्लाम ने इस सवाल का बहुत ही तफ़सील से जवाब दिया है अलग-अलग रास्ते बताए हैं।

1- अच्छा नाम

नाम इंसान की पहचान है। उसकी शख़्सियत का एक हिस्सा है जो उससे कभी अलग नहीं होता यहां तक कि इंसान की मौत के बाद भी उसका नाम बाक़ी रहता है। इसलिए पैग़म्बरे अकरम[स०] ने अपनी वसियत में हज़रत अली[अ०] से फ़रमाया, ''ऐ अली! बच्चे का अपने बाप के ऊपर एक हक़ यह है कि उसका अच्छा नाम रखे और उसकी अच्छी तरबियत करे।''

2- बच्चों का नाम एहतेराम से लेना

अकसर देखने में आता है कि लोग बच्चों का नाम सही तरीक़े से नहीं लेते उसे तोड़-मरोड़ कर पुकारते हैं जबकि यह बहुत ही ग़लत बात है।

3- बच्चों को सलाम करना

रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया, ''पांच कामों को मैं मरते दम तक नहीं भूलूंगा जिनमें से एक बच्चों को सलाम करना है।'' जबकि हमारे समाज में बच्चों से यह उम्मीद की जाती है कि वह बढ़ कर बड़ों को सलाम करें और अगर किसी वजह से बच्चे ने सलाम नहीं किया तो पैरेंट्स के लिए बहुत ही बेइज़्ज़ती की बात होती है। वह बच्चों पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हैं। दूसरी तरफ जिनको सलाम नहीं किया गया वह बच्चों और उनके पैरेंट्स दोनों को इस बात का एहसास दिलाते हैं कि

उनका बच्चा बेअदब है। कभी-कभी ऐसा भी देखने में आता है कि बच्चों की तरफ़ से सलाम न मिलने पर बड़े निहायत ही मज़ाक़ भरे अंदाज़ में सलाम करते हैं जिसका मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ यह बताना होता है कि तुमको सलाम करना चाहिए था मगर तुमने नहीं किया। बेशक छोटों को बड़ों को सलाम करना अदब की निशानी है और रिवायत में भी मिलता है कि बेहतर है छोटे बड़ों को सलाम करें मगर इसका यह मतलब नहीं हुआ कि बड़ों का छोटों को सलाम करना उनकी शान व मंज़िलत को ख़तरे में डाल देगा बल्कि यह रसूले ख़ुदा[स०] का पसंदीदा काम और सुन्नते नबवी है।

4- मुलाक़ात के वक़्त उनसे हाथ मिलाना और उनका हालचाल पूछना।

5- बच्चों के लिए जगह का इंतेज़ाम

मज़हबी प्रोग्राम में अगर कोई बड़ा पहुंचता है तो बच्चों को उठाकर उसे जगह दी जाती है और बच्चों को किसी यूंही कहीं भी या फिर बाहर चले जाने की हिदायत दी जाती है जबकि यह काम सही नहीं है।

6- किसी भी प्रोग्राम में बच्चों को ख़ास तौर पर दावत देना।

7- लोगों के बीच बच्चे की ख़ूबियों और अच्छाईयों को बयान करना।

8- अगर मेहमानों की मौजूदगी में बच्चों से कोई ग़लती हो जाए तो उन्हें मेहमानों के सामने टोकने या सज़ा देने से परहेज़ करना।

9- बच्चों की बातों को ध्यान से सुनना।

10- उनसे मशवेरा करना, लेकिन उनकी उमर और समझ को ध्यान में रखते हुए।

11- उन पर भरोसा करना।

यह कुछ मिसालें थीं बच्चों के एहतेराम के लिए। इसके अलावा और भी ज़रिए हैं जिनसे

उनका एहतेराम किया जा सकता है लेकिन यह मवारिद अहम हैं।

बच्चों का एहतेराम उनकी शख़्सियत बनाने के लिए ज़रूरी है और अगर इस बात की तरफ़ ध्यान न दिया जाए तो बच्चों में रूहानी और साइकोलॉजिकल बीमारियां घर बना लेती हैं जिससे एक बीमारी जो बहुत ही बुरा असर रखती है वह एहसासे कमतरी है यहां हम कुछ नमूने पेश कर रहे है जिनकी वजह से एक बच्चा ज़ेहनी बीमारी या एहसासे कमतरी का शिकार हो सकता है।

1- एबदार बॉडी पार्टस

जिस्म के किसी भी हिस्से में ऐब होने की दो वजहें हो सकती हैं एक यह कि पैदाइशी तौर पर कोई ऐब हो। दूसरा यह कि बच्चा अपने पैरेंट्स की बेध्यानी या किसी हादसे की वजह से अपने बदन के किसी हिस्से को खो बैठे। ऐसे लोगों का ख़ास ख़्याल रखना चाहिए। रसूले ख़ुदा[स०] ने भी इस बात की ताकीद की है कि परेशानहाल लोगों और कोढ़ी की तरफ़ घूर कर न देखो क्योंकि इससे उन्हें ज़ेहनी तकलीफ़ होती है। जो लोग जिस्मानी ऐतबार से किसी कमी का शिकार होते हैं उन्हें दोहरा दुख उठाना पड़ता है :

1- लोगों की मज़ाक़ उड़ाने वाली निगाह का सामना।

2- ख़ुद भी यह जानते हैं कि वह महरूमी का शिकार हैं और यह एहसास उनके कान्फिडेंस को तोड़ देता है और वह अपने बारे में कोई पॉज़िटिव बात सोच नहीं पाते।

2- बुरा नाम रखना

जैसा कि पहले भी बयान हो चुका है कि इन्सान का नाम उसकी पहचान का ज़रिया है और पैरेंट्स का पहला फ़र्ज़ यह है कि वह अपने बच्चों के लिए अच्छे नाम को चुनें। अगर पैरेंट्स अपने बच्चों का नाम ऐसे नामों में से रखेंगे जो बदनाम थे जैसे चंगेज़, तैमूर या किसी जानवर के नाम पर तो उसका असर यह होगा कि बच्चा लोगों के मज़ाक़ का निशाना बन जाएगा जिसके दो असर हैं:

1- एहसासे कमतरी

अपने बारे में निगेटिव सोच को परवान चढ़ाना, ख़ुद को छोटा और नाक़िस समझना। जिसके नतीजे में इंसान अपने कांफिडेंस को खो देता है और ज़िंदगी में तरह-तरह की मुश्किलों का शिकार होता रहता है।

2- बुरे और बदनाम लोगों से लगाव

जो लोग बदनाम लोगों के नाम से जुड़े होते हैं जैसे तैमूर, चंगेज़... तो ये शख़्सियतें हमेशा उसके ज़ेहन से जुड़ी होती हैं और धीरे-धीरे वह उनको आइडियल भी बना सकते है।

3- लोगों के नाम रखना

एक नाम तो वह होता है जो पैरेंट्स रखते हैं लेकिन ऐसा भी देखने में आता है कि लोग किसी और नाम से भी पहचाने जाते हैं जो उनका असली नाम नहीं है। यह नाम समाज की देन होता है मिसाल के तौर पर कोई ढकी हुई रंगत वाला हो तो उसे कल्लू, अगर कोई बहुत पतला हो तो उसे पतलू का लक़ब दे दिया जाए या मोटा होने पर उसे भैंस या हाथी का नाम दे दिया जाए या कभी-कभी बच्चे की किसी बुराई को इतना कहा जाए कि वही उसका नाम पड़ जाए। यानी बच्चा अपने ज़ेहन में ख़ुद को ऐसा ही देखे जैसा उसको पुकारा जाता है जैसे तुम शैतान हो या तुम तो शैतान को भी पढ़ाते हो। इससे बच्चे को यह यक़ीन हो जाता है कि उससे ज़्यादा शैतान कोई है ही नहीं और इससे बुरा यह कि उसे इस बात का भी एहसास हो जाता है कि उसमें सुधार नहीं आ सकता और ख़ुद कल्लू, मोटू जैसे नाम इंसान के कांफिडेंस को ख़त्म कर देते हैं और बच्चा अपने आपको एक कमज़ोर इंसान समझने लगता है।

ज़बान

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

'ज़बान' की पाकीज़गी अख़लाक़ में इस वजह से बहुत अहमियत वाली है क्योंकि ज़बान दिल का आईना, अक़्ल की रिप्रेज़ेंटेटिव और इंसानी शख़्सियत की कुंजी होती है। यह एक ऐसी अहम खिड़की है जो इंसानी रूह की तरफ़ खुलती है। दूसरे लफ़्ज़ों में जो कुछ इंसान की रूह की गहराईयों में छुपा होता है चाहे वह फ़िक्री हो या जज़्बाती, हर चीज़ से पहले ज़बान और बातचीत में ज़ाहिर होता है। अगर पिछले ज़मानों में हकीम इंसानी मिज़ाज के बिगड़ने या सही होने के एक बड़े हिस्से को ज़बान और बातचीत के अंदाज़ के ज़रिए पहचानते थे तो आज भी साईकॉलोजी के एक्सपर्टस बहुत सी दिमाग़ी बीमारियों का इलाज दिमाग़ी मरीज़ों की बातचीत और बोलने के अंदाज़ में ढूंढते हैं।

यही वजह है कि उलमा ज़बान को एक ख़ास अहमियत देते हैं और ज़बान की पाकीज़गी को रूह और नफ़्स की पाकीज़गी और अख़लाक़ी फ़ज़ीलतों को हासिल करने का ज़रिया समझते हैं। हदीसों में भी यह बात मिलती है।

(1) हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "इंसान अपनी ज़बान के नीचे छिपा होता है।" [1]

यानी न सिर्फ़ यह कि इल्मी बल्कि अख़लाक़ी व समाजी शख़सियत, यहां तक कि पूरी इंसानी शख़सियत उसकी ज़बान के नीचे छिपी होती है। इंसान जब तक बात न करे उसकी बुराई या अच्छाई सामने नहीं आ पाती।

(2) इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "दिल की मज़बूती के बिना ईमान की मज़बूती नहीं हो सकती और दिल की मज़बूती ज़बान की मज़बूती के बिना नहीं हो सकती।" [2]

30 बड़े गुनाह जो ज़बान की वजह से होते हैं

ज़बान की पाकीज़गी की अहमियत उस वक़्त और ज़्यादा खुलकर सामने आती है जब हम यह जान लें कि गुनाहों का एक बड़ा हिस्सा, नेक आमाल के एक बड़े हिस्से की तरह ज़बान से शुरू होता है।

मरहूम फ़ैज़ काशानी ने अपनी किताब 'मुहज्जतुल बैज़ा' में और इमाम ग़ज़ाली ने 'अहयाउल उलूम' में 'ज़बान के गुनाह' के नाम से इस सिलसिले में एक लम्बी बहस की है जिसमें ग़ज़ाली ने ज़बान की वजह से पैदा होने वाले बीस गुनाहों का ज़िक्र किया है:-

1- उन चीज़ों से जुड़ी बातचीत जिसका ताल्लुक़ इंसान से नहीं होता।

2- ज़्यादा और फ़ालतू बातचीत

3- बातिल और हराम के बारे में बातचीत जैसे शराब, जुआ और बेहया औरतों की तारीफ़ वग़ैरा।

4- जिदाल व मिरा यानी दूसरों पर ऐतराज़ करना ताकि उनको नीचा दिखाया जा सके या अपनी बड़ाई साबित की जा सके।

5- बातचीत के बीच बहेस करना

6- बातचीत में बनावट

7- बदज़बानी व गालियां

8- लानत-मलामत और बुरा-भला कहना

9- ग़िना (म्यूज़िक) और नाजाएज़ शेर

10- हंसी-मज़ाक़ में ज़्यादती

11- मसख़रापन

12- दूसरों के राज़ों व छिपी बातों को खोलना और दूसरों के सामने बयान करना।

13- झूठा वादा

14- झूठ बोलना और झूठी क़सम खाना

15- ग़ीबत

16- चुग़लख़ोरी

17- निफ़ाक़ यानी दो तरह की बातचीत करना

18- बेजा तारीफ़ करना

19- बातचीत के बीच उन ग़ल्तियों से बेतवज्जोही जो इस रास्ते से इंसान पर हमला करती हैं।

20- आम लोगों का अक़ाएद से जुड़े और पेचीदा मसलों के बारे में सवाल करना जिनके समझने की सलाहियत उनमें नहीं होती है।

ख़ुद-बख़ुद साफ़ है कि ज़बान से जुड़ी हुई गुमराहियां और आफ़तें सिर्फ़ इतनी ही नहीं हैं जितनी कि ग़ज़ाली ने बयान की हैं बल्कि जो कुछ उनकी किताब में लिखा हुआ है वह सिर्फ़ इसका एक हिस्सा है। नीचे लिखे गुनाह भी ज़बान के गुनाहों के तहेत ही आते हैं जो ग़ज़ाली की किताब में नहीं हैं :-

اخلاق و عرفان

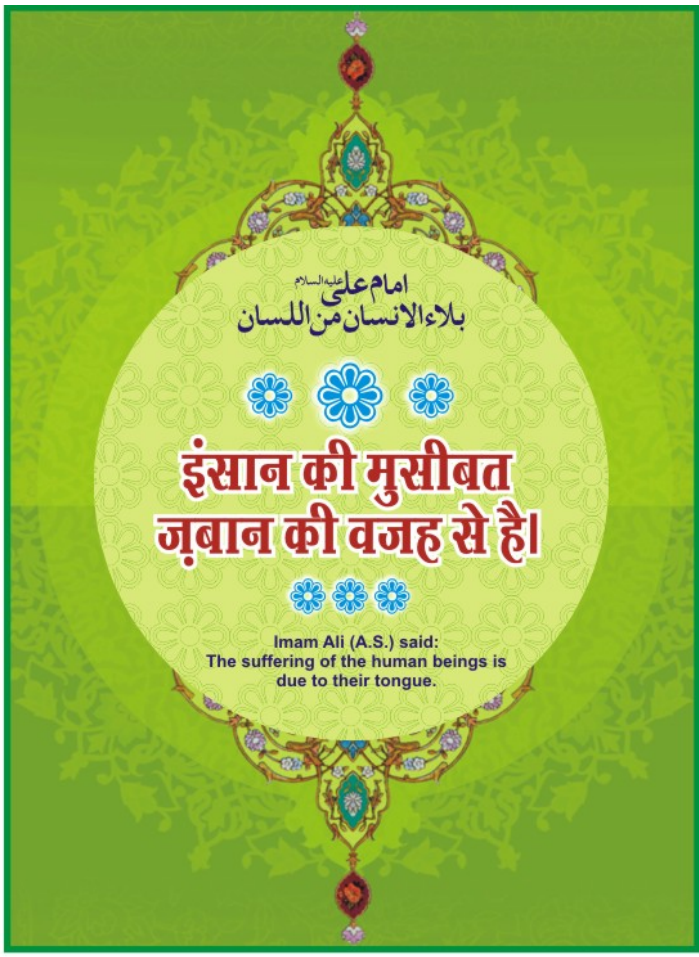

1- तोहमत लगाना

2- झूठी गवाही देना

3- अपनी तारीफ़ करना

4- गंदी बातों और अफ़वाहों का फैलाना

5- बातचीत के बीच सख़्त ज़बान में बात करना

6- अपनी बात पर ज़बरदस्ती करना (बनी इस्राईल और उन जैसों की तरह)

7- अपने अलफ़ाज़ के ज़रिए दूसरों को तकलीफ़ देना और परेशान करना।

8- उस शख़्स की बुराई करना जिसकी बुराई नहीं की जानी चाहिए।

9- ज़बान के ज़रिए नेमत की नाशुक्री।

10- ग़लत प्रोपेगन्डा और गुनाहों को फैलाना

इन चीज़ों में से कुछ दूसरे गुनाहों के तहेत भी आ सकती हैं। जैसे झूठी गवाही ख़ुद झूठ बोलने के तहेत आ सकती है। इसके अलावा कुछ सिर्फ़ ज़बान ही से नहीं होते हैं। जैसे ग़ीबत, मोमिन को तकलीफ़ देना, नाशुक्री वग़ैरा ज़बान के ज़रिए भी हो सकती है और जिस्म के दूसरे हिस्सों के ज़रिए भी।

अगर किसी चीज़ में शक नहीं है तो वह यह कि ज़बान व बातचीत की पाकीज़गी को अख़लाक़ के सबसे ख़ास मसलों में गिना जाना चाहिए।

इस टॉपिक की अहमियत उस वक़्त और साफ़ हो जाती है जब इस हक़ीक़त की तरफ़ ध्यान जाता है कि ज़बान सबसे आसान, सादा और सस्ता ज़रिया है जिस पर इंसान का कंट्रोल है। इसके अलावा ज़बान से अंजाम दिए जाने वाले काम की तेज़ी का दूसरे किसी भी काम से मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। इस लिहाज़ से ज़बान को उस मैटर की तरह कहा जा सकता है जिसके अंदर फटने की सलाहियत पाई जाती है जैसे यूरेनियम। इसलिए ज़रूरी है कि इंसान जिस तरह इस ख़तरनाक मैटर की हिफ़ाज़त करता है उसी तरह अपनी ज़बान की भी हिफ़ाज़त करे और उसकी तरफ़ पूरी तरह से ध्यान रखे।

ख़ामोशी

ज़बान को आज़ाद छोड़ देने की वजह से इंसान को होने वाले नुक़सानों और ख़तरों की वजह से उलमा ने ख़ामोशी को उन जगहों पर जहां बोलने की ज़रूरत न हो, उन नुक़सानों और ख़तरों से बचे रहने का एक अहम तरीक़ा बयान किया है। इस सिलसिले में रसूले अकरम[स॰] और मासूम इमामों[अ॰] से बहुत सी रिवायतें मिलती हैं जो इस टॉपिक की अहमियत को पूरी तरह से साफ़ कर देती हैं। यही वजह है कि उलमा के एक ग्रुप ने ख़ुद को बुराईयों से बचाने की कोशिश को ख़ामोशी ही से शुरू किया है।

इसके अलावा ख़ामोशी के ज़रिए इंसान को ग़ौर करने और रूहानियत जैसी एक हालत हासिल होती है और शायद इसी वजह से एक बड़े नबी हज़रत ज़करिया[अ॰] की ज़िंदगी के बारे में मिलता है कि आपने एक बच्चे की तमन्ना में तीन दिन की ख़ामोशी को दुआ के क़ुबूल होने का ज़रिया माना है।

ख़ुदा ने फ़रमाया, "तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन दिनों तक बराबर लोगों से बात नहीं करोगे।" (3)

क़ुरआन में हज़रत मरयम[अ॰] को ख़ामोशी के रोज़े की नज़र का हुक्म दिया है, "कह दीजिए कि मैंने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र कर ली है इसलिए मैं आज किसी इंसान से बात नहीं कर सकती।" (4)

रसूले इस्लाम[स॰] की ज़िंदगी के बारे में मिलता है कि आपने पहली बार 'वही' के नाज़िल होने से पहले कई दिन ग़ारे हिरा में ख़ामोशी और ग़ौर करेन में गुज़ारे थे।

ख़ामोशी से मिलने वाले फ़ायदों को इस तरह बयान किया जा सकता है:-

1- ख़ामोशी के ज़रिए इंसान बहुत से गुनाहों से बच जाता है। इस बारे में रसूले ख़ुदा[स॰] ने एक बहुत फ़ाएदेमंद बात कही है, "जो ख़ामोशी को चुन लेता है वह निजात पा जाता है।"

इसकी वजह भी साफ़ है क्योंकि बहुत से गुनाह ज़बान के ज़रिए होते हैं जैसा कि रसूले इस्लाम[स॰] ने फ़रमाया है, "इंसान के ज़्यादातर गुनाह उसकी ज़बान में छुपे हैं। (5)

एक दूसरी हदीस में आप फ़रमाते हैं, "अपनी ज़बान को नेक बातों के अलावा बंद रखो क्योंकि इसके ज़रिए शैतान पर कंट्रोल पा लोगे।"

2- ख़ामोशी इंसान को ग़ौर व फ़िक्र करने की दावत देती है कि जो रूहानियत का सबसे बड़ा सोर्स है। यही वजह है कि ख़ामोश रहने वाले लोग आम तौर पर आलिम, स्कॉलर और मुफ़क्किर होते हैं जबकि इसके मुक़ाबले में ज़्यादा बोलने वाले लोगों की शख़्सियत में कोई वज़न नहीं पाया जाता। ऐसे लोग बोलते ज़्यादा हैं, काम कम करते हैं। रसूले इस्लाम[स॰] से एक हदीस नक़ल हुई है जिसमें आप फ़रमाते हैं, "अगर किसी मोमिन को ख़ामोश

और बाविक़ार देखो तो उसके पास जाओ, वह तुम्हें हिकमत की तालीम देगा।[6]

हज़रत अली[अ०] भी फ़रमाते हैं, "जब अक़्ल पूरी हो जाती है तो बातचीत कम हो जाती है।"[7]

3- ख़ामोशी के मुक़ाबले में ज़्यादा बोलना और बातचीत करना इंसान को लापरवाह और लाउबाली बना देता है क्योंकि इससे इंसान की ग़लतियां ज़्यादा और शर्म व हया कम हो जाती है। शर्म व हया के पर्दे के निगाहों से हट जाने की वजह से इंसान ग़ैर अख़लाक़ी काम बड़ी आसानी से करता चला जाता है। जैसा कि हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "जो ज़्यादा बोलता है उससे ग़लतियां ज़्यादा होने लगती हैं और जिससे ग़लतियां ज़्यादा होने लगती हैं उसकी शर्म व हया कम हो जाती है और जिसकी शर्म व हया कम हो जाती है उसका तक़्वा भी कम हो जाता है और जिसका तक़्वा कम हो जाता है उसका दिल मुर्दा हो जाता है और जिसका दिल मुर्दा हो जाता है वह जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।[8]

शायद यही वजह है कि ख़ामोशी को एक अहम इबादत गिना गया है, "इबादत के दस हिस्से हैं जिनमें से नौ ख़ामोशी में हैं।"[9]

ख़ुलासा यह हुआ कि ख़ामोशी गुनाहों से ख़ुद को बचाने का एक ज़रिया है। अगर कुछ मौक़ों पर इंसान कुछ गुनाहों जैसे झूठ, ग़ीबत, तोहमत वग़ैरा की तरफ़ झुक रहा हो लेकिन ख़ामोश हो जाए तो यह ख़ामोशी न सिर्फ़ यह कि उसको गुनाह से बचा लेगी बल्कि इसे इंसानी फ़ज़ीलत व कमाल भी गिना जाएगा।

यह भी ध्यान में रहे है कि जिन जगहों पर बोलना ज़रूरी है वहां ख़ामोश रहना बहुत बुरा ऐब है जो कमज़ोरी, नातवानी, रूहानी बुज़दिली और ख़ुदा के अलावा दूसरों से डरने की निशानी है।

यह भी ख़्याल रहे कि जिस तरह बहुत से गुनाह ज़बान से होते हैं उसी तरह नेक आमाल और इबादतों का एक बड़ा हिस्सा जैसे ख़ुदा का ज़िक्र, लोगों की हिदायत, तालीम व तरबियत, अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर वग़ैरा भी ज़बान के ज़रिए ही होते हैं।

1-नहजुल बलाग़ा, कलिमाते क़िसार/148, 2-बिहारुल अनवार, 75/262, मुहज्जतुल बैज़ा, 5/193, 3-सूरए मरयम/10, 4-सूरए मरयम/26, 5-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/194, 6-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/195, 7-नहजुल बलाग़ा, कलिमाते क़िसार/71, 8-नहजुल बलाग़ा, कलिमाते क़िसार/71, 9-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/196

आपके लैटर्स

सलामुन अलैकुम

मरयम मैगज़ीन मिल रही है और बराबर मिल रही है।

इस मैगज़ीन की सबसे ख़ास बात मुझे यह लगती है कि इसमें घर के हर मिम्बर के लिए कुछ न कुछ होता है और यही एक अच्छी मैगज़ीन की निशानी है।

आप लोग इस मैगज़ीन के लिए जो ज़हमतें कर रहे हैं उसके लिए दुआ है कि ख़ुदा सारी ज़हमतों को कुबूल फ़रमाए और आप सब की तौफ़ीक़ात में और इज़ाफ़ा करे!

सकीना ख़ातून
बेंगलोर

सलामुन अलैकुम

मरयम मैगज़ीन मिल रही है और हर बार अपने साथ पढ़ने के लिए बहुत कुछ लेकर आती है।

पिछले महीने 'नशे की आदतः ज़िल्लत और हलाकत, घरेलू ख़रीदारी, बेटी करे टॉप और मौहब्बत में कमी ज़्यादती' जैसे आर्टिकिल्स बहुत अच्छे लगे।

मैगज़ीन की डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग भी बहुत अच्छी और कलरफुल होती है जिससे मैगज़ीन में चार चांद लग जाते हैं।

आफ़रीन अनजुम
कानपुर

एडीटर साहब
सलामुन अलैकुम

मरयम मैगज़ीन को देखकर ऐसा लगता है जैसे हमारा ख़्वाब पूरा हो रहा है क्योंकि एक ज़माने से ख़्वाहिश थी कि हमारे बीच भी एक ऐसी मैगज़ीन हो जो दूसरी मैगज़ीनों का मुक़ाबला कर सके, मैटर के लिहाज़ से भी, प्रिंटिंग के लिहाज़ से भी और डिज़ाइनिंग के लिहाज़ से भी। ख़ुदा का शुक्र है कि मरयम के बाद अब यह कमी पूरी हो गई है।

मोहम्मद याकूब
उदयपुर

मीरोस्लाव स्वीटेक 37 साल के एक शौक़ीन फ़ाटोग्राफ़र हैं जिन्होंने सिर्फ़ तीन साल पहले फ़ाटोग्राफ़ी शुरू की है लेकिन अभी भी उन्हें 'शौक़िया फ़ोटोग्राफ़र' क्यों कहा जाता है यह समझ में नहीं आता। उन्होंने जो तस्वीरें खींची हैं उन्हें देखकर उनके हुनर की तो तारीफ़ करने को तो दिल चाहता ही है साथ ही ख़ुदा की कुदरत को देखकर ज़बान से सुब्हान अल्लाह भी निकलने लगता है...यहां हम सात ऐसी तस्वीरें पेश कर रहे हैं जिनमें ओस में डूबे सात कीड़े नज़र आ रहे हैं जो ख़ुदा की कुदरत की कारीगरी का हसीन मंज़र पेश कर रहे हैं...

ओस में डूबे हुए कीड़े

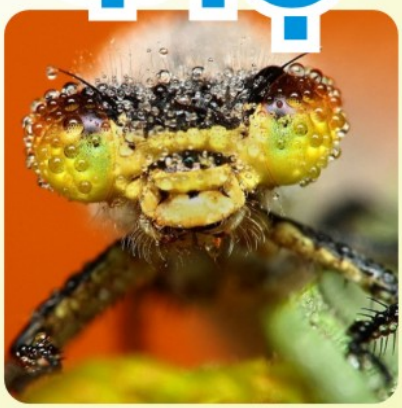

कहानी

मनहूस

■ रफ़ी इफ़तेख़ार

उन दिनों जुमेरात को स्कूल में हॉफ़-डे हुआ करता था। मैं दिन गिन-गिन कर जुमेरात और जुमे का इंतिज़ार किया करता था क्योंकि यह दो दिन मैं बी अम्मा के घर पर गुज़ारा करता था। आज वही मुबारक दिन था यानी जुमेरात। स्कूल से छुट्टी होते ही मैं साइकिल चलाता बल्कि उड़ाता हुआ घर पहुंचा। घर वालों को सलाम किया या नहीं कपड़े बदले या नहीं... मुझे कुछ मालूम नहीं। मुझे तो जल्दी थी बी अम्मा के घर पहुंचने की। और घंटा भर बाद ही वहां मौजूद था। दरवाज़ा आधा खुला था और वह हमेशा की तरह मेरा रास्ता देख रही थीं। अंदर पहुंचते ही मुझे ताज़ा लस्सी का ग्लास मिल गया जो बी अम्मा ने मेरे लिए बना कर रखी थी। मैं ग़टाग़ट लस्सी चढ़ा रहा था और बी अम्मा एक-एक का नाम लेकर ख़ैरियत मालूम कर रही थीं लेकिन मेरी नज़रें तो घर में चारो तरफ़ घूम रही थीं। मैं देखना चाह रहा था कि एक हफ़्ते में क्या-क्या बदलाव आए हैं। लेकिन साथ ही बी अम्मा के सवालों के जवाब भी हां, हूं, ठीक है, में दे रहा था। थोड़ी देर बाद बी अम्मा के साथ खाने का मज़ा ही कुछ और था। अगरचे थोड़ा बहुत सहारा घर से कर आया था लेकिन यहां ख़ूब डट कर खाया।

गर्मियों की दोपहर थी बी अम्मा खाने के बाद आदत के मुताबिक़ क़ैलूला करने के लिए लेट गईं और मैं उनकी बुलबुल का पिंजरा साफ़ करने लगा। बुलबुल मुझसे बड़ी मानूस थी। मैं सफ़ाई के साथ-साथ उससे बातें भी करता जा रहा था।

बी अम्मा अपने कमरे में लेटी हुई थीं और मैं बुलबुल और उसके पिंजरे के साथ लगा हुआ था कि दरवाज़े की बेल बज उठी। मैं हैरान रह गया कि इस भरी और तपती धूप में कौन आ सकता है। जाके दरवाज़ा खोला तो एक नौजवान लड़की ख़ड़ी थी जिसकी शक्ल मुझे कुछ जानी पहचानी सी लगी।

"बी अम्मा हैं?" इससे पहले कि मैं जवाब देता अंदर से बी अम्मा की आवाज़ आई।

"कौन है? अंदर बुला लो..."

"जी! अंदर आ जाइए।" मैंने रास्ता देते हुए कहा।

"लगता है तुम मुझे पहचानते नहीं। मैं हूं माहिन दादी रज़िया की बहू..." उन्होंने अंदर आते हुए कहा।

मैं बड़ा शर्मिन्दा हुआ। दो महीने पहले ही उनकी शादी हुई थी और जब अब्बू ने उन्हें और अंकल नफ़ीस (माहीन के शौहर) को दावत दी थी तब मैंने उन्हें देखा था लेकिन कोई एक बार देखने से तस्वीर हमेशा बाक़ी थोड़ी रह जाती है। बहेरहाल मैं उन्हें ड्रांइग रूम में ले आया। बी अम्मा भी आ चुकी थीं। वह माहीन को देखकर बहुत ख़ुश हुईं। बड़े तपाक से गले मिलीं और माहीन को अपने पास सोफ़े पर बिठा लिया।

"अरे भई यह आज सूरज किस तरफ़ से आ निकला है?इस भरी दोपहर में हमारी याद कैसे आ गई?नफ़ीस और रज़िया के क्या हाल हैं?" बी अम्मा ने सवालों की बौछार कर दी। शायद वह भी मेरी तरह माहीन आंटी के इस तरह आने पर बहुत ज़्यादा हैरान थीं।

दादी रज़िया बी अम्मा की सगी बहन हैं लेकिन बी अम्मा से बिल्कुल ही उलट। बहुत ही चर्ब ज़बान और बदमिज़ाज। उनकी कभी किसी से नहीं बनी, ख़ास कर बी अम्मा से। यही वजह थी कि बी अम्मा माहीन के आने की ख़ुशी के साथ बहुत हैरत का शिकार भी थीं। दादी रज़िया हमेशा ख़ानदान भर में कीड़े निकलतीं और अख़्लाक़ की भी अच्छी नहीं थीं। उन्हें ऐबजोई में महारत हासिल थी। महफ़िल में बैठ कर इस तरह जमाई लेतीं जैसे हफ़्ते भर का भूखा शेर शिकार शुदा जानवर को खाने के लिए तैयार है।

"क्या बताऊं बी अम्मा मैं..." लेकिन इसके आगे माहीन आंटी कुछ नहीं कह सकीं। रोते-रोते उनकी हिचकियां बंध गई थीं।

"देखो बेटी इस तरह रोने से तो बात का पता नहीं चलेगा। कुछ बताओ तो सही हुआ क्या है?" बी अम्मा उन्हें दिलासा दे रही थीं, चुप करा रही थीं लेकिन वह ख़ुद पर क़ाबू नहीं पा रही थीं।

बी अम्मा ने अपने हाथों से उनके आंसू पोछे। हाथ पकड़ा बेसन के पास ले जाकर कहने लगीं, "मुंह हाथ धो। आंखों पर ठंडे पानी के छींटे मारो। फिर आराम से बताना क्या हुआ..." यह कहकर बी अम्मा किचन में जाकर शर्बत में ग्लूकोज़ मिलाकर ले आईं। इतनी देर में माहीन आंटी भी मुंह धोकर आ चुकी थीं। बी अम्मा ने शर्बत का ग्लास उनके मुंह में लगा दिया तो माहीन आंटी ने ग्लास बी अम्मा के हाथ से ले लिया।

अब माहीन आंटी की हालत कुछ बेहतर लग रही थी। बी अम्मा ने पूछा, "अच्छा अब मुझे बताओ क्या बात है?क्यों इस क़द्र परेशान हो?"

माहीन आंटी ने एक ठंडी आह भरी और कहने लगीं, "क्या बताऊं बी

अम्मा! आपको ख़ुदा का वास्ता मेरा घर उजड़ने से बचा लें... नफ़ीस मुझे तलाक़ देना चाहते हैं...''

बी अम्मा अपनी जगह से उछल पड़ीं ''क्या कहा तुमने?... नफ़ीस तुम्हें तलाक़ देना चाहता है?'' बी अम्मा को यक़ीन नहीं आ रहा था। ''अरे तुम्हारी तो अभी हाथों की मेंहदी भी नहीं छूटी है। अभी तो बहुत से लोगों को तुम्हारी शादी का भी पता नहीं है... लेकिन क्यों? आख़िर हुआ क्या है?'' बी अम्मा वाक़ई बहुत परेशान लग रही थीं।

''अम्मी (दादी रज़िया) अपनी बात पर अड़ी हुई हैं। उनका कहना है कि यह लड़की हमारे घर की बहू बनने के क़ाबिल नहीं है। जितनी जल्दी हो सके इसे तलाक़ दे दो।'' माहीन आंटी ने असल मुद्दा बयान किया।

''रज़िया को क्या तकलीफ़ है? तुमसे अच्छी बहू चाहती है क्या!?''

''वह सब से कहती फिर रही हैं कि माहीन के क़दम हमारे लिए मुबारक साबित नहीं हुए। यह हमारे लायक़ नहीं है। जब से यह नफ़ीस के निकाह में आई है उस वक़्त से हमारे घर से ख़ैर व बरकत उठ गई है। और इस तरह की बहुत सी बातें मुझसे मन्सूब कर रही हैं।'' माहीन आंटी की आवाज़ भर्रा गई थी।

''क़दम बुरे हैं से क्या मुराद?तुम ने ऐसा क्या किया है जो यह इस तरह की बातें बना रही हैं?''

''बी अम्मा! सच पूछें तो हक़ीक़त यह है कि जब से मैं उनके घर में आई हूं, अजीब इत्तेफ़ाक़ हो रहे हैं। अब तो मुझे भी अपने ऊपर शक होने लगा है।'' माहीन आंटी के लहजे में अजीब सी मायूसी भरी हुई थी।

''बको मत। तुम जैसी पढ़ी-लिखी लड़की यह बातें करती अच्छी नहीं लगती। न जाने क्या बक रही हो?'' बी अम्मा को अब माहीन आंटी पर ही गुस्सा आ रहा था। ''तुम ने मुझे भी उलझा दिया है। ज़रा तफ़सील से बताओ कि क्या हुआ है?''

''बी अम्मा! क्या बताऊं क़िस्सा बहुत लंबा है। शादी के दो दिन बाद एक सुबह अम्मी (दादी रज़िया) सो कर उठीं। अभी वह बाथरूम से मुंह हाथ धोकर निकल ही रही थीं कि उनका पांव फिसला और वह ज़मीन पर गिर पड़ीं। उसके बाद पैर पकड़ के जो हाय वावैला शुरू की है तो मत पूछें फिर क्या हुआ... जबकि चोट कोई ऐसी ख़ास भी नहीं आई थी।'' आख़िरी जुमला कहते हुए माहीन आंटी का लहजा तल्ख़ हो गया था।

बी अम्मा को हंसी आ गई क्योंकि वह अपनी बहन की हरकतों से वाक़िफ़ थीं।

''दो तीन दिन के बाद दोपहर के वक़्त नफ़ीस घर से कुछ सौदा लेने के लिए निकले। इधर गली के कोने पर एक गधा ख़ड़ा था और मज़दूर उस पर लदी हुई ईंटें उतार-उतार कर नीचे रख रहा था। उसी वक़्त गली के कोने पर दो बिल्लियां किसी छिछड़े पर झगड़ पड़ीं बिल्लियों की चीख़ व पुकार से गधा घबरा गया और उसने दौड़ लगा दी। नफ़ीस ने बचने की बहुत कोशिश की लेकिन वह भागते हुए गधे से टकरा कर ज़मीन पर गिर पड़े। वह तो अच्छा हुआ मज़दूर ने फ़ौरन गधे को क़ाबू कर लिया और वह ज़मीन पर पड़े हुए नफ़ीस के ऊपर से न गुज़र गया वरना शायद अम्मी (दादी रज़िया) तो मुझे नफ़ीस का क़ातिल क़रार दे देतीं और मैं जेल की हवा खा रही होती। बहेरहाल लोगों ने नफ़ीस को ज़ख़्मी हालत में मरहम पट्टी के बाद घर पहुंचाया तो अम्मी ने दोबारा वह हाय वावैला मचाई कि ख़ुदा ही बेहतर जानता है और फिर उसका इल्ज़ाम भी मुझ ही पर थोप दिया।'' माहीन आंटी ने तफ़सील बताई।

''हैरत है, मुझे इन बातों की ख़बर नहीं। ख़ैर अब नफ़ीस कैसा है?'' बी अम्मा ने हैरत के इज़हार के बाद ख़ैरियत भी मालूम कर ली।

''कुछ दिन घर में आराम किया और अब तो वह बिल्कुल ठीक हैं।'' माहीन आंटी ने बताया तो बी अम्मा को इत्मिनान हुआ।

''चलो फिर तो तुम्हारा मसला हल हो गया न?'' बी अम्मा ने माहीन आंटी से पूछा।

''अरे बी अम्मा कैसी बातें करती हैं। एक ही हफ़्ता गुज़रा था कि अम्मी (दादी रज़िया) स्टोर से चावल निकालने गईं तो एक बहुत ही मोटे ताज़े चूहे ने अम्मी पर छलांग लगा दी और दूसरा उनके पैरों पर से गुज़र गया। अम्मी इस अचानक उफ़ताद पर चीख़ के बेहोश हो गईं। एक घंटे बाद जब उन्हें होश में लाया गया तो डर के मारे उनकी ज़बान बिल्कुल बंद थी। बड़ी मुश्किल से उनको पानी वग़ैर पिलाकर डर दूर किया तो कुछ जान में जान आई। लेकिन इस क़िस्से का ख़ात्मा भी मेरी तरफ़ तिरछी निगाहों से देखते हुए हुआ।''

''लो तो इसमें तुम्हारा क्या क़ुसूर है?और शायद तुम्हें महसूस हुआ होगा वरना इस तरह देखने से उनका कोई ख़ास मक़सद नहीं होगा।'' बी अम्मा ने उन्हें तसल्ली दी।

''ख़ैर बी अम्मा अब आप जो भी कहें। अभी कुछ दिन गुज़रे थे कि मेरे छोटे देवर की पड़ोस के एक लड़के से तू-तू, मैं-मैं हो गई और नौबत हाथा-पाई तक जा पहुंची। बड़ों ने बीच-बचाओ तो करा दिया लेकिन हफ़ीज़ को अच्छी ख़ासी रुसवाई उठाना पड़ी। दो चार दिन के बाद बाज़ार में मेरे ससुर का बैग खो गया जिसमें एक महीने की तंख़्वाह के अलावा ज़रूरी काग़ज़ात भी थे। बस बी अम्मा! कहा तक सुनेंगी? जब से मैं इस घर में गई हूं हर रोज़ एक नया तमाशा देखने में आया है।'' माहीन आंटी बुरी तरह अपने होंठ चबा रही थीं और बी अम्मा गहरी सोच में डूबी हुई थीं।

''बी अम्मा! आपको ख़ुदा का वास्ता! आपने तो दुनिया देखी है। मुझे

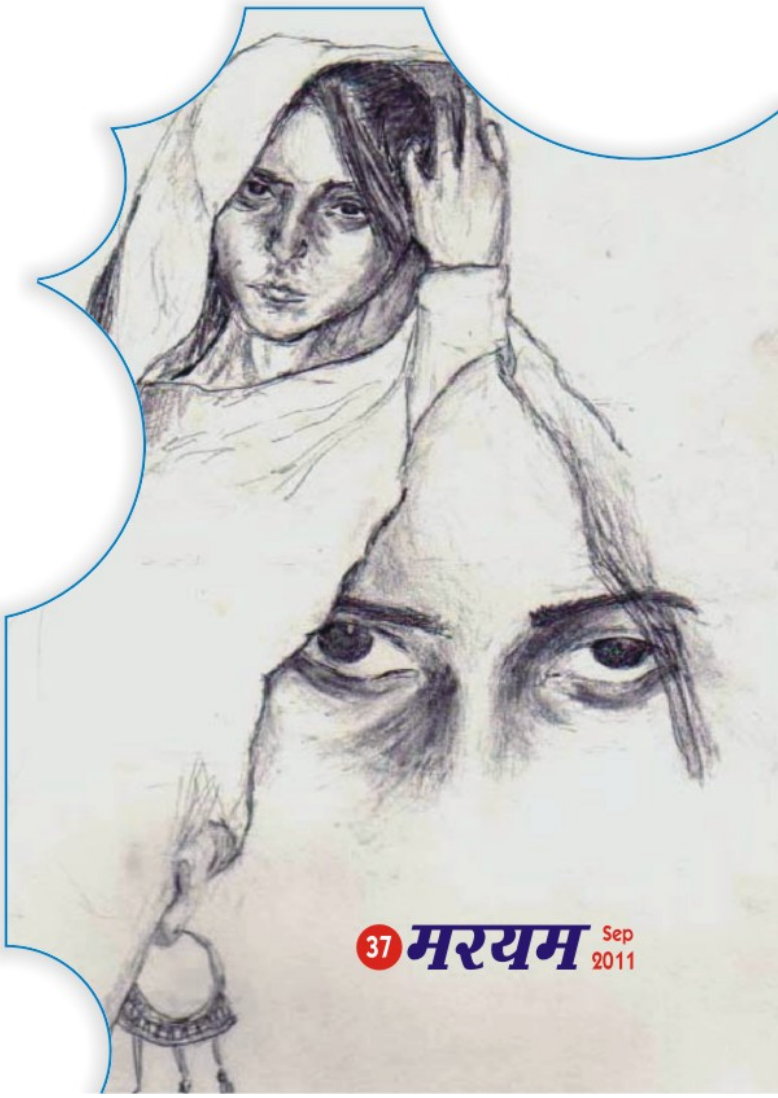

बताइए आख़िर मेरा क़ुसूर क्या है? मैंने क्या गुनाह किया है? अम्मी ने मुझे कहीं मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं छोड़ा। हर जगह मशहूर कर रखा हे कि इस घर में जो कुछ हुआ माहीन की नहूसत की वजह से हुआ है। मैं जितनी भी सफ़ाइयां पेश करूं उन पर असर ही नहीं होता।'' वह फिर रोने लगी थीं।

मुझे हंसी आ रही थी इसलिए कि मैं भी दादी रज़िया से वाक़िफ़ था। बी अम्मा ने मुझे हंसता देखकर आंखें दिखाईं और फिर मुझे पानी लाने का इशारा किया। मैं पानी लाने के लिए कमरे से बाहर निकल गया और जल्दी से फ़्रिज में से पानी निकाल कर ग्लास को अदब से सीनी में रखकर दोबारा कमरे की तरफ़ चल पड़ा तो अंदर से माहीन आंटी की आवाज़ आ रही थी, ''बी अम्मा अब आप ही कुछ करें मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। ऊपर वाले के बाद मुझे तो आप ही से कुछ उम्मीद है।''

''माहीन! लो यह पानी पियो और बिल्कुल परेशान न हो। ख़ुदा पर भरोसा रखो। इंशाअल्लाह सब ठीक हो जाएगा।'' यह कह कर बी अम्मा ने उनको घर भेज दिया लेकिन मैंने देखा कि बी अम्मा को उसके बाद एक पल भी चैन नहीं था। वह यही कहे जा रही थीं ''बेचारी माहीन... अफ़सोस किसके हाथ लग गई... वह बेक़ुसूर अपने न किए हुए गुनाहों की सज़ा भुगत रही है।'' बी अम्मा लगातार बड़बड़ा रही थीं लेकिन उनकी आंखें सोच में डूबी हुई थीं। मैं उनकी आदत को जानता था इसलिए वहां से निकल गया और दोबारा बुलबुल के पिंजरे की तरफ़ ध्यान देने लगा। मैं भी लगातार माहीन आंटी ही के बारे में सोच रहा था कि बी अम्मा की आवाज़ आई,

''बेटा तुम फ़ौरन दादी रज़िया के पास जाकर उन्हें मेरा सलाम कहो और उनसे कहना कि आज रात खाना हमारे साथ खाएं। और हां देखो माहीन का ज़िक्र मत करना कि वह यहां आई थी समझ गए?'' बी अम्मा की आंखों में अजीब सी चमक थी।

मैं बहुत कुछ पूछना चाहता था लेकिन हिम्मत न पड़ी तो सर झुकाए बड़ी फ़रमाबरदारी के साथ अपनी साइकिल की तरफ़ बढ़ गया। बी अम्मा ने कुछ पैसे और सौदे की लिस्ट भी मुझे पकड़ा दी कि अगर दादी रज़िया आने पर तैयार हो जाएं तो वापसी पर सौदा लेते आना। मैंने साइकिल बाहर निकाली और दादी रज़िया के घर की तरफ़ रवाना हो गया। दादी के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वह ख़ुद बरामद हुईं और मैंने सलाम के बाद बी अम्मा का पैग़ाम सुना दिया।

''माशाअल्लाह क्या कहने! तुम्हारी बी अम्मा ने आज हम फ़क़ीरों को कैसे याद फ़रमा लिया। उनसे कहना हालांकि मुझे अभी बहुत काम करने हैं लेकिन फ़िर भी मैं आ जाऊंगी लेकिन एक शर्त पर कि वह ख़ुद मुझे दावत दें या मुझे फ़ोन ही कर लें। समझे!'' यह कह कर उन्होंने धड़ से दरवाज़ा बंद किया तो मैं भी एक मिनट के लिए भी वहां नहीं रुका और फ़ौरन बी अम्मा के पास लौट आया और दादी रज़िया का पैग़ाम पहुंचा दिया।

बी अम्मा ने फ़ोन पर दादी रज़िया से बातें करने के बाद मुझे सौदा लाने का हुक्म दिया और मैं एक बार फिर साइकिल उठाकर बाज़ार की तरफ़ निकल गया। मैं उस वक़्त के बारे में सोच-सोच कर डर रहा था कि जब दादी रज़िया आएंगी और माहीन आंटी के मसले पर दोनों के बीच तू-तू, मैं-मैं होगी और फिर... मेरी कुछ समझ नहीं आ रहा था। बहेरहाल मैंने सौदा लाकर बी अम्मा को दिया तो वह किचन में चली गईं और मैं शाम के इंतिज़ार में अपना वक़्त गुज़ारने के लिए बुलबुल के पिंजरे की तरफ़ बढ़ गया।

शाम को दादी रज़िया पान की ग्लौरी मुंह में दबाए घर में दाख़िल हुईं तो बी अम्मा ने उनका पुरजोश इस्तेक़बाल किया और ड्राइंग रूम में बिठाने के बाद कहने लगीं, ''अरे बहन रज़िया देखो तो वक़्त और हालात कितने बदल गए हैं। अब तो वह ज़माना आ गया है कि एक ही गली कूचे में रहते हुए लोगों को बरसों एक दूसरे की ख़बर नहीं होती। मैंने सोचा ऐसा न हो कि मेरा दम निकल जाए और बहन को न देख सकूं इसलिए बुला भेजा था।''

''सच पूछो तो यह बेरुख़ी तुम्हारी तरफ़ से ही है। तुम ही सबसे दूर रहती हो वरना ख़ुदा गवाह है मैं हमेशा तुमसे मिलने को तैयार हूं...'' दादी रज़िया पान चबाते हुए कहने लगीं।

मेरी उम्मीद के उलट दोनों बहनें ख़ूब हंस बोल रही थीं कि अचानक बी अम्मा कहने लगीं, ''अच्छा यह बताओ नफ़ीस के क्या हाल हैं?और वह तुम्हारी बहू कैसी है? तुमने तो माहीन के बाप को राज़ी करने के लिए हद ही कर दी थी।''

''ऐ बहन तौबा करो। तुम कोई ग़ैर तो हो नहीं। अपना ख़ून हो तुम्हें तो मेरी आदतों का इल्म है कि मैं किसी की बुराई में नहीं पड़ती। अरे मेरी तो हमेशा से यह आरज़ू थी कि अपने नफ़ीस की शादी करके उसका घर आबाद कर दूं लेकिन मेरी क़िस्मत! ऐसे पैर बहू के घर में आए कि मत पूछो। पूरा घर तहेस-नहेस करके रख दिया। मैं अपनी क़िस्मत को कहां जाकर रोऊं?'' किससे उस मन्हूस की शिकायत करूं?'' वह दोनों हाथों से अपना माथा पीट रही थीं।

मैंने बी अम्मा की तरफ़ देखा कि अब वह किस तरह से माहीन आंटी की हिमायत करती हैं लेकिन मुझे उस वक़्त सख़्त ताअज्जुब हुआ कि जब बी अम्मा बजाए इसके ख़ुद भी दादी रज़िया की बातों में टुकड़े लगा रही थीं।

अपना हिमायती मिला तो दादी रज़िया का हौसला और बुलंद हो गया

था और अब उन्होंने बाक़ाएदा अपने ज़ानू पर हाथ मारना और कभी माथा पीटना शुरू कर दिया था। उन्होंने एक-एक करके वह सारे क़िस्से सुना दिए जो माहीन आंटी पहले ही बता चुकी थीं। मैं हैरान आंखें फ़ाड़े दोनों को और ख़ास तौर पर बी अम्मा को देखे जा रहा था कि वह यह क्या कह रही हैं।

न जाने क्यों एक दम मुझे बी अम्मा से चिढ़ होने लगी और मैं घबराकर बाहर निकल आया। दोनों बहनें बातें करती रहीं और बी अम्मा ने आंटी की हिमायत के बजाए जो रवैय्या इख़्तियार कर रखा था मुझे उसकी कोई उम्मीद नहीं थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि वह और दादी रज़िया मिलकर माहीन आंटी को तलाक़ दिलवा कर ही दम लेंगी।

क़िस्सा मुख़्तसर, खाने का वक़्त हुआ। बी अम्मा ने खाना लगाया और हम लोग खाना खाने बैठ गए। इस दौरान भी दोनों अपनी-अपनी कहती-सुनती रहीं। खाने के बाद दादी अपने घर चली गईं और मैं कहानी की एक किताब उठाकर पढ़ने लगा। अचानक मुझे बी अम्मा के चीख़ने की आवाज़ें आईं। मैं भाग कर कमरे में गया और यह देख कर हैरान रह गया कि बी अम्मा की हालत बहुत ख़राब है। वह चिल्ला रही थीं, ''मैं मर रही हूं। अरे लोगो! मैं मर रही हूं। जाओ सबसे जाकर बताओ कि तुम्हारी बी अम्मा अब इस दुनिया से जा रही है।''

मैं ने उन्हें बहुत आवाज़ें दीं लेकिन मेरी किसी बात का जवाब दिए बग़ैर वह चिल्लाती रहीं। मैं ज़ारो क़तार रोने लगा। बड़ी मुश्किल से बाहर आया और तेज़ी से साइकिल निकाल कर बाहर निकल गया लेकिन मुझसे पैडिल ही नहीं मारे जा रहे थे।

दरवाज़े से निकलते वक़्त मैंने सिर्फ़ यही सुना था कि वह चिल्लाए जा रही थीं कि डाक्टर को बुलाने का कोई फ़ायदा नहीं। दादी रज़िया समेत सब रिश्तेदारों को बुला लो। बस मैं कुछ घंटों की मेहमान हूं।''

मुझे नहीं मालूम मैंने कैसे सबको ख़बर दी। लेकिन कुछ ही देर बाद बी अम्मा के घर में पड़ोसियों और रिश्तेदारों का मजमा लग गया था। बी अम्मा ख़ानदान भर की और मोहल्ले भर की हर दिल अज़ीज़ औरत थीं। इसलिए जो सुनता वह दौड़ा चला आता। किसी ने मोहल्ले के डाक्टर को ख़बर दी तो वह भी बी अम्मा का नाम सुनकर दौड़ा चला आया था। डाक्टर ने भरपूर कोशिश कर डाली लेकिन बी अम्मा ने दवा का एक क़तरा भी हलक़ से न उतारा। वह आंखें बंद किए लगातार यही कहती रहीं कि जब मरना ही है तो फिर दवा पीकर अपना हलक़ क्यों कड़वा करूं। मुझे पता है यह सब बहन रज़िया का किया धरा है। अरे यह रज़िया के मन्हूस क़दम मेरे घर आए और मेरी यह हालत हो गई। अरे इसी ने कुछ कराया होगा। बी अम्मा ने दादी रज़िया को इतनी बातें सुनाईं और उनको इस क़द्र मन्हूस क़रार दिया कि लोग बी अम्मा की मुहब्बत में आकर दादी रज़िया को बुरा-भला कहने लगे। सब उन्हें मन्हूस क़रार देने लगे थे। जब उनकी बरदाशत करने की ताक़त सब कुछ सुन कर जवाब दे गई तो वह बी अम्मा के पास आईं और कहने लगीं, ''यह क्या तुमने मेरे बारे में मन्हूस-मन्हूस की रट लगा रखी है। यह सब ख़ुराफ़ात है। सब कहने की बातें हैं। कभी किसी के क़दम भी मंहूस हुए हैं। यह तो सब इंसान के अपने किए धरे का नतीजा है। मुझे क्यों मन्हूस कह रही हो।''

मुझे लगा जैसे बी अम्मा दादी रज़िया से यही जुमले कहलाने के लिए बिस्तरे मर्ग पर आ पड़ी थीं। वह एकदम उठ बैठीं और कहने लगीं, ''रज़िया यह झूठ नहीं है। तेरे क़दम ही मन्हूस हैं। जिस वक़्त से तू मेरे घर में आई है उसी वक़्त से मेरी यह हालत हो गई है।''

दादी रज़िया लगातार दलीलें पेश कर रही थीं कि अब हालात बदल गए हैं। नहूसत वाली बातें पुराने ज़माने की होकर रह गई हैं। हर कोई अपना नसीब लेकर आता है या ख़ुद बनाता है, किसी के कुछ कराने या उसके मन्हूस क़दम की वजह से किसी पर मुसीबत नाज़िल नहीं होती। सब लोगों के साथ मैं भी हैरान था कि यह वही दादी रज़िया हैं जो कल तक अपनी मासूम सी बहू के क़दमों को मन्हूस क़रार देते हुए अपनी मुश्किलों का सेहरा उसके सर बांध रही थीं और आज कहती हैं कि क़दमों का कोई असर नहीं शायद बी अम्मा का मक़सद भी यही था और वह यही सब कुछ ख़ुद दादी रज़िया से कहलवाना चाहती थीं। इसीलिए फ़ौरन कहने लगीं, ''अगर यह सब ख़ुराफ़ात है तो फ़िर तुम क्यों अपनी मुसीबतें बेचारी माहीन के सर डालती रहती हो?? क्यों उस मासूम को तलाक़ दिलवा रही हो?''

न सिर्फ़ मैं बल्कि दादी रज़िया और उस वक़्त वहां मौजूद तमाम लोग बी अम्मा के ड्रामे को समझ चुके थे। बी अम्मा ने माहीन को अपने पास बुलवाया और क़समें देकर दोनों सास बहू को गले लगवाया। फिर दादी रज़िया से क़सम ली कि जब तक दोनों मियां-बीवी साथ रहना चाहें, वह उन्हें एक दूसरे से अलग करने की कोशिश नहीं करेंगी। दादी रज़िया मामला समझ गईं थीं और क्योंकि सबके सामने नहूसत और जादू वग़ैरा के झूठ पर दलीलें पेश कर चुकी थीं इसलिए उन्होंने क़सम खा ली और अपनी बहू माहीन को गले से लगा लिया। उसी वक़्त बी अम्मा मुस्कुराती हुई बिस्तर से उठ गईं और चाय वग़ैरा के बंदोबस्त के लिए किचन की तरफ़ चली गईं।

बारिश

■ हारून यहया

बारिश के बारे में सूरए आले इमरान की आयत/191 में है, ''जो लोग उठते-बैठते-लेटते अल्लाह को याद करते हैं और आसमान व ज़मीन के पैदा होने में ग़ौर करते हैं कि ऐ ख़ुदा तू ने यह सब बेकार पैदा नहीं किया। तू पाक और बेनियाज़ है, हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले।''

बारिश बेशक ज़मीन पर ज़िंदगी के लिए बहुत ख़ास फ़ैक्टर्स में से है। बारिश ज़िंदगी के बाक़ी रहने के लिए एक ज़रूरी शर्त है। बारिश इंसान के साथ-साथ दूसरे तमाम जानदारों के लिए भी बहुत अहम है। क़ुरआन की कई आयतों में इसका ज़िक्र है, और इन आयतों में बारिश, उसकी मिक़दार और असर के बारे में काफ़ी मालूमात दी गई हैं। यह हक़ीक़त है कि क़ुरआन के नाज़िल होने के वक़्त बारिश के बारे में ऐसी मालूमात नामुमकिन थीं और इससे पता चलता है कि क़ुरआन अल्लाह की किताब है। आइए अब बारिश के बारे में क़ुरआन में दी गई मालूमात को देखते हैं।

सूरए ज़ुख़रफ़ की ग्यारवीं आयत में बारिश के बारे में बताया गया है, ''जिसने आसमान से एक तय मिक़दार में पानी भेजा और फिर हमने उस के ज़रिए मुर्दा ज़मीनों को ज़िंदा बना दिया। इसी तरह तुम भी अपनी ज़मीन से निकाले जाओगे।[1]

इस आयत में दर्ज इस एक अंदाज़े या पैमाने में बारिश की कई ख़ूबियां शामिल हैं। सबसे पहले, ज़मीन पर गिरने वाली बारिश की मिक़दार हमेशा एक जैसी होती है। अंदाज़ा यह है कि एक सेकेंड में ज़मीन से 16 मिलयन टन पानी भाप बन कर उड़ता है। यह मिक़दार ज़मीन पर एक सेकेंड में आने वाले क़तरों की मिक़दार के बराबर है। इसका मतलब यह हुआ कि इस एक अंदाज़े के मुताबिक़ पानी एक बैलेंस्ड चक्कर में बराबर घूमता रहता है।

इस अंदाज़े का तअल्लुक़ बारिश के होने या गिरने की स्पीड से है। बारिश भरे बादल की कम से कम ऊंचाई 1200 मीटर होती है। अगर बारिश के क़तरे के वज़न और साईज़ के बराबर एक जिस्म उसी बुलंदी से गिरे तो वह ज़मीन पर 558 कि.मी./घंटा की स्पीड से गिरेगा। यक़ीनन इतनी स्पीड से गिरने वाली कोई चीज़ जब ज़मीन से टकराएगी तो बड़े नुकसान करेगी। अगर इसी तरह बारिश बरसे तो खेती वाली सारी ज़मीनें बर्बाद हो जाएं। रेज़ीडेंशल इलाके, मकान और सब कुछ तबाह हो जाए, यहां तक कि इंसान घर से बाहर भी निकलेगा तो पता नहीं क्या-क्या ओढ़-पहन कर। यह भी ध्यान रहे कि यह सब बातें 1200 मीटर ऊंचाई पर मौजूद बादलों के बारे में हैं जबकि ऐसे बरसाती बादल भी हैं जो ज़मीन से दस हज़ार मीटर की ऊंचाई पर हैं। दस हज़ार मीटर की बुलंदी से गिरने वाले बारिश के एक क़तरे की स्पीड बहुत ख़तरनाक होगी। लेकिन ऐसा नहीं होता। चाहे जितनी ऊंचाई से बारिश हो रही हो, बारिश के क़तरों की औसत स्पीड ज़मीन तक पहुंचते-पहुंचते आठ से दस किलोमीटर/घंटा होती है। इसकी वजह उनकी एक ख़ास बनावट है। क़तरों की यह ख़ास बनावट फ़िज़ा की रगड़ के असर को बढ़ा देती है और जब क़तरा एक ख़ास स्पीड तक पहुंचता है तो यह रगड़ उसकी स्पीड और आगे बढ़ने नहीं देती। आज इसी उसूल को इस्तेमाल करते हुए पैराशूट तैयार किए जाते हैं।

बारिश की बनावट एक लम्बे ज़माने से लोगों के लिए अजूबा रही है। हवाई राडार की ईजाद के बाद ही ऐसा हो सका कि बारिश की स्टेजेस को समझा जा सके। बारिश कई स्टेजेस से गुज़रने के बाद हम तक पहुंचती है। पहले, बारिश का 'रॉ मेटीरियल' हवा में उठता है। फिर बादल बनते हैं और आख़िर में बारिश के क़तरे बनते हैं। यह स्टेजेस क़ुरआन में बड़ी क्लेरिटी से बताई गई हैं और सदियों पहले बारिश के बारे में ठीक-ठीक मालूमात इंसान को दे दी गईं हैं, ''अल्लाह ही वह

है जो हवाओं को चलाता है तो वह बादलों को उड़ाती हैं। फिर वह उन बादलों को जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और उसे टुकड़े कर देता है। और उसके बीच से पानी बरसाता है। फिर यह पानी उन बंदों तक पहुंच जाता है जिन तक वह पहुंचाना चाहता है। तो वह ख़ुश हो जाते हैं।'' [2]

आइए अब इन तीनों स्टेजेस को देखते हैं जो आयत में बयान की गई हैं।

''अल्लाह ऐसा है कि वह हवाओं को चलाता है...'' समन्दर की सतेह पर मौजूद पानी बराबर भाप बन कर आसमान की तरफ़ उठता रहता है। यह भाप हवाओं के ज़रिए ऊपर आसमान में भेज दी जाती है। यह भाप जिसे एयरोसोल कहते हैं, अपने आस-पास मौजूद दूसरी भाप को जमा करके बादल बनाती है।

''तो वह बादलों को उड़ाती हैं। फिर वह उन बादलों को जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और उसे टुकड़े कर देता है।'' बादल भाप से बनते हैं और नमक की क़लमों या हवा में मौजूद धूल के ज़र्रों से मिलकर बनते हैं। चूंकि इन बादलों में बारिश के ड्राप्स बहुत छोटे होते हैं यानी 0.01 और 0.02 मिली मीटर के बीच, इसलिए हवा की वजह से यह बादल फैल जाते हैं और इस तरह आसमान बादलों से भर जाता है।

''और उसके बीच से पानी बरसाता है।'' नमक की क़लमों और धूल के ज़र्रों से बनी भाप कसीफ होकर बारिश के ड्राप्स बनाती है। इसलिए यह ड्राप्स हवा में मौजूदगी के वक़्त के मुक़ाबले में बादलों में ज़्यादा भारी हो जाते हैं और ज़मीन पर बरसात की सूरत में गिरना शुरू कर देते हैं।

ख़ुलासा यह कि बारिश के बनने की हर स्टेज क़ुरआन की आयतों में बताई गई है। साथ ही यह भी कि यह स्टेजेस उसी सीक्वेंस में बताई गई हैं जिस सीक्वेंस में यह सामने आती हैं। दुनिया में दूसरे बहुत से क़ुदरती शाहकारों की तरह बारिश के बारे में क़ुरआन सबसे सही मालूमात हमें देता है और यह सच्चाईयां आज की साइंस से सदियों पहले लोगों को बता दी गई थीं।

एक मुर्दा बंजर ज़मीन में जान डालने के बारे में क़ुरआन में कई आयतें हैं जो ख़ास कर इस टॉपिक की तरफ़ हमारा ध्यान दिलाती हैं। एक जगह यह बात कुछ इस तरह बयान की गई है, ''और वही वह है जिसने हवाओं को रहमत की बशारत के लिए भेज दिया है। और हमने आसमान से पाकीज़ा पानी बरसाया है ताकि उसके ज़रिए मुर्दा शहर को ज़िंदा बनाया और अपनी मख़लूक़ात में से जानवरों और इंसानों की एक बड़ी तादाद को सैराब करें।'' [3]

ज़मीन को पानी से आबाद करने के साथ-साथ बारिश ज़मीन को ज़रख़ेज़ बनाने वाला असर भी रखती है। दरियाओं से भाप बन कर उड़ने वाले बारिश के ड्राप्स जो बादलों में बदल जाते हैं, ऐसे ख़ास बने होते हैं जो बंजर ज़मीन को ज़िंदा कर देते हैं। यह 'ज़िंदगी देने वाले' ड्राप्स 'सरफ़ेस टेंशन ड्राप्स' कहलाते हैं। यह ड्राप्स दरिया के टाप लेवेल पर बनते हैं जिन्हें एक्सपर्टस 'माईक्रो लेयर' कहते हैं। यह तह एक मिली मीटर के दसवें हिस्से से कुछ पतली होती है और इसमें पाल्यूशन से बच रहने वाली बहुत से चीज़ें होती हैं। इनमें से फ़ासफ़ोरस, मैगनेशियम, पोटेशियम और कुछ भारी धाते जैस तांबा, जसता कोबाल्ट और सीसा जो कि दरियाई पानी में बहुत कम होते हैं, अलग होकर जमा हो जाते हैं। यह चीज़ें ज़मीन को ज़रख़ेज़ बनाने में मददगर होती हैं और खाद में मिली होती हैं। खाद से भरे हुए यह ड्राप्स हवाओं के ज़रिए आसमानों पर ऊपर ले जाए जाते हैं और कुछ देर के बाद बारिश के ड्राप्स में बंद यह ज़िंदगी देने वाली चीज़ें ज़मीन पर बिखेर दी जाती हैं। इस हक़ीक़त को क़ुरआन में इस तरह ज़िक्र किया गया है, ''और हमने आसमान से बरकत वाला पानी बरसाया है। फिर उससे बहुत से बाग़ और खेती का ग़ल्ला उगाया है।'' [4]

जंगल भी इन्हीं दरियाई एयरसोल्ज़ पर परवान चढ़ते हैं। इस तरह से हर साल ज़मीन की तमाम सतेह पर 150 मिलयन टन खाद गिरती है। अगर खाद फैलाने का यह क़ुदरती सिस्टम मौजूद न होता तो ज़मीन पर बहुत कम हरियाली होती और नेचर का बैलेंस बर्बाद हो जाता। दिलचस्प बात यह है कि यह हक़ीक़त जिसे सिर्फ़ आज की माडर्न साइंस ही बता सकती है, क़ुरआन में अल्लाह तआला ने सदियों पहले बता दी थी।

1-सूरए ज़ुख़रफ़/11, 2-सूरए रूम/48, 3-सूरए अलफ़ुरक़ान/48-49, 4-सूरए क़ाफ़/9

क़ुरआन की तफ़सीर

क़ुरआन की तफ़सीर करने का क्या मतलब है?

तफ़सीर 'चेहरे' से पर्दा हटाने को कहते हैं। लेकिन क़ुरआन ने तो कहा है कि वह बहुत ही आसान है। साफ़ और किलयर है। फिर कैसे हो सकता है कि क़ुरआन के चेहरे पर कोई पर्दा हो जिसे हटाया जाए। असल में क़ुरआन के चेहरे पर कोई पर्दा नहीं है और वह पेचीदा नहीं है बल्कि पर्दा हमारी आंखों, हमारे दिल और हमारी अक़्ल पर पड़ा हुआ है और क़ुरआन पढ़ते वक़्त ज़रूरत है कि हम उसे दूर करें ताकि क़ुरआन की आयतों का मतलब और उनका पैग़ाम समझ सकें।

क़ुरआन की तफ़सीर करने का मतलब यह नहीं है कि आयत के बारे में जितने वाक़ेआत हो सकते हैं उन्हें इकट्ठा कर दिया जाए, उसमें जिस चीज़ शख़्स या क़ौम का ज़िक्र है उनकी डिटेल बयान की जाए, बल्कि क़ुरआन की तफ़सीर करने का मतलब क़ुरआन के असली पैग़ाम को समझना है। इस पैग़ाम को समझने के लिए क़ुरआन का ट्रांस्लेशन समझने की ज़रूरत है और जिस वाक़ेए की वजह से कोई आयत नाज़िल हुई है जिसे "शाने नुज़ूल" कहा जाता है, उस पर ध्यान देने की ज़रूरत है लेकिन शाने नुज़ूल पर ध्यान देने का मतलब यह नहीं है कि आयत जिस वाक़ेए की वजह से नाज़िल हुई थी उसे उसी वाक़ेए में महदूद कर दिया जाए बल्कि क़ुरआन तो हमेशा के लिए है यह सिर्फ़ गुज़रे हुए ज़माने के वाक़ेआत सुनाने के लिए नहीं आया है बल्कि हर ज़माने के लिए नया है जैसा कि इमाम सादिक़[अ०] से पूछा गया कि क्या वजह है कि हम जब भी क़ुरआन की तिलावत करते हैं तो हमें क़ुरआन बिल्कुल नया और ताज़ा मालूम होता है। इमाम[अ०] ने फ़रमाया, "ऐसा इसलिए है क्योंकि क़ुरआन किसी एक ज़माने के लिए नाज़िल नहीं हुआ है और कुछ ख़ास लोगों के लिए नाज़िल नहीं हुआ इसलिए यह हर ज़माने में नया है और क़यामत तक आने वाली हर क़ौम इससे फ़ायदा उठा सकती है।

इसका मतलब यह है कि हर दौर में क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करने की ज़रूरत है और क़ुरआन हर दौर में हमारी हिदायत करता रहता है, जिस तरह उसने अरब में रहने वालों को बताया था कि उनकी ज़िंदगी कैसी होनी चाहिए उसी तरह वह आज के ज़माने में भी हमें बता सकता है कि हमारा लाइफ़ स्टाइल क्या होना चाहिए।

रिवायतों में अपनी मर्ज़ी से क़ुरआन की तफ़सीर करने से मना किया गया है जिसे 'तफ़सीर बिर राय' कहते हैं। कुछ लोग इसका मतलब यह निकालते हैं कि अगर हम क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करेंगे तो 'तफ़सीर बिर राय' करने लगेंगे। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि क़ुरआन ने ख़ुद ही बहुत सी आयतों में सबसे क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करने के लिए कहा है इसलिए क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करना ज़रूरी है। तफसीर बिर राय का मतलब यह है कि इंसान क़ुरआन का बताया हुआ पैग़ाम समझने के बजाए जिस चीज़ को मानता है उसे ज़बरदस्ती क़ुरआन पर थोप दे और क़ुरआन की आयतों की मनमानी तफ़सीर करे। मिसाल के तौर पर क़ुरआन ने बहुत से साइंटिफ़िक फ़ैक्टर्स बयान किए हैं और मेडिकल साइंस, साइकोलॉजी, सोशालॉजी और बहुत से दूसरे सब्जेक्ट्स के क़ानून बताए हैं लेकिन कुछ लोग हर नई साइंटिफ़िक रिसर्च और किसी भी इल्म के हर नज़रिये को क़ुरआन पर थोपने की कोशिश करते हैं। ऐसा करना ग़लत है बल्कि हमें सबसे पहले क़ुरआन की आयत समझने की कोशिश करना चाहिए। हमें दूसरे इल्म से सिर्फ़ क़ुरआन समझने में मदद मिल सकती है लेकिन हमें उन इल्म के नज़रियों को क़ुरआन पर नहीं थोपना चाहिए।

क़ुरआन की तफ़सीर का बेहतरीन तरीक़ा ख़ुद क़ुरआन की आयतों की एक दूसरे से तफ़सीर करना और समझना है क्योंकि हज़रत अली[अ०] फरमाते हैं, "क़ुरआन का एक हिस्सा दूसरे हिस्से की तफ़सीर करता है।" यह तरीक़ा हमें हमारे मासूम इमामों ने बताया है और ज़ाहिर है कि कोई दूसरा उनसे बेहतर क़ुरआन की तफ़सीर का तरीक़ा नहीं बता सकता है। इसी तरह बहुत सी ऐसी जगहें हैं जहां क़ुरआन की तफ़सीर इमामों की हदीस के बग़ैर मुमकिन नहीं है इसलिए क़ुरआन की तफ़सीर करते वक़्त इन हदीसों पर ध्यान रखना भी ज़रूरी है।

Eid Mubarak

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111

मरयम का एक साल पूरा होने के मौक़े पर

हम आपके घर लेकर आ रहे हैं

ख़ूबसूरत और क़ीमती

तोहफ़े

पहला इनाम	:	उमरा
दूसरा इनाम	:	फ़्रिज
तीसरा इनाम	:	माइक्रोवेव
चौथा इनाम	:	मोबाईल सेट
पांचवां इनाम	:	डिनर सेट
छटा इनाम	:	ज्वैलरी
सातवां इनाम	:	मिक्सर
आठवां इनाम	:	पंखा
नवां इनाम	:	लेमन सेट
दसवां इनाम	:	घड़ी

अक्टूबर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आख़िरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।
अगर आप मरयम के सब्सक्राईबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।
ख़ुद भी सब्सक्राईब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राईब कराईए और इस स्कीम से फ़ाएदा उठाने का मौक़ा हाथ से मत जाने दीजिए!

नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। अक्टूबर 2011 से सितम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फ़ैसला ही आख़िरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एतेराज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:
+91-522-4009558
+91-9956620017
+91-9695269006
maryammonthly@gmail.com